

गके आर मुक्त करि ते पावैन ना । योग विद्या
द्वारा मूहन करिले, प्रकृति ओ चैतन्य पृथक्भूत
हईया पड़ैन ।

गुणमयमायागहनं निर्द्वयं यथा तमः सहस्रांशुः ।
बाह्याभ्यासुरचारी सैम्भवधनवद्भवेत् पुरुषः ॥ ४७ ॥

येमन सूर्या अक्षकार राशिके विनाश करिया,
समस्त वस्तुके प्रकाश करिया थाकेन, तद्रूप पुरुष
मायां गुणराशिरूप गहन वन विनाश करिया, बाह्या-
भ्यासुरे विचरण करिया थाकेन एवं सैम्भव गिरि
न्याय निरन्तर निर्मल भावे अशोभित हयैन ।

यद्वेहावयवाग्देव तस्या विकारजातानि ।

तद्वत्त्वावरजङ्गममहैतं द्वैतवद्भाति ॥ ४९ ॥

येमन समस्त घटादिरई देह, अवयव, एकमात्र
मृदिकार हईलेओ भिन्न भिन्न बलिया बोध हय,
तद्रूप स्थावर जङ्गमादि अद्वैत मत्ता हईलेओ, द्वैतवत्
प्रतीत हईया थाके ।

एकस्यां क्षेत्रज्ञाद्विभक्त्याः

क्षेत्रज्ञ जातयोजाताः ।

लोहगिलादिव दहनात्

समस्ततो विष्कूलिङ्गगणाः ॥ ४८ ॥

येमन ढवोभूत लोहाग्नि हईते, अनेक
स्फुल्लिङ्ग निर्गत हय, तद्रूप एकमात्र क्षेत्रज्ञ
हईतेई विविध क्षेत्रज्ञ जातीय जीव उद्गम हईया
थाके ।

ते गुणसङ्गमदोषा वक्ता इव धान्यजातयः स्वतुषैः ।

जन्म लभन्ते तावदावन्न ज्ञानवह्निना दग्धाः ॥ ४९ ॥

येमन धान्य स्वादि ये पर्याप्त तूषसंयुक्त थाके,
सेई पर्याप्तई ताहा हईते अक्षुरोत्पन्न हय,
तूष पृथक् करिया केलिले, ताहार उद्गमन शक्ति
विनष्ट हय, तद्रूप उक्त क्षेत्रज्ञ जाति गुणसङ्ग-
दोषे वक्त हईया जन्म मरणादिर अधीन हईया
थाके, ज्ञानाग्नि द्वारा गुणक्रिया नष्ट हईलेई,
जोवेर जन्म मरणेर तय विदूरित हईया याय ।

प्रकृति गुणमयी प्रकृति सहे गुण नष्ट हईवार
आशा नाई । चैतन्येर अत्यन्तानुभूति हईलेई,
अपसारण शक्ति द्वारा प्रकृति स्वतःएव पुरुष हईते
दूरे पलायन करे । ये प्राकृतिकी शक्ति जडाभि-
मुखिनी, तद्विरोधे अथवा चैतन्याभिमुखाकर्षणी
परमा शक्तिर अभ्यास करिलेई जीवेर कामना पूर्ण
हईते पारिवे ।

क्रमशः

नहीं कर'सक्ति हैं । योगविद्या करके मयन कर-
नेसे प्रकृति ओ चैतन्य पृथक् हो जाते हैं ।

गुणमयमायागहनं निर्द्वयं यथा तमः सहस्रांशुः ।

बाह्याभ्यासुरचारी सैम्भवधनवद्भवेत् पुरुषः ॥ ४७ ॥

सूर्य जैसा तमोराशिको विनाश करके समस्त
वस्तुको प्रकाश किये करते हैं, उसरीति पुरुष भी
मायाके गुणसमूहरूप गहनवनको नाशकर बाहर
भीतर विचरते रहते हैं ओ सैम्भव गिरिके समान
सर्वदा निर्मल भावसे सुशोभित होते हैं ।

यद्वेहावयवाग्देव तस्या विकारजातानि ।

तद्वत्त्वावरजङ्गममहैतं द्वैतवद्भाति ॥ ४९ ॥

जैसा सब घटादिके देह अक्ष मृदीहीसे बनाऊआ
है, किन्तु भिन्न भिन्न बोध होता है, तद्रूप स्थावर
जङ्गम समस्त ही एक अद्वैत सत्ता है किन्तु द्वैतवत्
भासित होता है ।

एकस्मात् क्षेत्रज्ञाद्विभक्त्याः

क्षेत्रज्ञजातयो जाताः ।

लोहगिलादिव दहनात्

समस्ततो विष्कूलिङ्गगणाः ॥ ४८ ॥

एकमात्र क्षेत्रज्ञ ईश्वरसे क्षेत्रज्ञ जातिके वज्रधा
जीव उत्पन्न होते हैं, जैसा कि गलाऊआ लोहेके
अग्निसे अनेक चिनगारी निकलती है ।

ते गुणसङ्गमदोषा वक्ता इव धान्यजातयः स्वतुषैः ।

जन्मलभन्ते तावदावन्न ज्ञानवह्निना दग्धाः ॥ ४९ ॥

उक्त क्षेत्रज्ञ जाति गुणोंके सङ्गदोष करके तबतक
बन्धेऊए जन्म मरणादिके अधीन होते हैं जबतक
ज्ञानाग्निके द्वारा गुणकी क्रिया नष्ट न होती है ।
जैसा कि चाओर यवादि जबतक तूषसे बन्धे रहते
हैं, तबतक जन्मते हैं, किन्तु तूष अलग होजाने-
पर उसकी उत्पादन शक्ति नष्ट हो जाती है ।

प्रकृति गुणमयी है । जबतक प्रकृति विद्यमान
रहेगी, तबतक गुणोंका नाश होनेकी कोइ आशा
नहीं । चैतन्य की अत्यन्तानुभूति होनेसे अप-
सारणी शक्ति करके जीवकी प्रकृति स्वतःएव पुरुष-
से दूर भागती है । जो प्राकृतिकी शक्ति अडाभि-
मुखिनी है, उसके विरोधी अथवा चैतन्यका
आकर्षण करनेवाली परमा शक्तिके अभ्यास करने
हीसे जीवकी कामना पूर्ण हो सकेगी ।

(येव आने)

आशाने मुमुक्षु साधकेर विक्रमप्रकाश ।

काल ! तूमी आमार बहदिनेर परिचित ।
आमि यथन वेथाने गियाछि, यथन वे देह धारण
करियाछि, यथन याह। भोगार्थ संग्रह करियाछि,
सर्वत्रहै तोमार पराक्रम ओ विद्यमानता देखिया
भीत ओ अभिभूत हईया आसियाछि । तोमार
कुटील ऊठगमात्रेहै भुवन भस्मीभूत हईया याय,
तोमार दारुण दृष्टि तौत्र तेजे जगत् शून्य
बोध हय, तोमार प्रलयमूर्ति देखिलेहै, शरीर शि-
रिया उठै । बुबियाछि, तोमार शक्ति अपराजेय
ओ तोमार महिमा बुद्धि अगम्य । किन्तु काल ! आज
तोमार दंष्ट्रा निस्पृमण पूर्वक आसिते देखिया,
आमार हाथोद्वेक हईतेछे, आज तोमार विकट
बदन विलोकने आमार भयेर सफार हईतेछे
ना, आज तोमार प्रलयकर हकार मशक धनि-
याय तूछ बोध हईतेछे । आत्मीय स्वजन वक्कु-
वाक्कु सकले आमाके विदाय दियाछे देखिया, तूमी
पुलकित चित्त आमार प्रति कटाक्ष निकेप करि-
तेछ । आत्मीयगणेर आर्तनादे तोमार पराक्रम
बुद्धि हईया थाके । आमार शरीर शीर्ण, चक्षु दृष्टि
हीन, कर्ण बधिर, अङ्ग शीतल ओ श्वास रुद्ध हईल
बनिया आमि अभिभूत हई नाई । पिता, माता,
पुत्र, दारा ओ मित्रगण आमाके परिहार करिल
बनिया, तूमी आमाके निःसहाय ओ निराश्रय मने
करिओ ना । आमि एवार कीट पतङ्गेर देह
आसि नाई, एवार पशु पक्षीर सामान्य शरीरे
क्रीड़ा करि नाई ; एवार मनुष्य देह धारण करिया
हिलाम ; मानवीय शक्ति, मानवीय भाव, मानवीय
तेजे आमार शरीर गठित ओ रक्षित हईयाछिल ।
एवार सत्समागमेर गुणे तोमार चतुर चक्राक्षेर
दर्प चूर्ण करिवार महामन्त्र शिक्षा करियाछि । वैराग्य
पितृस्थानीय हईया आमाके पालन करियाछेन, क्रमा
मातृवत् आमाके सदाई रक्षा करियाछेन, शान्ति
आमार परम सुखदायिनी सहधर्मिणी हईया, आमार
सुखशयाय सेवन करियाछेन । सत्य सखा हईया,
दया भयि हईया, शम दमादि आङ्गण हईया, आमार
आनन्द वर्द्धन ओ हितसाधन करियाछेन ; निःस्वार्थ-
तार वसन परिया, ज्ञानायुत भोजन करिया आमि
जीवनातिपात करियाछि । अहो काल ! एवार

अज्ञानमें मुमुक्षु साधकका विक्रमप्रकाश ।

काल ! तू मेरे बद्धत दिनके परिचित है । मैं
जब जहां गया, जब जिस देहको धारण किया,
सर्वत्र ही तेरे पराक्रम औ विद्यमानता देखकर
भीत औ अभिभूत होता आया । तेरा कुटील
भूभङ्गमात्रहीसे भूवन भस्मीभूत हो जाता है,
तेरी दारुण दृष्टिके तीव्र तेजसे जगत्को शून्य-
मय बोध होता है, तेरी प्रलय मूर्तिको देखते ही
शरीर शिहर उठता है । मैं समझ लिया कि
तेरी शक्ति अपराजेय औ तेरी महिमा बुद्धिकी
अगम्य है । किन्तु हे काल ! आज तुझे दंष्ट्रा
निष्प्रेमण पूर्वक आगु आते देखकर मेरी हांसी
आती है, आज तेरे विकट बदन विलोकनसे
भय नहीं होता है, आज तेरा प्रलयकर ऊङ्कार
मशकके घुन् घुन् शब्दके समान तुच्छ बुझ पड़ता
है । अपना, स्वजन, बन्धुबान्धव आदि सबकोइ
मुझे विदाय दिये, यह देखकर तू पुलकित अन्तः-
करणसे मेरे ओर कटाक्षपात करता है । आत्म-
सम्बन्धीयोंकी आर्तनादसे तेरा पराक्रम बढ़ता
रहता है । मेरा शरीर शीर्ण, नेत्र दृष्टिरहित,
कर्ण बधिर, अङ्ग शीतल औ जो श्वासबन्ध होगया,
इससे मैं अभिभूत नहीं ऊँचा ऊँ । पिता, माता,
पुत्र, दारा, औ मित्रमण्डली मुझे परिहार किये,
इससे तू मत मान् जो मैं निःसहाय औ निराश्रय
हो गया । मैं इसवेर कीट वा पतङ्ग देह में
नहीं आया, इसवेर पशु पक्षी आदि सामान्य देह
में क्रीड़ा नहीं किया, इसवेर मैं मनुष्यदेहको
धारण कियाया । मानवीय शक्ति, मानवीय भाव,
मानवीय तेजसे मेरे शरीर बनाया औ रक्षित
ऊँचा जा । इसवेर सत्यज्ञके प्रभावसे तेरे चतुर
चक्रान्तके दर्प दलनार्थ महामन्त्र शिक्षा किया
ऊँ । पिताके समान वैराग्य मुझे प्रतिपालन किये,
क्रमा मातारूप बनकर मुझे सदा ही रक्षा करी,
शान्ति मेरी परम सुखदायिनी सहधर्मिणी बन-
कर मेरी सुखशया की सेवा में तत्पर रहि
यी, सत्य सखा बनकर, दया भग्नि होकर, शम
दमादि भाव्यों बनकर मेरे आनन्द बढ़ाये औ
हितसाधन किये, निःस्वार्थताका वस्त्र पहनके,
ज्ञानायुत भोजन करके मैं जीवनातिपात किया ।

तोमार प्रतिभा हानि करिवार जगहै, এই মহা-
শ্মশানে আসিয়াছি। শত শত জীবকে তুমি এই
শ্মানে শাসন করিয়াছ বলিয়া, তোমার দর্পের, সীমা
নাই; হা! তুমি অন্ধ, আজ তোমার তমসচ্ছন্ন
নয়নের সম্মুখে একটা অভিনব ব্যাপারের অভিনয়
করিয়া জগৎকে আশাযুক্ত ও নির্ভয় করিয়া যাইবে।

তুমি এই শ্মশানভূমিকে শব মণ্ডলীর আবাস
স্থান ভাবিয়া আমাকেও মৃত মনে করিয়াছ। কাল !
ইহা মৃতপূর্ণ শূন্য ভূমি নহে। ইহা কালের কাল
স্বরূপ মহাকালের লীলাভূমি। তিনিই এখান
কার একমাত্র অধীশ্বর। আমি তাঁহার প্রজা।
তুমি আমাকে স্পর্শ করিতেও পারিবে না। শঙ্কর-
রাজ্যে কৃতান্তের কিছুমাত্র অধিকার নাই। ঐ
দেখ আমার কণে তাঁহার নাম শ্রবণে পবিত্র হই-
য়াছে, জিহ্বা তাঁহার বশো মহিমা গানে ধ্বনিত হই-
য়াছে, অস্থিমালার প্রত্যেক গ্রন্থিতে তাঁহার নাম
অঙ্কিত রহিয়াছে; প্রাণ তাঁহার নিশ্বাসে প্রবেশ
করিয়াছে, আত্মা তাঁহার জ্বলন্ত জ্যোতিতে আচ্ছন্ন
হইয়া গিয়াছে, আমার চিত্তভঙ্গ্য তাঁহার অঙ্গের
ভূষণ হইয়াছে। ঐ দেখ তাঁহার উজ্জ্বল দীপ্তি
শ্মশান ভূমিকে রক্ষা করিতেছে। এখানে তাঁহার
ভয়ে মায়া প্রবেশ করিতে পায় না। ঐ দেখ
অহংকারের উন্নত মস্তক চূর্ণ হইয়া পড়িয়া রহি-
য়াছে। ঐ দেখ, মমতা বিবসনা, দম্ব হতচেতন ও
কন্দর্প ভস্মীভূত হইয়া গিয়াছে। ঐ দেখ ক্রোধ
ভীত, লোভমূর্ছিত, ঘৃণা ছিন্নমস্তকা, অভিমান
বিদলিত হইয়াছে। কাল ! দেখ দেখ, তোমার
কিঙ্করগণ শঙ্কর সদনে কি ছুরবস্ত্রাশ্রিত হইয়াছে।
তোমার শাসন দণ্ড লইয়া তুমি অশ্বিষ রাজ্যে
গমন কর, এখানে আর অপেক্ষা করিও না। ঐ
দেখ, রুদ্ধতেজ তোমার ধৃষ্টতা নিবারণার্থে বজ্র-
বেগে তোমার অঙ্গ আকর্ষণ করিতেছে। তুমি
পলায়ন কর।

মানবগণ। অদ্য তোমাদের নিকট হইতে,
সমস্ত জীবের নিকট হইতে বিদায় গ্রহণ করিলাম,
কালের ভয় বিদূরিত হইল ! মহাকালের মহা-
তেজে আমি নৃত্য করিতেছি। ঐ দেখ, কাল
আমাকে স্পর্শ করিতে সাহস করিল না। সাব-
ধান ! কাল কিংকরগণের মোহন মন্ত্রে আত্ম
বিস্মৃত হইও না। দুই দিনের জন্ম দেহ পাইয়া,

অসুখ কাল ! রসবের তেরী প্রতিভা কী হানি পড়-
বানেকে হী অর্ঘ্য রস মহা শ্মশান মেনে আয়া জঁ।
তু রস শ্মান মেনে সকলো জীবনোকে শাসন কিয়া,
রসবে তেরে দর্প কী সীমা নহী মিলতী হৈ। হা !
তু অন্ত হই গয়া, আজ তেরে তমসচ্ছন্ন আখেরে
সান্ধনে এক নবীন ব্যাপারকে অভিনয় করকে সারে
সংসারকো আশা যুক্ত কৌ নির্ভয় কর জাজ্ঞা।

তু রস শ্মশান-ভূমিকো স্মৃতি-কৌকে নিবাসস্থান
জানকর মুখে মৌ মৃত মান লিয়া। হৈ কাল ! যহ
স্মৃতি-কৌকে পূর্ণ শূন্য ভূমি নহী হৈ। যহ কালকে
কালস্বরূপ মহাকালকী লীলা-ভূমি হৈ। বেহী
যহাংকে একমাত্র অধীশ্বর হৈ। মৈ' উনকা প্রজা
জঁ। তু মুখে স্মৃতি মৌ ন কর সকেগা। শঙ্করকে
রাজ্য মেনে জ্ঞানতকা কুছ মৌ অধিকার নহী। যহ
দেখলে মেরে কণ্য উনকে নাম-শ্রবণে পবিত্র হৌ শুকে,
জিহ্বা উনকৌ নির্ম্মল যশ-মহিমা গান কর ধন্য
হৌ গযী, হৃদয়কী হরেক গ্রন্থি মেনে উনকে নাম
লিখা জ্ঞাপা হৈ। মেরা প্রাণ উনকা নিশ্বাস মেনে
জা মিলা, আত্মা উনকা পরম তেজ মেনে প্রবেশ কিয়া,
মেরী চিত্তাভঙ্গ্য উনকা অঙ্গকা ভূষণ জ্ঞাপা। উধর
দেখলে, উনকী উজ্জ্বল দীপ্তি শ্মশান-ভূমিকো রজা
কর রহী হৈ। উনকে উরসে মায়া যহ পৈটনে নহী
পাতী হৈ। বহু দেখলে, অহঙ্কারকে উন্নত সীর খীসা-
জ্ঞাপা পড়া হৈ। উধর দেখলে, মমতা বিবসনা,
দম্ব হতচেতন মৌ কন্দর্প ভঙ্গ্য হৌগযে। উধর
দেখলে, ক্রোধ যহাং উরসে ঘাবড়া গয়া, লোভ কী
মূর্ছী লগ গযী, ঘৃণাকা সীর উড় গয়া, অমি-
মান পীসা গয়া। কাল ! দেখ দেখ তেরে মৃত্যুগণ
নে শঙ্কর সদনে মৈ' কৌ বুদ্ধি-কৌ প্রাপ্ত জ্ঞান হৈ।
তু অপনা শাসন দণ্ড লেকর অশ্বিষ রাজ্য মেনে অলা
জা, যহাং ফির তনিক মৌ উত্থরনা নহী। দেখ কুট
তেজ তেরী দৃষ্টতা কৌ নিবারণার্থ বজ্রবেগে মেরে
অঙ্গ আকর্ষণ কর রহা হৈ। তু যৌগ ভাগ জা।

মানবগণ ! আজ তুমলোগে—সমস্ত প্রাণী-
থোকে—মৈ' নে অবকাশ লিয়া, কালকা ভয় ছুট
গয়া। মহাকালকে মহাতেজ মেনে মৈ' দ্ব্যকর রহা
জঁ। বহু দেখ লেনা, কাল মুখে স্মৃতি করনকৌ মৌ
সাহস ন কিয়া। সাবধান ! কাল কিংকরকে
মোহন মন্ত্রে আত্মবিস্মৃত ন হৌনা হৌ দিনকে অর্ঘ্য
দেহ পায়ে চিরদিনকী সংরক্ষ কিয়া জ্ঞাপা ধন
ব্যয়ন করনা। একবার মৌ তো বাস্তবজগতকৌ পরি-
ত্যাগ করকে অন্তর্জগত মেনে প্রবেশ করো, দেখ জৌ,

चिरदिनेर सक्ति धन, वाय करिओ ना । एकवार बाहू जग९ परिहार करिया, अन्तर्जगते प्रवेश कर, देखिते पाईबे, देवलोक के कि आश्चर्य लीला हईतेछे ; तथाय अन्न ओ आनन्देन श्रोते अवगाहन करिया पवित्र हईबे । वीरविक्रमे कालचक्रभेद करिया, नित्य निकेतने आसिते पारिबे ।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरिः ॐ ।

आर्य-शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशितेन पर)

वाङ्मतिर प्रधान कारण प्रचोदना । प्रचोदना द्विविध । १म, अपर व्यक्ति कर्तृक प्रश्नादि जन्तु ; २म, केह प्रश्नादि ना करिलेओ निज मनेई कल्पित प्रश्नेर उदय जनित । कोन व्यक्ति कोन विषय जानिवार जन्तु प्रश्न करिले, किन्ना वाचयितव्य शब्दार्थेन निर्धारण करिया “बल” बलिया प्रेरणा करिले, वक्तार सेई वाक्य गुलिर ज्ञान हईया, तदीय अर्थेन उपलब्धि হয় । अनन्तर प्रश्न करिले, वक्तार मने अर्थान्वेषण वृत्ति जन्मिया, प्रकाशयितव्य अर्थ सकल ज्ञानक्षेत्रे प्रतिभासित हईया থাকे । विषय समूहेन परस्पर सम्बन्धेन घनिकृतापेक्षी प्रकाशयितव्य अर्थ समूहेन ज्ञान समूह एकरूप घन-सम्बन्धयुक्त হয় ये, तदवकाशे अन्वविध ज्ञानेन अद्भुत हईते पावे ना ।

विषयेन सम्बन्ध यतई घनीभूत हईबे, ततई एक विषयेन ज्ञान अपर विषयेन श्रुति ज्ञानेन कार्यप्रवण बीज हईबे, इतरां तदवकाशे कारण-भाव प्रयुक्त अन्त ज्ञानेन उपलब्धि सम्भावना नाई । प्रश्नकर्तार प्रचोदनार सम्मिलने जेदूश ज्ञान वाङ्मतिर कारण हईया থাকे । प्रचोदना सम्मिलित ज्ञान मार्गे ये ये विषय अधिकृत হয়, ताहाई प्रकाश करिवार निमित्त वाक्य प्रवर्तिका शक्तिर उद्भेदक হয়, ए निमित्त उक्तविध ज्ञानेन पारम्पर्य वाक्प्रवर्तिका वृत्तिर क्रम बलिया कथित হয় । उक्त विध ज्ञान वेरूप क्रमानुसारे उदय হয়, वाङ्मतिओ सेई क्रमेई उदय हईया থাকे । ज्ञान ये पदार्थ-टीके निज विषय करिया लईबे, सेई पदार्थई, वाङ्मति द्वारा प्रकाशित हईते आनन्द हईबे ।

देवलोक में कैसी लीला हो रही है, वहाँ अभय श्री आनन्दके प्रवाह में स्नानकर पवित्र होओगे वीर विक्रमसे कालचक्रको भेदकर नित्यनिकेतन में आ सकोगे ।

श्री शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरि श्री ।

आर्य शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशितके आगे ।)

प्रचोदना वाङ्मत्तिका प्रधान कारण है । यह प्रचोदना दो प्रकारकी है । १म, दुसरा किसीने पुछनेसे ; २म, बिना किसीसे प्रश्न सुने आपने ही मन में कोई कल्पित प्रश्न चठनेसे । किसीने कोई विषय जाननेके अर्थ यदि कुछ पुछे अथवा वाचयितव्य शब्दार्थको निर्धारण कर ऐसी प्रेरणा करे कि “कहो” तब उन वाक्योंके समझसे तदीय अर्थकी उपलब्धी वक्ताकी होती है । अनन्तर प्रश्न करने पर, वक्ताके मन में अर्थान्वेषणकी वृत्ति जन्मति श्री प्रकाशयितव्य अर्थ सवने ज्ञानक्षेत्र में प्रतिभासित हुआ करता है । विषयोंके परस्पर जो सम्बन्ध है, उसकी घनिकृतापेक्षी प्रकाशयितव्य अर्थसमूहका ज्ञानराशि ऐसा घनसम्बन्धसे युक्त है, जो तदवकाश में दुसरी भान्ति ज्ञानका अभ्युदय नहीं हो सकता है ।

विषयका सम्बन्ध जितना ही घनीभूत होगा, उतनाही एक विषयकज्ञान दुसरा विषय की श्रुति-ज्ञानका कार्यत्पादक बीजस्वरूप बनेगा, सुतरां तदवकाश में कारणके अभावसे दुसरा ज्ञानोत्पत्ति की सम्भावना नहीं । पुछनेहारे की प्रचोदना से मिलने पर इस भान्ति ज्ञान वाङ्मत्तिका हेतुरूप बना करता है । जो जो विषय प्रचोदनासे मिलकर ज्ञानमार्गपर आरुढ़ होते हैं, उन सबको प्रकाश करनेके निमित्त “ वाक् प्रवर्तिका-शक्ति ” तेज होती है, इसलिये उस भान्ति ज्ञानका पारम्पर्यको “वाक्-प्रवर्तिका-वृत्ति” के क्रम करके जानना । वाङ्मत्ति उसी क्रमसे उदय होती है, जिस क्रमसे उक्तविध ज्ञान बना करता है । ज्ञान जिस पदार्थको अपना विषयकर लेगा, वही पदार्थ वाङ्मत्ति से प्रगट होना प्रारम्भ करेगा ।

অপর ব্যক্তি যখন প্রকাশ্যিতব্য অর্থের নির্ধারণ করিয়া, বক্তাকে অনুমতি করে যে “রাম রাম বল, “শিব শিব বল” ইত্যাদি তখন আর বক্তার বক্তব্য বিষয়ের জন্য অনুসন্ধিৎসা রূতির উদয় হয় না; তখন প্রচোদনা সম্বলিত দ্বিতীয় বাক্যার্থ জ্ঞানই বক্তার বাধুতির কারণ হইয়া থাকে।

মনে করুন, প্রশ্নকর্তা কোন ব্যক্তিকে বলিলেন, “কীদৃশ্য ভাবো গ্রাহ্য?” (কিরূপ হইতে—কিরূপ ব্যক্তি হইতে ভাব গ্রহণ করিতে হয়) এম্বলে বক্তার আদৌ ঐ পদ কয়েকটির অবগানন্তরই ইহার জ্ঞান হইবে এবং দ্বিতীয় ব্যক্তির মুখ্য প্রচোদনা সম্বল নিবন্ধন ঐ সমস্ত অর্থের মধ্যে কেবল “কিং” শব্দের অর্থের (যে রূপ ব্যক্তি হইতে ভাব গ্রাহ্য, তাহার বিশেষণ) অন্বেষণী রূতির উদ্বেক হইবে; তৎপরে অন্বেষণের চরিতার্থতা কালীন প্রথম সেই অর্থটিকে (ভাবস্বরূপ বিশেষণ) লক্ষ্য করিয়া, নিশ্চয়াত্মক জ্ঞান জন্মিবে। এই জ্ঞানই উক্ত বিধ স্মৃতি জ্ঞানের বীজ স্বরূপ; এই জ্ঞান উদ্ভিত হইয়াই স্বকীয় বিষয়ের ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধী অর্থকে উদ্ভাসিত করিতে থাকে। দ্বিতীয় ব্যক্তির প্রচোদনা সম্বলিত অর্থগুলির মধ্যে যে অর্থ ঐ জ্ঞান বিষয় অর্থের নিকট সম্বন্ধী, সেই অর্থই জ্ঞানান্তিমুখীন হইবে।

একণে বিবেচনা করুন, বক্তার মনে যে ভাব স্বরূপ বিশেষণার্থের উদ্ভাসন হইল। তাহার ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধী কে? ভাবস্বরূপ বিশেষণার্থের ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধী ভাবযুক্ত, আবার তাহার ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধী বিভক্তির (আৎ) অর্থ (হইতে) অতএব বক্তার মনে ভাব, যুক্ত, হইতে এই তিনটি অর্থের স্মরণ জ্ঞান হইল, পরে ঐ জ্ঞান দ্বিতীয় ব্যক্তির প্রচোদনা ক্রিয়ার সম্বন্ধ থাকা নিবন্ধন, ক্রিয়ার প্রতিক্রিয়া স্বরূপ স্মৃতার্থ প্রকাশিকা বাধুতি জন্মিয়া অবিচ্ছেদে উক্ত তিনটি অর্থের প্রকাশক তিন শব্দের (ভৌ উক—আৎ) নিষ্পাদন করিবে।

উক্ত রূতি “ভৌ” মাত্র নিষ্পাদন করিয়া বিশ্রান্ত হইল না, কেন না “ভৌ” দ্বারা কোন অর্থ অভিব্যক্ত হয় না, স্ততরাং রূতির কৃতার্থতা হইল না। কৃতার্থ না হওয়া পর্য্যন্ত, রূতির বিশ্রামের অবকাশ নাই। একটা লোষ্ট্র উর্দ্ধ হইতে অবক্ষেপ করিলে, উহা পৃথিবী সংশ্লিষ্ট না হওয়া পর্য্যন্ত যে

দুসরা ব্যক্তি অব প্রকাশ্যিতব্য অর্থকে নির্ধারণ কর বক্তাকে ऐसी অনুমতি করে कि “रामर कहो” “शिवर कहो” इत्यादि, उस समय वक्तव्य विषयके लिये वक्ता की अनुसन्धित्वा वृत्ति नहीं तेज होती; उस समय प्रचोदनासे मिला हुआ वाक्यार्थ-ज्ञान ही वाग्वृत्तिका कारण बनता है।

मानोये, प्रश्नकर्त्ता किसीको बोला “किदृशात् भावो ग्राह्यः” (किस प्रकारसे—किस प्रकार पुरुषसे भावग्रहण करना चाहिये) यहां इन पदोंकी सुनने हीसे वक्ताके मन में इस विषयका ज्ञान होगा और पुछनेहारे की सुखीया प्रचोदना करके उन समस्त अर्थके मध्य में केवल “किं” शब्दार्थकी (जिस भान्ति पुरुषसे भाव ग्रहणीय है, उसका विशेषण) अन्वेषण वृत्ति उपजेगी; तदनन्तर अन्वेषण की चरितार्थताके काल में पहले इसी (भाव स्वरूप विशेषण) लक्ष्य करके निश्चयात्मक अर्थको ज्ञान उपजेगा। इस ज्ञान हीको उक्तविध वृत्ति ज्ञानका बीजस्वरूप है। यही ज्ञान प्रगट होकर निज विषयके घनिष्ठ सम्बन्धी अर्थको प्रकाश करता रहता है। प्रश्नकर्त्ताकी प्रचोदनाके सम्बलित अर्थसमुहके मध्य में जो अर्थ उस ज्ञानविषयक अर्थका निकट सम्बन्धी है, वही अर्थ ज्ञानके साहने आवेगा।

अब विचार कीजिये, वक्ताके मन में जो भाव-स्वरूप विशेषणार्थका उद्भासन हुआ, उसका घनिष्ठ सम्बन्धी कौन है? भावस्वरूप विशेषणार्थका घनिष्ठ सम्बन्धी भावयुक्त, फिर उस की घनिष्ठ सम्बन्धी विभक्तिका (आत्) अर्थ “से” अतएव वक्ताका मन में “भावयुक्तसे” इन तीनों अर्थका धारणज्ञान उपजा, तदनन्तर वह ज्ञान, प्रश्नकर्त्ताकी प्रचोदना क्रियासे सम्बन्ध रहेपर क्रिया की प्रतिक्रियाका स्वरूप वृत्तार्थ प्रकाशिका वाग्वृत्ति बनकर लगातार उक्त तीन अर्थके प्रकाशक तीन शब्दको (भौ+उक+आत्) निष्पादन करेगा।

“भौ” मात्र निष्पादन करके उक्त वृत्ति न ठहरती, क्यों कि “भौ” से कोई अर्थ बोध नहीं होता है, सुतरां वृत्ति क्षतार्थ न ऊई। जबतक क्षतार्थ न हो, तबतक वृत्तिका विश्राम लेनेका अवकाश नहीं। किसी एक जोड़को यदि उपरसे गिराय दिया जाय तो वह जबतक भूमिपर न

विश्राम ग्रहण करे ना, 'ईहा' काशरई अविदित नाई। अतएव वक्तृ मनोरुद्धि "भौ" निष्पन्न करिवार अव्यवहित परक्रमेई "उक" एवं "उक" निष्पादनैर अव्यवहित परक्रमेई "आं" निष्पन्न करे, ताहार पर विश्रान्तु ह्य एई प्रकारे अप्रति संहार निर्गमन हईया থাকे।

केह प्रश्न वा अनुमति ना करिले, वक्तृ यथन निज हईतेई कोन विषय बलेन, तथनओ आपना आपनिई प्रचोदनार तुल्य फलप्रद उद्देश्य ज्ञाना-ज्जिका क्रिया जन्मे; तएपरे उक्त प्रकारेई समस्त क्रिया हईया থাকे। एई प्रकार स्थले "भौ उक आं" इत्यादि प्रकार पृथक् उच्चारण हईते पारे ना, कारण ओकारे उच्चारणे मर्द्धिमात्रा काल (१) अतीत ह्य एवं एकटी स्वरवर्णैर पर द्वितीय आर एकटी स्वरवर्ण उच्चारण करिते तदुभयैर अवकाशेओ अर्द्धमात्रा काल अतीत ह्य एईरूपे 'भ' एर "उ" कारे उच्चारण अवधि "उक" एर "उर उच्चारणारस्तु तिन मात्रा काल अतीत हईया থাকे। एस्थले पूर्वोक्त कारण वशतः बाधुंतिर अविच्छिन्नतानिवन्धन "भौ" एर "उ" कार उच्चारणैर पर छेद ना हओया हेतु उभय उच्चारणैर अवकाश स्वरूप अर्द्धमात्रा काल भय हईया "उ" कारे उच्चारणैर परक्रमेई "उ" उच्चारणैर अभिव्यक्ति हईते থাকे। सुतरां उक्त त्रिमात्र कालैर अर्द्धमात्रा न्यून हईल एवं ध्वनियुक्त प्रसारितोष्ठैर आकृषन द्वारा अर्द्धमात्र "व" आर द्विमात्र "आ" हईया पड़िल। अतएव "भौ उक" ईहार सक्ति कार्य अग्न प्रकार ना हईया "भावुक" (२) हईया पड़िल। तएपरे उक्तकारणेई बाधुंति "भावुकैर" एकमात्र स्वर "अ" एर उच्चारणैर शेष क्रमे "आं" उच्चारणैर अभिव्यक्ति हईले, "आ" उच्चारणैर परओ अर्द्धमात्रा काल न्यून हईल, सुतरां "अ" एवं "आ" उच्चारणैर प्रभेद ना

(१) एकटी इय वर्ण (अ) उच्चारण करिते ये काल अतीत ह्य, ताहार नाम मात्राकाल। एकटी व्यञ्जनवर्ण (२) उच्चारण करिते ये काल लागे, ताहाके अर्द्धमात्रा बले। आर एकटी दीर्घ वर्ण उच्चारण (आ) करिले ये काल लागे, ताहार नाम द्विमात्रा काल।

(२) सक्तिजात "व" मात्रेई अक्षर, ईहार उच्चारण दन्त ओ उष्ठैर निष्पन्न, सुतरां वर्गीर "व" हईते ईहार उच्चारण, अनेक विगृह्य।

गिरे तवतक जो वह विश्राम नहीं करता सो सब कोइ विदित है। अतएव वक्ता को मनोवृत्ति "भौ" निष्पन्न करके अट "उक" औ "उक" को निष्पादन करके उसही क्षण में "आत्" निष्पादन करती है, तदनन्तर विश्राम करती है। इस रीति "अप्रतिसंहार-निर्गमन" ज्ञा करता है।

बिन किसीसे कुछे अवधवा अनुमति मिले, जब वक्ता स्वयं ही कुछ बोलें तो उस समय भी प्रचोदनाके तुल्य फलदायी उद्देश्य ज्ञानात्मिका क्रिया, आप ही आप उपजती, तदनन्तर उक्त रीतिसे कार्य ज्ञा करता है।

ऐसे स्थान में "भौ+उक+आत्" इत्यादि रूप पृथक् उच्चारण नहीं हो सक्ता है, क्यों कि औकारका उच्चारण में सार्द्ध द्विमात्रा काल (१) लगता है औ एक स्वरवर्णके अनन्तर दूसरा एक स्वरवर्णके उच्चारण करने में जो अवकाश मिलता उस में भी अर्द्धमात्रा काल व्यतीत होता है, इस रीति "भ" में जो "औ" है, उसके उच्चारण कालसे लेकर "उक" के "उ" के उच्चारणके प्रारम्भ तक तीन मात्रा काल व्यतीत ज्ञा करता है। यहा पूर्वोक्त कारण करके वाग्वृत्ति लगातर रहनेसे "भौ" शब्दके "औ" कारके उच्चारणके अनन्तर छेद न रहा, इससे उभय उच्चारणके अवकाश रूप अर्द्धमात्रा काल भग्न होकर "औ" कारका उच्चारण होते ही "उ" उच्चारण की अभिव्यक्ति ज्ञा करती है। सुतरां उक्त द्विमात्रा काल की अर्द्धमात्रा न्यून ज्ञा औ ध्वनिसे युक्त विस्तार ज्ञा ओष्ठके आकृषनसे अर्द्धमात्रा "व" औ द्विमात्रा "आ" बनगया। अतएव "भौ+उक" इसका सन्धिकार्य अन्य प्रकार बिन बने "भावुक" (२) ऐसा ही बन गया। तदनन्तर उक्त कारण हीसे वाग्वृत्ति "भावुक" के एकमात्र स्वर "अ" उच्चारणके अन्त में

(१) जोर सुस्वरवर्णोच्चार में जितना देर लगता है, उसीका नाम मात्रा काल। जोर व्यञ्जनवर्णोच्चारण में जितना काल व्यतीत होता है, उसका नाम अर्द्धमात्रा औ जोर दीर्घवर्णोच्चारण (आ) में जितना काल लगता उसका नाम "द्विमात्रा" काल है।

(२) ध्वनिसे जो "व" बनता है, उसका उच्चारण स्थान दन्त औ ओष्ठ, सुतरां "व" से इसका उच्चारण अत्यन्त पृथक् है।

है।, केवल मात्र “आ” ई परिष्कृत है।
सर्वत्र ई है।

अतएव वाक्येय ईदृश स्वभाव अवगत है।
जन्म व्याकरण बलिनेन ये, ठेकारेण पर श्रवण
थाकिले, “ठ” स्थाने आब है। वाय, एवं
“अ”कारेण पर “अ” वा “आ” थाकिले, “आ”
है। वाय इत्यादि ।

अतएव एकरूप आपत्ति है। ते पारे, “ये”
ईदानीन्तन लोकेरा ये संस्कृत वा अथ रूप
भाषा प्रयोग करिया थाकेन, ताहा उक्तविध अर्थ
बोध पूर्वक नहै, अतएव अभिहित मन्त्रविज्ञान
परिष्कृत नहै ।

अतएव वक्तव्य है। ये, भाषा विज्ञानानभिज्ञ
लोकेरा ये कोन शब्देण प्रयोग करिया थाके,
ताहा समस्त ई सांकेतिकत्वे अधिकृत है। पड़े,
अतएव ताहादिगेण अर्थबोध पूर्वक प्रयोग ना
होयाते कोन दोष है। ते पारे ना । स्वभावानु-
सारे तत्तदर्थेण बोधक तत्तत् शब्देण प्रकृति
व्याख्या व्याकरणेण उद्देश्य । ईहा विशेष विवरण
“शशधर बाण्डिजाने” विस्तृत है। अ-
प्रतिस्वहार निर्गमन मात्रे ई उक्त कारणे मन्त्रकार्य
ना है। थाकिते पारे ना । सर्वत्र ई यथायथ
मन्त्र कार्य है। ते शब्द द्वयेण घनिष्ठता नाम मन्त्र,
अतएव उक्त कारणे शब्देण घनिष्ठता है। ते ई,
तत्तन्निमित्त फलं है। पड़े एवं से ई वाक्-
स्वभावजात फल वादशाकारे परिणत है। व्याकरण
ताहा ई प्रतिपादन करिया थाके ।

क्रमशः ।

कलिकाता हरिभक्तिप्रदायिनी सभा ।

उक्त सभा तृतीय वात्सरिक अनुष्ठानपत्र
एक थामि आमादिगेण हस्तगत है। पुस्तिका-
कारे मुद्रित पत्र थानि आद्यापान्त पाठ करिया,
यथासम्भव आनन्दलाभ करिलाम एवं धर्मोत्साही
सभासद्वर्ग ७ सम्पादक महाशयके धन्यवाद दिलाम ।
पत्र पाठे विदित है। लाम, ये “आमादिगेण धर्म ई
सत्य सनातन धर्म, ईहा शिक्षित समाजे प्रतिपन्न
कराई है। सभा मुख्या उद्देश्य ।” “एकणे सना-
तन वैष्णव धर्म नितास्त मलिन दशा, (वन्द्य

“आत्” उच्चारण की अभिव्यञ्जिका होने पर
“आ” उच्चारणके अनन्तर भी अर्द्धमात्रा काल
मूल ऊँचा, सुतरां “अ” औ “आ” उच्चारणका
प्रभेद न बुझ पड़ा, केवलमात्र “आ” ही परिष्कृत
ऊँचा । ऐसाही सर्वत्र जानना ।

अतएव वाक्यका इस भान्ति प्रकृति प्रगट करने
के अर्थ व्याकरण बोला जो औकारके अनन्तर
स्वर रहने पर औके स्थान में “आव” होजाता है ।
औ अकारके अनन्तर अवा आ रहनेसे “आ” बन
जाता है । इत्यादि ।

यहां इस भान्ति शङ्का हो सकती है कि आज
कलके लोगोंने जो संस्कृत वा अन्यरूप भाषा व्यव-
हार किया करता है, सो उक्तरूप अर्थ बोध करके
नहीं, अतएव कथित सन्धिविज्ञान विद्युद्ध नहीं
बुझ पड़ता है ।

इसके उत्तर में यह वक्तव्य है जो भाषा
विज्ञानके अनभिज्ञ लोगों ने जिस किसी शब्दका
व्यवहार करता है सो सब सांकेतिकत्व पर आरुढ़
होते हैं, सुतरां उन सबका व्यवहार अर्थबोध
पूर्वक न भी होतो कुछ दोष नहीं हो सकता है ।
स्वभावानुसार तत्तदर्थबोधक तत्तत् शब्दकी प्रकृति
की व्याख्या करना ही व्याकरणका अभिप्राय है ।
इस विषयके विस्तार विवरण “शशधर बाण्डि-
जाने” में लिखा ऊँचा है । अप्रतिस्वहार निर्गमन
मात्र ही उक्त कारणसे सन्धि बने बिना नहीं
रह सकता है । सर्वत्र ही जहां जैसा ही सन्धि
कार्य अवश्य ही होगा । दो शब्द की घनसम्-
न्धका नाम “सन्धि” है । सुतरां उक्त कारणसे
शब्दों की घनिष्ठता होनेहीसे उससे फल भी होता
है, औ उस वाक् स्वभावसे जन्मा ऊँचा, फल जिस
रीति से परिणत होता है, व्याकरण उस ही को
प्रतिपादन किया करता है । (शेष आगे)

कलिकाता हरिभक्तिप्रदायिनी सभा ।

उक्त सभाका अनुष्ठानपत्र तीसरे वर्षके एक
खण्ड हमारे हात लगा । पुस्तिकाकार में छापा
ऊँचा, पत्र की आदिसे लेकर अन्त तक पटक
हमने यथासम्भव आनन्दलाभ किया औ धर्मो-
त्साहि सभासदों औ सम्पादक जीको धन्यवाद
दिया । पत्र में लिखा ऊँचा है, जो “हमारे धर्म
ही सत्य सनातन धर्म हैं, यह सुशिक्षित समाज में
प्रतिपन्न करना ही इस सभाका मुख्य उद्देश्य है ।”
आज कल सनातन वैष्णव धर्म की अतीव मलिन
दशा है, (वन्द्येश्वरी वैष्णव, वैरागीश्वरी के दुश्चरि-

वैष्णव वैरागीगणेर लाम्पट्यादि जग) अतएव याहाते এই सत्य धर्मের উক্তরূপ আরোপিত দোষ সকল অপনীত হইয়া বৈষ্ণব সনাতনধর্ম সর্বসাধারণের নিকট নির্মল ভাবে ও সজীব ভাবে আভাসমান হয় তদ্বিষয়ে সবিশেষ যত্ন করা এই সভার দ্বিতীয় উদ্দেশ্য।” “ব্রজের স্নেহ, মথ্য ও প্রেম ভাব অতি গূঢ় পদার্থ, উহাই বৈষ্ণব ধর্মের সার।” “এই পবিত্র আত্মাদ জনক ব্রজের ভাব সাধারণের বোধগম্য করান, এই সভার তৃতীয় উদ্দেশ্য।” “কুসংস্কার বিশিষ্ট আর্ষ্য সম্মানগণের চিত্তক্ষেত্র হইতে ধর্মগত বিরুদ্ধ ভাব সকল অপ-নয়ন করা এবং উপযুক্ত প্রচারক দ্বারা ও যাহাতে সর্বসাধারণের মনে বৈষ্ণব ধর্মের আত্মা জন্মে তাহার উপায় করা এতৎ সভার চতুর্থ উদ্দেশ্য।”

আমরা উক্ত উদ্দেশ্য গুলি পাঠ করিয়া, সভার প্রকৃত ও গভীর লক্ষ্যের যথাযথ মনোনিবেশ করিতে সমর্থ হইলাম না। সভার ২য়, ৩য়, ও ৪র্থ উদ্দেশ্যের শেবাংশ প্রণিধান পূর্বক পাঠ করিলে প্রতীতি হয়, যেন সভাটি কেবল মাত্র বৈষ্ণব সম্প্রদায়েরই মতপ্রচার ও উৎকর্ষ সাধন জগৎ স্থাপিত হইয়াছে। সভার প্রথম উদ্দেশ্যে ও চতুর্থের প্রথমার্ধে যে “আমাদিগের সত্য সনাতন” ও “আর্য্যধর্ম” আদি কয়েকটি শব্দ ব্যবহৃত হই-রাছে তাহার অর্থ আমরা বুঝিতে পারিলাম না। সভা যদি উক্ত সনাতন বা আর্য্য ধর্মের লক্ষণ প্রক-টন করিতেন তাহা হইলে বরং ভাল হইত, নতুবা সাধারণে ইহাই প্রতীতি হইবে যে, বৈষ্ণব সম্প্র-দায়ের ধর্মোচ্চারই এ সভার “আর্য্যধর্ম”। অগবা যদি ঐদৃশী প্রতীতিই সভার হৃদয়ের গূঢ় অভিপ্রায় হয়, তাহা হইলে যে বর্তমান ভারতের সর্বসাধারণ আর্য্য জনসমাজ হইতে তাঁহারা সহানুভূতি প্রাপ্ত হইবেন, সে আশা নিতান্ত সূদূরপরাহত। বৈষ্ণব ধর্মের প্রতি আমাদিগের প্রগাঢ় শ্রদ্ধা সত্ত্বেও সমা-জের দিকে দৃষ্টি পূর্বক আমরা ঐদৃশী সমালোচনা না করিয়া থাকিতে পারিলাম না।

কলিকাতা ও তন্নিকটবর্তী স্থানসমূহে “হ, ভ, প্র, সভা নামে অনেকগুলি আর্য্যধর্ম সভা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, কিন্তু সর্বত্রই প্রায় সাম্প্রদায়িক দৃষ্টি, সাম্প্রদায়িক মত ও সাম্প্রদায়িক ভাবের কার্য্য হইয়া থাকে, প্রায় কোন সভাতেই খ্রীষ্টভাগবাদি ভিন্ন

বাদিকে হেতু করকে) অতএব জিন উপায়সে উক্ত-রূপ বহুল দোষ, जो कुछ इस सत्यधर्म पर डाले गये है, अपनयन किये जावें औ सर्वसाधारणके निकट निर्मल औ जीवत भावसे वैष्णव धर्मको समझाया जाय, तदर्थ विशेषरूप यत्न करना इस सभाका दुसरा उद्देश्य है।” “ब्रजलीलाके स्नेह, मथ्य औ प्रेमभाव अतीव गूढ पदार्थ हैं, वेही वैष्णव धर्मका सारांश है।” “इस पवित्र आत्मादजनक ब्रजलीलाके भाव साधारणको समझाय देना, सभाका तीसरा उद्देश्य है।” “कुसंस्कारयुक्त आर्य्य-जनोंके चित्त-क्षेत्र में से धर्मसम्बन्धी विरुद्ध भावों को अपनयन करना औ सुयोग्य प्रचारकोंको नियत करके देश देशान्तर में आर्य्यधर्म प्रचार करा-वना औ जिस रीतिसे सब जनोंके मन में वैष्णव धर्म पर अद्वा उपजे तदर्थ उपाय करना इस सभाका चतुर्थ उद्देश्य है।”

हम उक्त उद्देश्य समूह पढ़कर सभाके प्रकृत वो गम्भीर लक्ष्यार्थको यथा रीति उद्भेद न कर सकें। सभाके २य, ३य औ ४र्थ उद्देश्यके शेषांशपर तनिक प्रणिधान करनेसे यही प्रतीति होती है, जो केवलमात्र वैष्णव सम्प्रदायके मत-प्रचार औ उन्नतिके अर्थ यह सभा स्थापित हुई है। हमसे उन “हमारे सत्य सनातन” औ “आर्य्य धर्म” आदि कतिपय शब्दोंके, जो कि सभाके १म उद्देश्य औ ४र्थके प्रथमार्द्ध में लिखित हैं, अभिप्राय भांगी भान्ति न समझे गये। सभा यदि उक्त सनातन वा आर्य्य धर्मके लक्षण प्रगट करती तो उत्तम होता, नहीं तो सब किसकी की यही प्रतीति होगी कि वैष्णव सम्प्रदायका धर्मोच्चार ही इस सभाका “आर्य्य धर्म” है। अथवा यदि इस रीति ही सभाके हृदयका गूढ अभिप्राय हो, तब वर्तमान भारतके सर्वसाधारण आर्य्यजनोंसे सहानुभूति की आशा नितान्त सूदूरपरारहित है। वैष्णव धर्म पर हमारी प्रगाढ़ अद्वा रहेपर भी समाजके ओर दृष्टिपूर्वक हमको इस भान्ति समालोचना करना पड़ी।

कलकत्ता औ उसके आस पासके स्थानों में “ह. भ. प्र. सभा” नाम बहूतेरी आर्य्य धर्म सभा बन चुकी हैं। किन्तु सर्वत्र ही प्राय साम्प्रदायिक दृष्टि, साम्प्रदायिक मत औ साम्प्रदायिक रीतिसे कार्य्य ऊँचा करता है। प्राय किसी सभा में

मनु संहिता, याज्ञवल्क्य संहिता, तज्ज, वेद, वेदा-
स्तुतिर व्याख्यादि हर ना। आर्य जातिर अवश
पालनीय वर्णाश्रम धर्मादिर उपदेश ओ अवश
जातव्य वैज्ञानिक रहस्य तेदेर प्रतिष्ठा समाजे
क्रमे लुप्त प्राय हईते चलिल। भक्ति शास्त्रादि
द्वारा मानवेर मन भावराज्ये प्रवेश करे बटे,
किन्तु आश्रम धर्माचार लोपेर ओ वैज्ञानिक दृष्टि
अभावेर सङ्गे सङ्गे घोर सामाजिक विस्त्रव ओ
हृदयेर संकीर्णता उपस्थित हईया समस्त विशृंखल
करिया देयर। गत वर्षे उक्त सभाभवने धर्म-
प्रचारक सम्पादक ये “गार्हस्थ धर्म” सम्बन्धे एकटी
वक्तृता करियाहिलेन, ताहाते एतावत् विधिपूर्वक
प्रदर्शित हईयाहिल एवं अनेक बार सभाके
विशुद्ध आर्य पद्धतिते कार्य करिते अनुरोधओ
करा हईयाहिल। वर्णाश्रम धर्मर उपदेश ग्रन्थ-
गुलिर चर्चा आज काल केवल अध्यापक महाश्व-
दिगेर चतुष्पाटीतेई आवद्ध रहियाह्ले; अथात्र
धर्मालोचना स्थाने केवल भक्तिशास्त्र, वैराग्य शास्त्रा-
दिर चर्चा। अहो सभामण्डलि! यदि जनसमाजेर
कल्याणेषू हईया अज्ञादित हईया थाकेन, तवे
सहरेई संहिताकार ओ वैज्ञानिक तद्बेदागणके
आचार्येर आसने आस्थान करुन। याहाते ताहादेर
वर्णाश्रमोचित ओ आध्यात्मिक ओ भौतिक विज्ञा-
नानुमोदित अनुसन्धानीय उपदेशज्योतिः समाज
ध्ये विकीर्ण हर, कायमनोवाक्ये ताहारई यत्न करुन।

बोध करि आर्यधर्मी मात्रेई सभार सभ्य ओ
सहानुभावक हयैन, ईहा प्रत्येक सभारई
आकाङ्क्षा। सभागत व्यक्तिमणुली ये विविध सम्प्र-
दायभुक्त हईवेन, ताहार विचित्रता कि! किन्तु
साधारणतः सकलेई गृहस्थ, सुतरां से स्थाने
साम्प्रदायिक मत प्रचारित हईले, तं सम्प्रदायी
भिन्न अथात्र सकलेई प्रीतिभाव करिते पावेन
ना; किन्तु वर्णाश्रम धर्म वा वैज्ञानिक रहस्य व्याख्या
करिले, काहारई कामना अपूर्ण थाके ना। निज
निज आश्रमोचित धर्माचार भिन्न मनुष्येर हृदय
यथायथ सुसंगठित हर ना एवं ईदृश धर्मर प्रचार
भिन्न भारत कथनई निज प्रकृतिह हईवे ना।

कलिकाता हरिभक्ति प्रदायिनी सभार सद्गुदार
सङ्गण यदि प्रकृत आर्यधर्मर पुनरुद्दीपनार्थ
आपनादिगके वक्षपरिकर मने करेन, तवे बोध

मीमन्सागवहादि छोड़के, मनु स्मृति, याज्ञवल्क्य
स्मृति, तन्त्र, वेद, वेदान्तादि की व्याख्या न होती
है। आर्य जातिके अवश-पालनीय,, वर्णाश्रम
धर्मादिके उपदेश ओ अवश ज्ञातव्य वैज्ञानिक
तत्त्व की प्रतिष्ठा समाज में से धीरे धीरे उठती
चली जाती है। भक्ति शास्त्रादि करके मनु-
ष्योंके मनभाव राज्य में प्रवेश करते हैं सही, किन्तु
आश्रम धर्माचारके विलोप ओ वैज्ञानिक दृष्टिके
अभावके सङ्ग ही सङ्ग घोर सामाजिक विस्त्रव ओ
हृदय की सङ्कीर्णता मचकर समस्त रीति, नीतिको
उलट पालट कर देते हैं। गत वर्ष में धर्म प्रचा-
रक सम्पादकने जो उस सभाभवन में “गार्हस्थ
धर्म” इस आश्रम पर एक वक्तृता करीथी, तत्काल
ये विधि भांती भान्ति देखलायी गयी ओ अनेक
बार विशुद्ध आर्य रीतिसे कार्य चालानेके लिये
सभाको अनुरोध भी किया गया था। आज कल
केवल पाठशाले ही में विद्यार्थियोंको सिखलानेके
अर्थ वर्णाश्रम धर्मके उपदेशोंसे पूर्ण शास्त्रकी चर्चा
रूखा करती है। अहो सभामण्डलि! आप सबका
अभ्युदय, यदि समाजके कल्याणार्थ रूखा हो तो
शीघ्र ही स्मृति शास्त्रवाले ओ वैज्ञानिक तत्त्ववेत्ता-
ओंको अज्ञापूर्वक आचार्यकी वेदी पर बैठाइये।
ओ कायमन बचनसे इसीके यत्न करते रहिये
कि जिस रीतिसे उन्होंके वर्णाश्रमोचित ओ आ-
ध्यात्मिक वो भौतिक विज्ञानानुमोदित अनुसन्धानीय
उपदेशरूप ज्योतिः जनसमाजके सर्वत्र ही विकीर्ण
होवे।

बोध होता है, कि प्रत्येक सभा की यह आ-
कांक्षा है, कि हरेक आर्य धर्मी ही सभाके सभ्य
ओ सहायुभावक बनें। यह कुछ विचित्र नहीं,
जो सभा में आये ऊए, व्यक्ति समूह विविध सम्प्र-
दायके हैं; किन्तु साधारणतः सब कोई गृहस्थ हैं,
सुतरां वहां किसी एक सम्प्रदायके मत प्रचार
होनेसे उस सम्प्रदायी छोड़कर सब किसीकी
प्रीति न बढ़ सकेगी, किन्तु वर्णाश्रम धर्म वा
वैज्ञानिक तत्त्व की व्याख्यानसे किसीकी कामना
अपूर्ण न रहेगी। निज निज आश्रमके योग्य
धर्माचार किये बिना समुच्चका हृदय यथायथ
सुगठित न होता है ओ इस भान्ति धर्मके प्रचार
बिना भारत कभी निज प्रकृतिको न प्राप्त होगा।

कलकत्ता हरिभक्ति प्रदायिनी सभाके सद्गु-
दार सभ्य जनोंने यदि प्रकृत आर्य धर्म की पुन-
रुद्दीपनके अर्थ आपनेको वक्षपरिकर जानें तो,

करि, शिरचित्तै ठाहादेर उद्देश्य गुनिर प्रति पुन-
प्रणिधान पूर्वक आमादिगेर आशा पूर्ण करिवेन,
आर यदि केवल वैयव्य धर्मैर दिकेई ठाहादेर
लक्ष्य थाके, ताहाओ उक्तम, किन्तु तज्जग्य कार्या
प्रणाली आरओ किछु स्वतन्त्र भावे करिते हईवे।
सभार वर्तमान रीति, नीति ताहार पूर्णानुकूल
नहे।

मुद्देर आ, ध, प्र, सभार उपदेश।

(धर्मप्रचारक सम्पादककईक बाधात।)

ये केह ये कोन द्रव्यई भोजन करूक ना
केन, भोजनांतु किये परिमाणे जलपान करा
प्राणी मात्रैरई अभ्यास। अन्न थाओ, कृटी थाओ,
पिष्टक थाओ, फल मूल थाओ, परिशेषे जल ना
थाईले, शरीर सूनीतल हय ना, प्राण प्रफुल्ल हय ना,
अथवा अमादि सूचारुरूप परिपाकओ हय ना।
जलीय परमाणु शरीरे अवेशन ना करिले, प्राणी
जीवित थाकिते पारे ना। जल जीवेर जीवन
स्वरूप। अग्निर तापे, सूर्योदय तापे, मनस्तापे
कठि शुरु हईले, जल पाने शरीर शीतल हय, वेन
नवीन बलेर सकार हय, एही जग्य जलेर एत
आदर। एही जग्यई जगदीश्वर जलधीथात खनन
करिया धराके बेक्टेन करिया राखियाछेन। समये
जीवेर जग्य जलराशि आकाशे आकर्षण पूर्वक
संशोधन करतः, जलजाल रचना करिया, वर्षण
करिया थाकेन; कठिन पाषाण भेद करिया, जलेर
उत्स उत्सारित हईतेछे, भूमि खनन करिया देख
विधाता सेधानेओ जीवेर जग्य अगाध सक्ति जल-
राशि लुकाईया राखियाछेन। यदि तापित अन्न
शीतल करिते चाओ, जले अवगाहन कर।

आमादिगेर देशे सर्व विभागेई देखिते
पाई, कूलललनांगण कहे वा मस्तके करिया,
गङ्गादि नदी हईते जलकलस बहन करिया आने।
प्रत्येक घटनार सङ्गे सङ्गे भावेर तरङ्ग खेलिते
लागिल। देखिलाम बाँधाघाटे अनेकगुलि ईतर
ओ भद्र कूलनारी जलानयनार्थे अवतरण करियाछे।
वर्षाकाल-पथ ओ घाटे पिछिल, अति सावधाने अव-
तरण ओ आरोहण करिते हय। एकटी दीनदुःखी
रमणी मोपानउरे नगायमाना—दक्षिण हस्ते शून्

आशा है, वे स्थिर चित्ततासे अपने उद्देश्य सबको
फिर प्रणिधान कर हम सब की कामना पूरी
करेङ्गे औ यदि केवलमात्र वैष्णव मतके ओर
उन्हीं की दृष्टि रहें, तो भी कुछ हानि नहीं,
किन्तु तन्निमित्त सभा की कार्य-प्रणाली और कुछ
स्वतन्त्र करनी पड़ेगी। सभा की विद्यमान रीति
तत्कार्यसिद्धिका पर्याप्तानुकूल नहीं है।

मुद्देर आ, ध, प्र, सभाका उपदेश।

(धर्मप्रचारक-सम्पादकजीने व्याख्यान किया)

जिस किसीने जो कुछ द्रव्य क्यों न भोजन
करे, भोजनान्त में थोड़ा बहुत जलपीना
हरेक प्राणीका अभ्यास है। चाहे अन्नखाय,
चाहे रोटी खाय, चाहे पिष्टक अथवा फल मूल
भोजन करे, अन्त में जल पिये बिना शरीर
सुशीतल नहीं होता, प्राण भी प्रफुल्लित नहीं
होता अथवा अन्नादि सुन्दररूप नहीं पचता है।
जलीय परमाणु यदि शरीरके भीतर प्रवेश न
करें तो प्राणी जी नहीं सक्ता है। जलको जीवोंके
जीवन रूप करके मानना। अग्निके तापसे
सूर्यके तापसे अथवा मनस्तापसे कण्ट यदि सूक
जायतो जल पीनेसे शरीर शीतल होता है, मानो
नवीन बलका संचार होता है, एतदर्थ जलको
इतना आदर किया जाता है। इसी लिये
जगदीश्वरने जलधी खात खोदकर धराको घेर
रख छोड़ा है। समय समय में जीवोंके अर्थ जल-
राशिको आकाशमार्ग पर आकर्षण पूर्वक संशो-
धनानन्तर जलद जल रचना करके जलवर्षाया
करता है; कठिन पाषाण भेदकरके जलकी
भरना उछल आती है, भूमिको खोद कर देखलो,
विधाता वहाँ भी जीवोंकेलिये अगाध जलराशि
को संचय कर छिपाय रख दिये हैं, यदि तापित
अन्नको शीतल करना हो तो जलमें अवगाहन
पूर्वक स्नान करलो।

हमारे भरतखण्डके सकल विभाग ही में यह
देख पड़ता है, जो कुलनारीयां गङ्गादि नदीयां मेंसे
जल भर भर कर घड़ाओंको कल वा सीरपर करके
टो लाया करती हैं। प्रत्यक्ष घटनाके सङ्ग ही
सङ्ग भावकी लक्ष्मीमाला उछलने लगीं। देख पड़ा
कि पक्षेघाट पर बहुत सी इतर वो भद्रकुलनारी
यां जल लानेके अर्थ उतरती हैं। वर्षाकाल, घाट
औ घाटसब पीछल होगये। अतिसावधानतापूर्वक
उठना औ उतरना पड़ता है। कोई एक दीन
दुःखिनी रमणी सीढ़ीपर खड़ी छूट। दाहिने

कलसों अथोभागेर द्वारा जलके आन्दोलित करितेहिन, अकस्मात् कलस करछात हईया गेल, तरङ्गों जले नृत्य करिते करिते प्रवाहवेगे मध्यागन्तय उपस्थित हईल। क्रमे प्रबलवेगे बाहिरे लागिल, सम्मुखे एकथानि बाष्पीय जलयान-तटस्थ-लित जलवेगे प्रबलमान कलस जले परिपूर्ण हईल ओ अगाध गङ्गोंर जले डूबिया गेल। दृष्ट हईल ये आर एकटी कलस ओ भासिते छिल, बोध हईल ताहा अपवित्र बोधे केह येन भासाईया दियाछे, सेटी नदीर कियदूर गिया कूले लागियाछे ओ तदुपर एकटी काक उपविष्ट हईया, मल त्याग पूर्वक उड़िया गेल।

एदिके छुथिनीर एक मात्र कलस भासिया गेल, देखिया अन्त्या रमणीगण हासिते लागिल। तन्मध्ये एकटी रमणी वेशभूषाश्रित, हासिते २ येमन उठितेहिन, अमनि पिछल सोपाने पद-स्थलित हईया पड़िया गेल, शरीरे आघात लागिल, कलसटी भासिया, नदीर जल नदीते गिया मिशिल। आर एकटी नारी जलकलस कक्षे करिया, पथ दिया बाहिरेहिन। बोध हर ताहार कलसटी यथोचित स्पर्श छिल ना, अकस्मात् ताहार अधोदेश कर्छात हईया पड़िल, समस्त जलहे निर्गत ओ भूमिते पतित हईल। आर एकटी नारी जलपूर्ण कलस मुक्ता स्थाने रक्षा करिया छुई हात दोलाईया सङ्गिनीर सहित अनवहित छिन्ने विविधालाप करिते करिते बाहिरेहिन एकजन रहस्य प्रिय पुरुष सेह समय अपर एकजन लोकके डाकिया बलिल, देख देख, कि आश्चर्य, आज दिवाभागे आकाशे केमन राशि २ नक्षत्र देखा बाहिरेहिन, उक्त नारीर कर्णे एही कथा प्रवेश करिवामात्र किं कर्तव्य विचारविमूढेर न्याय, तत्काल ग्रीवा उठोलन पूर्वक आकाश-मार्गे दृष्टि चेक्का करिल, अमनि जलकलस ताहार पश्चात् भूमिते पतित ओ चुर्ग हईया गेल। लोक सकल हास्य करिया उठिल। आर कयेकटी स्त्रीके देखिलाम ताहारा मस्तके जल कलस रक्षा करियाछे एवं छुई हस्ते धरिया बल पूर्वक निज गृहे लईया गेल। याहारा निर्विघ्ने जल लईया गृहे पोछिल, ताहादेर पिपासार शान्तिर उपाय हईल। तन्मध्ये केह निज कलस मुख आच्छादन करिया, पवित्र स्थाने

हातसे मुख घड़ाके निम्नभाग जल में धोरही थी, घड़ा अकस्मात् हातसे निकल गया। तरङ्गों जलके साथ नाचता कुन्दता प्रवाहके वेगसे बीच गङ्गाजी में जा पड़ा। क्रमे क्रम प्रबल गतिसे जाने लगा। सान्धने में एक बड़ी भारी वाष्पीय जलयान (आहाज)। उसकी विषम गतिसे उच्छलती ऊँह जलराशि करके बहता जाता ऊँचा थड़ा जलराशिसे पूर्ण ऊँचा थी अगाध गम्भीर जल में डुब गया। वहाँ और भी एक घड़ाकी बहता जाता देख-पड़ा बुझ पड़ा, कि उसकी अपवित्र मान् कोई बहा दिया होगा। नदीके थोड़े दूरतक जाकर फिर किनारे में लगा और उसपर एककाक बैठके विष्ठा त्यागकर जड़गया।

दुधर दुःखिनी की घड़ा को बह जाता देख कर अन्यान्य रमणीयां हंसने लगी। उन में एक रमणी जो कि वेश भूषासे विभूषित थी, हंसती हसती ज्यों उठ रहतीथी, त्योंही पीछल सीँडि परसे फिछल गयी, शरीर में चोट लगा। घड़ा फूटगया। नदीका जल नदी में जा मिला। दुसरी एक स्त्री कोमर पर करके भर थड़ा जल लिये जाती थी। बोध ऊँचा कि उसका घड़ा यथोचित कठिन वा प्रका न था। अकस्मात् उसकी पेंदां कोमरसे खस पड़ा। समस्त जल ही निकल कर भूमिपर गिर गया। और एक स्त्री जलपूर्ण घड़ा शीरपर धरकर दो हात डोलाती ऊँह, साथी-योंके सङ्ग आसावधान चिन्तासे नाना भान्ति वार्त्तालाप करती ऊँह जातीथी, एक कोई रहस्य-प्रिय पुरुषने उस समय दुसरे एक जनको फुकर कर बोला, देख देख, क्या आश्चर्य, आज दिनहीको आकाशमण्डल पर कैसे नक्षत्रराशि देख पड़ते है, उस नारीके कान में इतनी बातें बैठते ही, उसने किंकर्त्तव्य विचारविमूढके समान झट सीर उठा कर आकाश मार्ग में दृष्टि की चेष्टा करी, जल की घड़ा उसकी पश्चात् भूमिपर गिर कर बूर बूर हो गया। सब लोग हंसने लगे। और कितने स्त्रीयां को देखा कि वे सीरपर घड़ा लिये दो हातसे यत्न पूर्वक पकड़े ऊँह, अपने अपने घर ले गयी। जितनी स्त्रीयां निर्विघ्नतासे जल ले लेकर घर पकड़ गयी उन्हींको घास मिठावनेका उपाय ऊँचा। उन्हीं में से कोई अपने सड़के लुह भाप कर पवित्रस्थान पर रखी, कोई आसावधानता से

राखिल, केह बा अनबहित चित्ते अनारुत राखिया दिल । अनारुत कलसे यदि कोन विषयरादि जलपान करे अथवा कोन कीट पतङ्गादि पड़िया, ताहाते प्राणत्याग करे, तबे अवशिष्ट जलपायी-गणेर प्राण नष्ट बा पीड़ा हईवार सञ्भावना । केह बा यখন जल आनिते गियाछिल तখন देखे नहि ये एकटी क्षुद्र मृतमृषिक शृणु कलस मध्ये पड़िया-छिल, सेई कलसे जल आनियाछे, क्रमे मृतमृषिकेर प्रतिगन्धे जल विकृतान्नाद ओ दुर्गन्धयुक्त हईया उठियाछे । जल पान पूर्वक सकल सिक्कास करिते लागिल, गन्नाजल अत्यन्त दूषित ओ पीड़ा दायक । सेई दिन हईते ताहारां ज्वाहवीर जल पान परित्याग करिल ।

महाज्ञागण ! लौकिक रहस्येर निगूढ़ मर्म उद्घेद ना करिया, थाकिते पारितेहि ना । साधारणेर बुद्धि ते गुट तब सकल सरल भावे ग्रहीत हईवे ऐह जन्म एकटी लौकिक व्यापारेर आदर्श-चित्र करिलाम, एक्के आम्हने ऐह चित्रेर अवगुंठन उन्मोचन पूर्वक उहार मध्ये प्रकृतिर रहस्यमयी लीला दर्शन करि ।

भगवत्प्रेमकेह आम्हनि निर्मल जल रूपे लक्ष्य करियाछि । मनुष्य नानाविध सांसारिक सुख, दुःख भोगे ये निरन्तर विमोहित থাকे, तत्तावतह जीवेर विविध आहारोय द्रव्य । चतुर-नीति लक्ष जन्म जीव ऐह रूप भोग करिया आम्हियाछे, मनुष्य जन्महै मर्त्य जीवेर भोगावसान काल । ऐह समयेहै चतुर मनुष्यगण भोग-राशिके परिपाक वा विनष्ट करिवार जन्म, भगवत्प्रेमनीर पान करिते থাকेन । शोक, रोग, पाप, ताप, कर्मादि समस्तहै जीर्ण हईया याय । जगतेर सर्वत्रहै ऐह प्रेमराज्य विसृत रहिरहियाछे ; संसार (विषय बुद्धि) अतिक्रम करिया याँ, देखिबे, भगवत्प्रेम अगाध सिद्ध येन जगत्के त्रास करितेछे । अन्तरीक्षे देवगणेर दिके दृक्पात कर, तथा हईते निर्मल प्रेम-धारा स्पर्श हईतेछे ; गिरिर ग्याय अचल धाविर गङ्गीर मुखेर दिके ताकाहिया देख, प्रेमेर उँस उँस-सारित हईया, जगत्के भासाहवार उपक्रम करितेछे । आम्हना याहादिगके हीन जाति बलिया गणा पूर्वक नीच मने करि, देख ताहादिगेर

घड़ेके मुँह खुला रख छोड़ दीया । खुला ऊँचा मुँह घड़े में से यदि सर्पादि जल पिये, अथवा कोई कीड़ा फड़िक्का गिरकर मरजाय तो अवशिष्ट जल पीनेवालेके प्राणनाश वा पीड़ा होने की सम्भावना है । एक स्त्री जब जल लाने को गयी थी, तब यह नहीं देखी कि एक छोटा सा मरा ऊँचा मूसा खाली घड़े में पड़ा रहा था, उस घड़े में जल भर लाई । क्रमे क्रम मूसाके दुर्गन्धसे जल भी विकृतान्नाद वो दुर्गन्धयुक्त हो गया । जल पीनेसे सबका यही सिद्धान्त ऊँचा, कि गङ्गा-जल अत्यन्त दूषित औ दुःखदायी है । उसी दिनसे वे लोग गङ्गाजल पीना छोड़ दिये ।

महात्मागण ! इस लौकिक रहस्यके निगूढ़ मर्मोद्घेद किये बिना सुखसे नहीं रहा जाता है । सब जनों की बुद्धि में गूढ़तत्त्व समूह सरल रीतिसे ग्रहण किये जाँके इसलिये मैंने एक लौकिक व्यापारके चित्र खिंच लिया, अब आइये इस चित्रके आवरण खुलकर, भीतर इसके प्रकृति की रहस्यमयी लीला दर्शन करूँ ।

भगवत प्रेम हीको मैं निर्मल जल करके लक्ष्य किया । मनुष्यगण जो निरन्तर नाना भान्तिके सांसारिक सुख, दुःख भोग में मोहित रहते हैं, उन सबको जीवोंके विविध आहारोय द्रव्य करके जानना । जीव चौरासी लक्ष जन्म इस रीति भोग करते आये, मर्त्य जीवोंका मानव जन्म ही भोगावसान काल है । सुचतुर मनुष्यगण इसी समय में भोग राशिको परिपाक वा विनष्ट करना भगवत प्रेमनीर पीते रहते हैं । शोक, रोग, पाप, ताप, कर्मादि सस्र ही जीर्ण हो जाते हैं । जगतके सर्वत्र ही यह प्रेमराज्य विसृत है । संसार की सीमा (विषयबुद्धि) टप जाओ, देखोगे भगवत प्रेमका अगाधसिद्ध जैसा कि जगत को त्रास करने आहता है । अन्तरीक्ष में देवगणके ओर नेत्र पसारो, वहाँसे भी निर्मल प्रेमधारा वृष्टि हो रही है । गिरिके समान अचल धाविके गङ्गीर मुखारविन्दके ओर ताक देखो, प्रेम की झरना उद्वल कर, जगतको त्रासित करनार्थ उद्वल हो रहा है । हम सब जिन्हें हीन जाति समझकर हथ्या पूर्वक नीच मानते हैं, देखलो उन्हींके हृदय में भी प्रेम लुका रहा है । यदि आधि-

हृदये० प्रेम लूकान्वित रहियाछे । यदि आधि-
भौतिक, आधिदैविक 'ओ आध्यात्मिक तापेर दुः-
सह यातना शीतल करिते चाओ तबे भगव० प्रेम-
नौरे निमग्न हओ ।

जीवगणही कुलनारी बलिया वर्णित एवं भगव०-
प्रेमर नदीही गङ्गानदी एवं हृदयही जलकलस
रूपे ! ललित हईयाछे । शास्त्रचर्चा, साधुसङ्ग,
तपस्यादिही नदीर बाँधाघाटेर सोपानसुत्र ; मनुष्य-
गण साधारणतः एतदुपायेही भगव०प्रेमर रसा-
स्वादन करिते पावे । कुमति, कुवासनादिही वर्षा-
बारि र न्याय साधुमार्गके अत्यन्त पिछल ओ दुर्गम
करिया दियाछे । अति सावधाने घाटे अवतरण
ओ तथा हईते उथित हईते हय ।

साधु हृदय प्रेमे भासितेछे देखिया, बेश-
धारी पण्डिताभिमान जीव उपहास करिया उठे
ओ आपनाके ज्ञानी जानिया, वेमन उक्ततर
सोपाने आरोहण करिते याय, अहंकारे उन्नत
गुट अमनि पदस्थलित हईया, आघात प्राप्ति हय एवं
ताहार हृदय छिन्न भिन्न ओ प्रेमविशुद्ध हईया
याय ! प्रेमिकेर प्रति उपहास करिले, भगवान
ताहार अहंकार चूर्ण करिया देन । ये जीव ज्ञान
विज्ञानादिर अनुशीलन ओ गुरु श्रद्धा अभावे,
आपनार हृदयके अदृष्टरूपे गठन करिते पावे
नई, ताहार प्रेमराशि, कामिनी कक्षच्युत भय
कलसेर न्याय, हृदय भेद करिया, संसार मार्गे
विस्तृत हईया याय । याहारा प्रेमलाभ पूर्वक
अस्तित्वेर चिन्तारहिते मात्र रक्षा करिया, अनवहित-
चिते सांसारिकताय उन्मार्गगामी हय, ताहारा
मिथ्या रहस्य प्रिय पुरुषेर अर्थात् भ्रमेर मिथ्या
प्ररोचनाय विश्वास करिया, भ्रमहृदय ओ प्रेमशून्य
हईया पड़े । आर कतिपय महात्मा प्रेम राशिके
शिरोधार्य करिया वस्त्र ओ चेष्टा द्वारा रक्षा पूर्वक
गृहे वा आश्रमन्दिरा प्रवेश करिया थाकेन ।

याहारा एहीरूपे गृहे पौछिलेन ताँहादेरही
तुम्हार शान्ति हईवार ओ भोगावसानेर उपाय
हईल । प्रेमलाभेर परेओ आचार नाना चिन्त-
विकार हईवार संभावना थाके, एही जगत् अचतुर
प्रेमिकगण मनर भाव, मनर कथा, प्रेमर तत्त्व
समस्त हृदयेर मध्येही लूकान्वित राखेन, पाछे हृदय-
रहित रहिले, निर्मल प्रेम कलुषित हय

भौतिक, आधिदैविक ओ आध्यात्मिक तापों की
यातनाको शीतल करने चाहो तो भगवत् प्रेमनारी
में निमग्न हो जाओ ।

जीवगण ही कुलनारी करके वर्णित, भगवत्
प्रेमनदी ही गङ्गानदी ओ हृदय ही जल भरने
का घड़ा करके ललित हुआ है । शास्त्रचर्चा,
साधुसङ्ग, तपस्या आदि ही मानो नदीके पके घाट
की सीढ़ी हैं । मनुष्यगण साधारणतः इस ही
उपायसे भगवत् प्रेमके रसास्वाद कर सकते हैं ।
कुमति, कुवासना आदि ही वर्षावारिके समान
साधुमार्गको अत्यन्त पिछल ओ दुर्गम कर दी है ।
अतीव सावधानतापूर्वक घाट में उतरना ओ वहाँसे
उठना पड़ता है ।

साधुके हृदयको प्रेमसे ज्ञात देखकर भेद-
धारी पण्डिताभिमान जीव उपहास किया करता
है और आप अपनेको ज्ञानी मानकर ज्यों उन्नतर
सोपानपर आरुढ़ होने चाहता त्योंही अहङ्का-
रसे फुला हुआ मूढ़ पिछलकर आघात प्राप्त होता
है, और उसका हृदय छिन्न भिन्न और प्रेमशून्य
हो जाता है । प्रेमिकके ओर हंसनेसे भगवान
उस्के अहङ्कार शून्य कर देते हैं । जो जीव ज्ञान,
विज्ञान आदि की चर्चा और शुद्ध की सेवाके
अभावसे अपने हृदयको सुदृढ़ नहीं बनाय सके,
उस्को प्रेमराशी कामिनीके कक्षच्युत फूटा हुआ,
घड़ाके समान, हृदयको भेद करके संसारमार्ग
पर विस्तार हो जाते हैं । जो लोग, प्रेमलाभ
पूर्वक केवलमात्र मस्तिष्क की चिन्तावृत्ति में रूढ़-
कर असावधान चित्ततासे सांसारिकता रूप कुमार्ग
में जाते हैं, वे मिथ्या रहस्यप्रिय पुरुष की अर्थात्
भ्रम की मिथ्या प्रेरणा पर विश्वास करके भ्रम-
हृदय और प्रेमशून्य हो जाता है । और कितने
महात्मा प्रेमराशीको सिरपर धरकर यत्न और
चेष्टासे रक्षापूर्वक गृह अर्थात् आश्रम मन्दिर में
प्रवेश किये करते हैं ।

जो लोग इस रीतिसे घर में जा पड़ें,
उन्हीं की लक्ष्मी-शान्ति होनेका ओ भोगावसानका,
उपाय मिला । प्रेम उपजनेके अनन्तर भी फिर
नाना चिन्तविकार होनेकी संभावना रहती,
इसीलिये सुचतुर प्रेमिकोंने निज निज मनके भाव
मन की शुद्ध चर्चा, प्रेमके तत्त्व समस्त हृदयकी के
मध्य में छिपा रखते हैं, आशङ्का रह है, कि

है। हाँ! हाँ! हाँ! ये प्रेमिक सदा ही बाहिर प्रेम के भाव देखाई देता था, ताँहार प्रेम के सङ्ग सङ्ग क्रमे अहङ्कारादि विषय गलिनता मिश्रित हईवार सञ्चारन। आँवार हय त केह सङ्ग सङ्ग हाँ! प्रेम लाँभार्थ गमन करिवाँर समय, हृदय के मध्ये वितर्क वासना (ग्रन्थमयिक) लईयाँ वाँय, प्रताप हईले, ताँहार हृदय के भाव अति छुषित बलियाँ, प्रतीत हईयाँ थाँके। एही जग प्रेम शिक्षा करिवाँर समय, अतीव निर्मल चिह्न हईते हय।

प्रथमे ये दुःखिनी कलस भाँसियाँ गियाँ छिल बलियाँ छिलान, ताँहार लक्षार्थ एही ये निरहङ्कृत साधक के निर्मल हृदय के प्रेमाभ्यास करिते २. अगाध प्रेमनीरे भाँसियाँ वाँय, साधक तखन सञ्चारनी ताँहार सेही निर्मल हृदय भगवत् प्रेमतरङ्गे नृत्य करिते करिते अपार भवपाराँवार पार पारग भगवत्तरङ्गारविन्दरूप अर्णवपोत के समागम ओ रूपालाँभ करे, अग्नि उछलित प्रेमावेशे हृदय परिपूर्ण हईयाँ, गङ्गीर जलगर्भे निमग्न हईयाँ वाँय, संसार आँर ताँहाँके देखिते पाँय नाँ, शशीतल सलिले साधक चिरदिने के जन्य मग्न हईलेन, आँर उठिलेन नाँ। अपर कलशनी शून्यहृदय वेशधारी सञ्चारनी आँदर्श, ताँहार विभूति लेपन काँक-विठार नाँय लक्षित हय ओ संसाररूप कुले लाँगियाँ थाँके।

साधकगण ! यदि सन्तप्त हृदय के शीतल करिते चाँओ, यदि यातना जाल छेद करिते चाँओ, यदि आनन्दरत्नाकर के रत्नछटा दर्शन करिते चाँओ, तबे वाँओ, दुःखिनी कलसे नाँय डूबियाँ वाँओ, प्रेम सरिते के गङ्गीर सलिले डूबियाँ वाँओ, संसार के पश्चाते तूछ बोधे उपेक्षा करियाँ प्रेम के उल्लासतरङ्गमाला के सङ्ग नृत्य करिते २. अतलस्पर्श जले डूबियाँ वाँओ, शशीतल हईवे चिरदिने के जग शान्तिलाँभ करिबे, आनन्दे हिमाल तोमार चतुर्दिके बहिते थाँकिबे।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरि ॐ ।

हृदय के द्वार खुला रखने से यदि कोई निर्मल प्रेम को कलुषित कर दे। जिस प्रेमिकने सदा बाहर बाहर प्रेम के भाव देखाया फिरता है उसके प्रेम के सङ्ग ही सङ्ग क्रमे क्रम अहङ्कारादि विषय और मलिनता मिश्रित हो जा सकती हैं। फिर यह भी देखिये कि कोई सत्सङ्ग के द्वारा जब प्रेम शिक्षार्थ जाता है, उस समय यदि उसके हृदय में वितर्क-वासना (ग्रन्थमयिक) रह जाय तो लौटने के अनन्तर उसकी चित्तवृत्ति और भी दूषित बुझ पड़ती है। इसीलिये प्रेमशिक्षा के समय में अतीव निर्मल चित्त होना चाहिये।

पहले ही जो मैं कहा है, कि एक दुःखिनी का घड़ा बह गया, उसका लक्ष्यार्थ यह है, कि अहङ्कार से रहित साधक का हृदय प्रेमाभ्यास करते करते अगाध प्रेमरूप नीर में बह जाता है। मानो साधक उस समय सन्यासी बने। उनका वह निर्मल हृदय भगवत् प्रेमतरङ्ग में नाचते कुन्दते भगवत्तरङ्गारविन्दरूप अर्णवपोत के, जो कि अपार भवपारावार-पारपारग है, समागम और लप्ता लाभ करते हैं, और उछलता उछा प्रेम के आवेश से हृदय पूर्ण होकर गङ्गीर जल गर्भ में निमग्न हो जाता है, उस समय वे संसार के अदर्शनीय हो जाते हैं, सुशीतल जल में साधक चिरदिन के निमित्त निमग्न जाएँ, फिर नहीं उठें। दूसरा घड़ा जो मानो शून्यहृदयभेषधारी सन्यासी का आदर्श है, उसके शरीर पर जो भस्म लगाया जाता है, उसको काक-विष्टा के समान लक्षित किया गया और संसाररूप किनारे में लगा रहता है।

साधकवर्ग ! यदि सन्तप्त हृदय को शीतल करने चाहो, यदि यातना जाल को छेद करने चाहो, यदि रत्नाकर की रत्नछटा दर्शन करने चाहो, तो जाओ, दुःखिनी का घड़ा के नाई डूबे जाओ, प्रेम नदी के गभीर सलिल में डूबे जाओ, संसार को पीछे छोड़कर उपेक्षापूर्वक तूच्छ मान के प्रेम की उल्लास तरङ्गमाला के साथ नृत्य करते जाएँ अतल-स्पर्श जल में डूबे जाओ, सुशीतल होओगे। चिरदिन के निमित्त शान्तिलाभ करोगे, आनन्द-हिमाल तुम्हारे चारों ओर बहता रहेगा।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरि ॐ ।

विज्ञापन ।

निरुद्ध ।

आमार प्रियतमा भार्या-भक्ति-वर्द्धन हईते “आर्या” नामधारी महात्मागणेर सुश्रमाय सज्जता हईया तौहदिगैर प्रसादे ओ कुटीरे वास करितेन । तौहारा ये दिन हईते अदेशे गमन करियाछेन, सेई दिन हईते आमार भार्यार कोन उदेश पाओया याईतेछे ना । देशे देशे, नगरे नगरे, पथे, मठे, पर्णकुटीरे, कमलकुटीरे, येथाने सेथाने अनुसन्धान करियाओ तौहार उदेश पाईलाम ना । सभाय, समाजे, आथड़ा ओ महोत्सव मेलातेओ तद्ध करिते कृती करि नाई, किन्तु कोथाओ प्रियतमार देखा पाईलाम ना । “भक्ति” वेश धारण करिया कतिपय बाधितारिणी रमणी आमार पाणिस्पर्श करिते आसियाछिल, किन्तु लक्षणादि द्वारा देखिलाम ये ताहादेर केहई आमार प्रकृत भार्या नहे । ये व्यक्ति आमार प्रियतमाके आमार निकट आनिया दिवे, आमा ताहाके आनन्द राज्ञे अभिषेक करिया नितानिकेतनेर अधिकारी करिव, एवं शान्ति नाम्नी अलोकसामान्ता कन्यार सहित विवाह दिव । मुक्ति ताहार परिचर्या करिते थाकिवे । अलमति विस्तारेण ।

ब्रह्मलोक ।

श्रीश्रीश्री ॐ

धर्मप्रचारकसंक्रांत नियमावली ।

१। यदि कोम धर्माद्या आर्यधर्मर प्रतिष्ठा रक्षा ओ प्रचार निमित्त बाङ्गला अथवा हिन्दी-भाषार वा उन्नत भाषातेई कोन विषय लिखिआ प्रेरण करेन, तबे लिखित विषय सारवान विवेचना हईले, आनन्द ओ उन्साहसकारे धर्म प्रचारके प्रकाश करिव ।

२। धर्मप्रचारक मूला ओ एतन् संक्रांत पत्रादि मुद्रेर “आर्यधर्मप्रचारिणी सभा,” आमार नामे पाठाईते हईवे । पत्र विचारिन् हईले, गृहीत हईवे ना ।

३। मूला साधारणतः पोष्टल मणिअर्डारे, पाठाईवेन । डाक टिकिटे मूला पाठाईते हईले, अर्द्ध आना मूल्यर टिकिट प्रेरण करिवेन ।

४। धर्मप्रचारक १म भाग, १० संख्या हईते डाकवार-सह अग्रिम वार्षिक मूल्यर नियम तिन प्रकार हईयाछे ।

उत्तम कागजे,	वार्षिक	७।०, प्रतिथण्ड १।०
मध्यम “	”	२।० “ १।०
साधारण “	”	१।० “ ०।०

मुद्रेर, आर्यधर्म- } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन ।
प्रचारिणी सभा } सम्पादक ।

एई पत्रिका प्रति पूर्णमाते मुद्रेर आर्यधर्म प्रचारिणी सभार उन्साहे प्रकाशित हईया थाके ।

विज्ञापन ।

पता नहीं मिलता ।

मेरी प्रियतमा भार्या-भक्ति-वर्द्धन दिनोसे आर्यनाम महात्माओंकी सेवासे सन्तुष्ट होकर उन्हीं के प्रसाद में औ कुटीर में वास करती थी । जब से वे अपने देशको (नित्यधाम) मिथारे हैं उस दिनसे मेरी भार्या की कोई पता नहीं लगता है । देश देशान्तर में, नगर नगर में, बाट बाट में, मराठ मराठ में, पर्णकुटीर में, कमलकुटीर में, जहाँ तहाँ लुहरी गई, किन्तु उनका पता नहीं मिला । सभा में, समाज में, अखाड़े में, औ महोत्सव की मेलाओं में अन्वेषण करने में भी लुटी न की गई किन्तु कहीं प्रियतमासे भेट न हुआ । “भक्ति” के भेषली ऊड़-कितनी व्यभिचारिणी रमणी मेरे पाणिस्पर्श करनेके लिये आई थीं, किन्तु लक्षणादिसे देखा गया, जो उन में कोई भी मेरी प्रकृत भार्या नहीं है । जो मेरी प्रियतमा को मेरे निकट लाय देगा, मैं उसको आनन्दराज्य में अभिषेक कर नित्यनिकेतनके अधिकारी बनाउङ्गा और शान्ति नाम कन्याके सहित, जिसका रूप अलोकसामान्य है, विवाह दे दूङ्गा । मुक्ति उसकी परिचर्या में लगी रहेगी । अलमति विस्तारेण । ब्रह्मलोक । श्रीश्रीश्री ॐ ।

धर्मप्रचारकसम्बन्धी नियमावली ।

१। यदि कोई धर्मात्मा आर्यधर्म की प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करनेके निमित्त बाङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओंमें कोई प्रबन्ध लिखके भेजे तो लिखित विषय सारवान प्राप्त होनेसे आनन्द औ उन्साह सहित धर्मप्रचारक में प्रकाश कियाजायगा ।

२। धर्मप्रचारक पत्रके मौल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मुद्रेर “आर्यधर्मप्रचारिणी सभाके” पत्रमें भेरे पाव भेजने होगा । पत्र वैरिं हीतो नहीं लिया जायगा ।

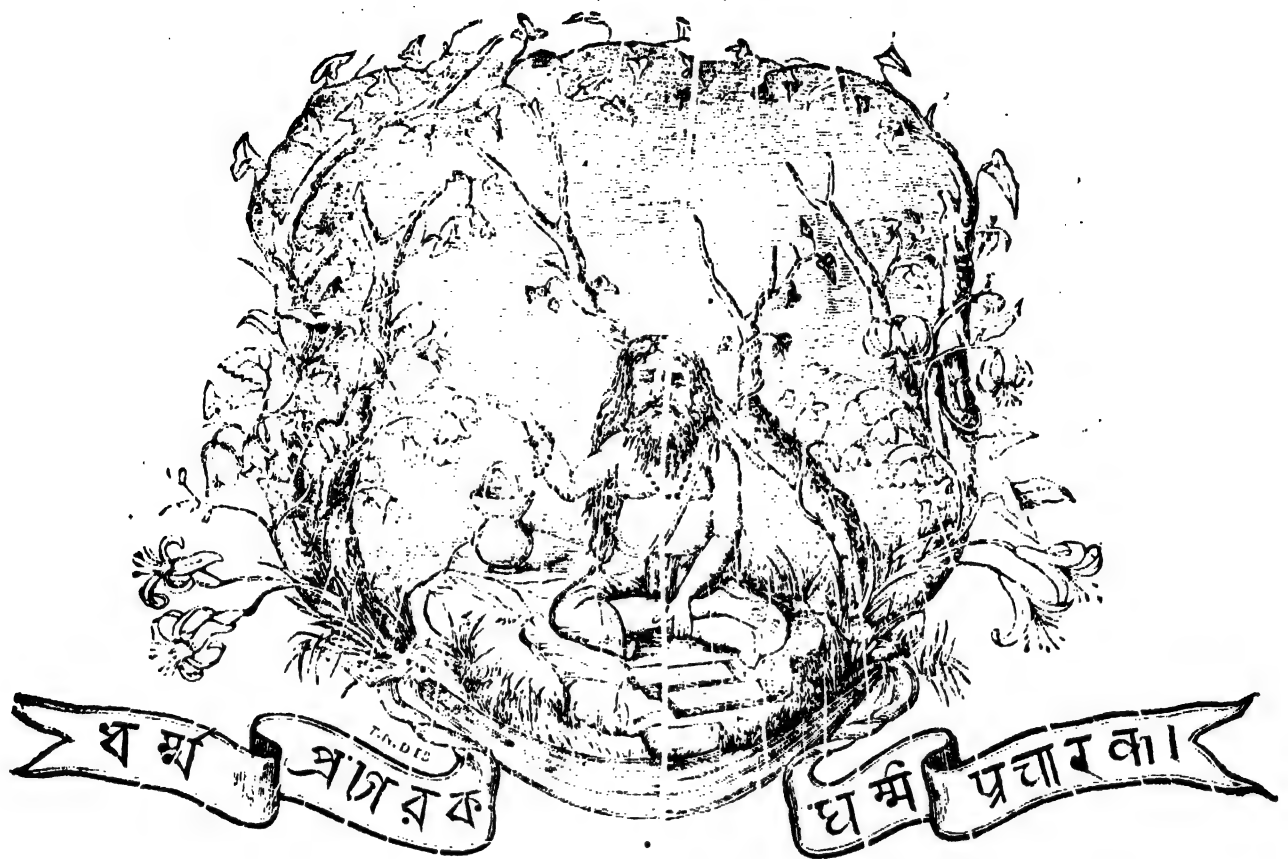
३। मौल सम्भवतः पोष्टल मनि अडोर करके भेजना । यदि डाक टिकिट में भेजे तो आध आनिया टिकिट करके भेज देवे ।

४। धर्मप्रचारक १म भाग, १२ संख्यासे डाककर सहित अग्रिम वार्षिक मौल तीन प्रकार हुआ ।

उत्तम कागजपर,	वार्षिक	२।०	प्रतिसंख्या ।०
मध्यम “	”	२।०	” १।०
साधारण “	”	१।०	” =

मुद्रेर, आर्यधर्म- } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन
प्रचारिणी सभा । } सम्पादक ।

एई पत्र हर पूर्णिमा में मुद्रेर आर्यधर्मप्रचारिणी सभाके उन्साहसे प्रकाशित होता है ।



“এক এব সুহৃদ্বর্মা নিধনেঃপ্যনুযাতি যঃ ।
শরীরেণ সমন্বাশং সর্বমন্যতু গচ্ছতি ॥”

“एक एव सुहृद्वर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समन्वाशं सर्वमन्यतु गच्छति ॥”

৩য় ভাগ । } শকাব্দাঃ ১৮০৩ ।
৪৬ সংখ্যা । } শ্রাবণ—পূর্ণিমা ।

৩য় ভাগ । } শকাব্দা ১৮০৩ ।
৪৬ সংখ্যা । } শ্রাবণ—পূর্ণিমা ।

পরমার্থ সার ।

(পূর্ব প্রকাশিতের পর) ।

ত্রিগুণা চৈতন্যাত্মনি সর্বগতেহবস্থিতাখিলাধারে ।
কুরুতে সৃষ্টিমবিদ্যা সর্বত্র স্পৃশতে নয়নান্মা ॥৫০॥

সর্বত্র ওতঃ প্রোতভাবে বিদ্যমান ও সমস্ত জগতের আধার ভূত আত্ম চৈতন্যপ্রিত অবিদ্যা-রূপিণী মায়া হইতেই তাবৎ সৃষ্টি ক্রিয়া নির্বাহ হইয়া থাকে, বস্তুতঃ উক্ত রচনা কার্য আত্মাকে সংস্পর্শ করিতে পারে না ।

আত্ম-সত্তা নিষ্ক্রিয় ; ক্রিয়া সমস্ত প্রকৃতির ক্ষুণ্ণ মাত্র । দাহিকা শক্তিই (অগ্নির প্রকৃতি) যেমন অল্প পদার্থকে ভস্ম করিয়া ফেলে কিন্তু অগ্নি দ্রব্য দাহের কারণ নহে, তদ্রূপ আধার স্বরূপ নিষ্ক্রিয় পরমাত্মা সৃষ্টির কারণ নহেন, প্রকৃতিই তাবৎ সৃষ্টির বীজ স্বরূপ ।

রজ্জ্বং ভুজঙ্গহেতৌ প্রভব বিনাশৌ যথানন্তঃ ।
জগদুৎপত্তিবিনাশৌ ন তৎ কারণে স্তম্ভবদ্বিহ ॥৫১॥

পরমার্থ সার ।

(পূর্ব প্রকাশিতের আগে)

ত্রিগুণা চৈতন্যাত্মনি সর্বগতেঃবস্থিতাখিলাধারে ।
কুরুতে সৃষ্টিমবিদ্যা সর্বত্র স্পৃশতে নয়নান্মা ॥৫০॥

সর্বত্র প্রোতপ্রোত করকে বিদ্যমান ও সব জগতের আধারভূত আত্ম চৈতন্যকে আশ্রিত জো অবিদ্যা-রূপ মায়াই, उसहीसे समस्त सृष्टि ऊत्था करती है ; फलतः उक्त रचना आत्माको संस्पर्श नहीं कर सकती है ।

आत्म-सत्ता निष्क्रिय है ; क्रियायेंको प्रकृतिका स्फुरण करके जानना । दाहिका शक्ति ही (अग्नि की प्रकृति) जैसा अन्य पदार्थको भस्म कर डालतो है, किन्तु वस्तुतः अग्नि द्रव्यदाहका कारण नहीं है, उस भाँति आधार स्वरूप निष्क्रिय परमात्मा सृष्टिका कारण नहीं, प्रकृति ही समस्त सृष्टिका बीज रूप है ।

रज्जां भुजङ्गहेतौ प्रभव विनाशौ यथानन्तः ।
जगदुत्पत्तिविनाशौ न तत्कारणस्तद्वदिह ॥५१॥

रज्जु ते ये भुज्जस्य भ्रम इत्येव बुद्धिरिह
उत्पत्तिं ओ विनाश इति यां च वस्तुतः तां
भुज्जस्य आरोपित इत्येव ना, तद्रूपं जगत्तेरिह उदय
ओ ऋय इति यां च किन्तु तां कथं नै परमात्माते
आरोपित इति ते पाते ना ।

जन्मविनाशनगमनागमनमलैः सङ्गविवर्जितो नित्यः ।
आकाश इव घटादिषु सर्वत्रा सर्वतोपेतः ॥५२॥

येमन आकाश समस्त घटे विराज करियाओ
समस्त वस्तु इति ते निःसङ्ग तद्रूप ऋयोदय ओ गमना
गमन आदि मल वर्जित नित्य परमात्मा निरस्तुरिह
सर्वथा निर्लिप्त ।

कर्म शुभाशुभजनितैः

सुख दुःखैर्धोगो भवत्पुपाधीनां ।

तत्संस्पर्शाद्वक्त्र

सुखं संस्पर्शाद्वक्त्रवत् ॥ ५३ ॥

येमन तत्स्पर्शे सङ्ग वशतः अतस्त्वेव वक्त्र
प्राप्त इत्येव तद्रूप सुख दुःख फलप्रद शुभाशुभ कर्म
जन्म देहादि संस्पर्शे आत्माओ तदेव निवास
वशतः वक्त्र दशाश्वत्थे गाय प्रतीत इत्येव, वस्तुतः
आत्मा वक्त्र इत्येव ना ।

देहं शुभकरणं गोचरं संस्पर्शः पूरुषस्य यावदिह भवति ।
तावन्मायापाशैः संसारे रज्जु इति भाति ॥ ५४ ॥

ये पर्याप्त जीव देह इन्द्रियादि ते सङ्ग करिते
थाकिवे तावत् काल संसार माया पाशे आपनाके
आवक्त बलिना प्रतीत इति वे ।

ये पर्याप्त देह मन प्राणादि ते “आग्नि” वा
“आमार” इत्याकारं बुद्धिं थाकिवे, तावत् काले
जीव वक्त्र प्रतीत ; उक्त दुर्बुद्धि वशतः इत्येव लज्जा,
हिंसा अभिमानादि अन्तः संसार पाश जीवके वक्त
करिया राखे । जन्म जन्मान्तरे मलिना वासना
राशि जीवके अदृश दुर्बुद्धियुक्त करिया विविध
भोगायतने प्रेरणा करिते थाके ।

मातृ पितृ पुत्रं वाक्त्रं धनं भोगं विभागं समूहः ।

जन्मजरा मरणमये चक्र इव आमाते जन्तुः ॥ ५५ ॥

पिता, माता, पुत्र, मित्र, कलत्र, विद्वत् भोग
भागे विभूत इति या जीवगण जन्म जरा, मरणरूप
चक्र निरस्तुर विघूर्णित इति या थाके ।

क्रमशः ।

रज्जु में जो भुज्जरूप भ्रम होता है, उस
भ्रमबुद्धिहीन उत्पत्ति थी विनाश होता है ;
वस्तुतः भुज्जका नहीं, उस भान्ति जगत्हीन
उदय थी लय उदय करता है किन्तु परमात्मा में
उसका आरोप करना भूल है ।

जन्मविनाशनगमनागमनमलैः सङ्गविवर्जितो नित्यः ।
आकाश इव घटादिषु सर्वत्रा सर्वतोपेतः ॥५२॥

जैसा आकाश सब घट में रहे भी सबसे अलग
है उस भान्ति लयोदय थी गमनागमन आदि मल
से रहित नित्य परमात्मा सदा ही सर्वथा
निर्लेप है ।

कर्मशुभाशुभजनितैः

सुखदुःखैर्योगं भवत्पुपाधीनां ।

तत्संस्पर्शाद्वक्त्र

सङ्गाद्वक्त्रवत् ॥ ५३ ॥

जैसा चोरके सङ्ग करके वह भी बन्धा जाता
है, जो कि चोरी नहीं किया, तद्रूप सुख दुःख फल
देनेवाले शुभ थी अशुभ कर्मसे बना उदय देह
आदिके संयोग करके उस देह में रहने वाले
आत्माका भी बन्धन दशाश्वत्थ बोध होता है वस्तुतः
आत्माका बन्धन नहीं होता है ।

देहं शुभकरणं गोचरं संस्पर्शः पूरुषस्य यावदिह भवति ।
तावन्मायापाशैः संसारे रज्जु इति भाति ॥५४॥

जवतक जीव देह इन्द्रियादिके सङ्ग करके
रहे हूँ, तवतक वह अपनेको संसार फांस में बन्धा
उदय देखता रहेगा ।

जवतक देह, मन, प्राण आदि में “मैं” वा
“मेरा” इस भान्ति बुद्धि रहेगी, तब ही तक
जीवकी बन्धन दशा है ; उक्त दुर्बुद्धि करके लज्जा,
हिंसा, अभिमानादि संसाररूप अष्ट पाशोंने
जीवको बन्ध कर रखता है । जन्म जन्मान्तर की
मलिना वासना राशि ही जीवको ऐसी दुर्बुद्धियुक्त
करके जाना भान्ति भोगादि की प्रेरणा की
करती है ।

मातृपितृपुत्रवान्धवा धनभोगविभागसमूहः ।

जन्मजरामरणमये चक्र इव आमाते जन्तुः ॥५५॥

पिता, माता, पुत्र, मित्र, कलत्र, धन भोगादि
से समूह जीवगण जन्म, जरा, मरणरूप चक्र में
निरन्तर भ्रमते रहते हैं । (शेष आगे)

आर्या शास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशिते पर)

एकमे सप्रति संहार निर्गमनेर कारण निर्णय हईतेछे । पूर्वे उक्त हईयाछे ये क्रिया मात्रै-रई प्रतिक्रिया आछे, सुतरां वाग्बुद्धि रूप क्रियारो प्रतिक्रिया आछे । बाङ्निष्पादक यन्त्रे स्वभावस्थापिका क्रियाई बाङ्बुद्धि प्रतिक्रिया । बाङ्बुद्धि वखन बाङ्निष्पादक यन्त्रे स्वभाव स्थापिका क्रियाके अभिभूत करिया अकार्ये प्रवृत्त हय, तखनई स्वभावस्थापिका ओ स्वीय आत्माके लाभ करि-वार जगु यत्नवती हय किन्तु बाङ्बुद्धि प्रबल कारण वनिठे सम्झी अर्थे प्रचोदना सम्मिलित स्मरणशक्त ज्ञान दृष्ट रूप विद्यमान थाकाते कोन मतेई तदीय कार्य वाग्बुद्धिके अभिभूत करिते पावे ना ; अतएवे वखन उक्तविध ज्ञान विमर्श प्रकाशे शेष हय तखन सेई स्वभावस्थापिका क्रिया चरि-तार्थ हय । एई अवकाशे यदि पुनर्कार प्रचोदना वटित अथान्तर स्मरण बुद्धि अद्भुत हय तवे ए प्रतिक्रिया अत्यन्त क्षणेई अभिभूत हईया वाय एवं वाग्बुद्धि पुनः प्रवृत्ति जग्ये । ईहाई सप्रति-संहार निर्गमनेर कारण । आर वखन उक्तविध स्मरणबुद्धि जग्येते विलम्ब हय तखन सविराम निर्ग-मनेर कारण अरूप हईया थाके ।

मने कर, प्रश्न कर्ता जिज्ञासा करिल ये कीदृ-शां किं ग्रहम् ? (किरूप हईते—किरूप व्यक्ति हईते कि वस्तु ग्रहण करिते हय) एईक्षण अप्रति-संहार श्रुलोक रीति क्रमे जिज्ञासा अर्थ सकलैर मध्ये केवलमात्र छईटी किम् शब्देर अर्थे (येरूप व्यक्ति हईते एवं ग्राह्य ग्रहण करिते हय) अन्वेष-ण बुद्धि एवं उक्त मते “भावका” निष्पन्न हईया वनिठ सम्झी अर्थे प्रकाश निवर्तन स्वभाव-स्थापिका क्रिया द्वारा वाग्बुद्धि अभिभूत हईल, एई अवकाशे अति नीचई प्रचोदना वटित “भाव” अर्थे स्मरण बुद्धि हईल सुतरां अत्यन्त क्षणे पारेई पुनः वाग्बुद्धि प्रवृत्ति हईया “भावः” एई शब्दके निष्पन्न करिल ।

एहलेओ अप्रतिसंहारेर गाय सक्ति कार्ये अवन्यविता दृष्ट हय । सप्रतिसंहार निर्गमने, वाग्बुद्धि एकटी कथार निष्पादनाछे एमत अन्न

आर्य शास्त्र-विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशिते आगे)

अब सप्रतिसंहार-निर्गमनका कारण निरूपण किया जाता है । पूर्व में कहा गया जो क्रिया मात्र ही की प्रतिक्रिया है, सुतरां वाग्बुद्धि नाम क्रिया की भी प्रतिक्रिया है । बाङ्निष्पादक यन्त्र की स्वभावस्थापिका क्रिया हीका नाम “वाग्बुद्धि प्रतिक्रिया” । वाग्बुद्धि जब बाङ्निष्पादक यन्त्र की स्वभाव स्थापिका क्रियाको अभिभूत करके स्वकार्य में प्रवृत्त होती है, उस ही समय स्वभाव-स्थापिका भी निज आत्मासे मिलनेके लिये यत्न करती है किन्तु वाग्बुद्धिका प्रबल कारण धनिष्ठ सम्बन्धी अर्थकी प्रचोदनासे सम्मिलित स्मरणशक्त ज्ञान दृष्टरूपसे विद्यमान रहनेपर उसका कार्य किसी तरहसे वाग्बुद्धिको अभिभूत नहीं कर सकता है ; तदनन्तर जब उक्त भान्ति ज्ञानके विषयार्थ प्रकाशका शेष हो जाय तब वह क्रिया भी तट होती है । इस अवसर में यदि फिर प्रचोदना से वनीऊँ अर्थान्तरस्मरण वृत्तिका अभ्युदय होय तो वह प्रतिक्रिया भट अभिभूत हो जाता है, औ वाग्बुद्धि की पुनः प्रवृत्ति होती है । इस हीको सप्रतिसंहार निर्गमनके कारण करके जानना । औ जब उस भान्ति स्मरणवृत्ति वनने में विलम्ब होता है तब सविराम निर्गमनका कारण स्वरूप हो जाता है ।

मानो, पुछनेहाराने जिज्ञासा करी जो “कीदृशात् किं ग्राह्यम् ?” (किस भान्तिसे—किस भान्ति व्यक्तिसे क्या लेना चाहिये) अब अप्रति-संहार की रीतिसे पुछा ऊँचा अर्थसमूहके मध्य में केवल दो “किम्” शब्दके अर्थ की (जिस भान्ति व्यक्तिसे औ जो कुछ लेना चाहिये) अन्वेषणवृत्ति बनकर औ उस रीतिसे “भावकात्” निष्पन्न होकर धनिष्ठ सम्बन्धीके अर्थका प्रकाश होनेसे स्वभाव-स्थापिका क्रिया करके वाग्बुद्धि अभिभूत ऊँच, इस अवसर में भट प्रचोदनासे वनी ऊँचा “भाव” अर्थ की स्मरणवृत्ति वनी, सुतरां तनिक विलम्बके अनन्तर फिर वाग्बुद्धि होकर “भावः” इस शब्द को निष्पादन किया ।

यहां भी अप्रतिसंहारके तरह सन्धि होनेको अवस्थान्धाविता देख पड़ती है । सप्रतिसंहार-निर्गमन में, वाग्बुद्धि एक शब्दको निष्पादन कर इस

काल विश्राम करे, सेहै अवकाशे एक अर्द्ध-मात्रा कालेन पूर्णता हय ना एवम् सेहै अत्यन्त कालेन परेहै शब्दांतरेन निष्पत्ति हय । ए निमित्त सप्रतिसंहारे निर्गत शब्देन अन्ते ये कोन वर्ण धाके ताहार काहारहै सुपरिष्कृत उच्चारण हईते पावेन अत्रां तथन अप्रतिसंहारेन गाय सक्ति कार्येन सञ्जावना हय । “भावकाद्भावः” एहले वक्तृ वाग्बुद्धि “भावका” एहै शब्दके निष्पन्न करतः अन्तर्हित “९”कारेन उद्गोपनान्ते पूर्ण अर्द्ध मात्रा काल अतीत करे नाहै, ए निमित्त “२” कारेन परिष्कृत उच्चारण ना हईया “भ” एन सहित घनीभावे “दू” कारेन उच्चारण हईया पड़े । द्वैत शून्य लक्ष्य करिया व्याकरण प्रथम वर्णन शाने तृतीय वर्ण हँयार विधान करियाछेन । सेहै जग एहै सक्ति कार्य बह प्रकारे विभक्त, एवम् सकल प्रकार सक्ति कार्यहै शब्दावायगी । सक्तिकालीन शब्दाव जनित वादश उच्चारण हय, ताहार नाम सक्ति-कार्य । कोन प्रकार सक्तिकार्यहै शब्दावके उल्लङ्घन करे ना । “भावकाद्भावः” एहै श्ले “ध” “न” प्रभृति अन्तर्वर्ण ना हईया “द” हईल केन ? एवम् “भावका” किं ? एहलेहै वा “दू” कारेन उच्चारण ना हईया “९” कारेन उच्चारण हईल केन ? “भावकाच्छास्त्रः” एहलेहै वा “८” कारेन उच्चारण केन हईल ? इत्यादि विमयेन भूरि भूरि कारण आछे एवम् अन्त प्रकार अरसक्ति वंश नक्षत्रे विशेष विशेष हेतुवाद आछे । फलतः धर्म प्रचारकेन शानाभाव वशतः संक्षेपे लिखित हईल ।

सविराम निर्गमने अन्तर्हित वर्णन पूर्ण उच्चारण कालहै धाके, एजन्त तथन सक्ति सञ्जावना हय ना । अत्रां सक्तिकार्येन सञ्जाव नाहै । यथा भावका—भावः॥”

एहैकण समासविषये ७ अति संक्षेपे किञ्चित् बला आवश्यक बोध हईतेछे । द्विपदेन वा बहुपदेन अर्थ संक्षेपवशतः संक्षिप्त अवस्थाके समास बले । समास हईले सेहै समस्त पदेन विभक्ति उच्चारण हय ना । वक्तृ वाग्बुद्धिहै समास हई वार कारण । वाङ्मनिष्पत्तिर अध्यवसायेन पूर्वे आदौ वक्तृ मन प्रकाशयिमान अर्थ विषये

भान्ति तनिक विश्राम कर लेती है, जो उस अवकाश काल में एक अर्द्धमात्रा काल की भी पूर्णता नहीं होती औ उस अत्यल्प ही कालके अनन्तर दूसरा शब्दकी निष्पत्ति होती है । इसलिये सप्रतिसंहार में निकला ऊँचा शब्दके अन्त में जो कोई वर्ण रहे, उसका सुपरिष्कृत उच्चारण नहीं हो सकता है, सुतरां उस समय अप्रतिसंहारके न्याय सन्धिकी सम्भावना होती है । “भावकाद्भावः” यहां वक्ता की वाग्बुद्धि “भावकात्” इस शब्दकी निष्पादन करके अन्तस्थ “त्” का उत्पादनानन्तर पूरी अर्द्धमात्रा काल भी व्यतीत न किया इस लिये “त्” कारका परिष्कृत उच्चारण न होकर “भ” के साथ घनी भावके हेतु “दू” का उच्चारण होगया । इतना लक्ष्य करके व्याकरणकी रचना काल में प्रथम वर्णके स्थान में तृतीय वर्ण स्थिर ऊँचा । इस लिये सन्धिक्रिया नाना भान्ति में विभक्त है, औ सारी सन्धि क्रियायें स्वभावके नियमानुसार होती हैं । सन्धिके समय स्वभाव से जैसा उच्चारण होता है, उसही का नाम सन्धिक्रिया । किस ही भान्ति सन्धिक्रिया स्वभावक अतिक्रम न करती है । “भावकाद्भाव” यहां “ध” “न” आदि अन्य वर्णके बदले “दू” क्यों ऊँचा ? औ “भावकात् किम्” यहां “दू” का उच्चारण न होकर क्यों “त्” का उच्चारण ऊँचा ? “भावकाच्छास्त्रः”, यहां क्यों वक्ता उच्चारण ऊँचा ? इस भान्ति विषयोंके भूरि भूरि हेतु है औ इसी स्वर सन्धि औ व्यञ्जन सन्धि में विशेष हेतुवाद है । फलतः धर्मप्रचारक स्थानाभाव करके औ विस्तार न किया गया ।

सविराम निर्गमनके अन्तर्हित वर्णोच्चारणका पूर्ण काल ही रहता है, इस लिये वहां सन्धि की सम्भावना नहीं । सुतरां सन्धिकार्य भी नहीं होनेवाला है । जैसा “भावकात्—भावः” ।

अब समासके विषय पर भी अति संक्षेपसे कुछ कहना आवश्यक बोध होता है । द्विपद अथवा बहुपदके अर्थ संक्षेपसे बनी ऊँच संक्षिप्त अवस्थाका नाम समास । समास होजानेपर उन समस्त पद की विभक्तिका उच्चारण नहीं होता है । वक्ता की वाग्बुद्धि ही समास होनेका कारण है । वाङ्मनिष्पत्तिके अध्यवसायके पहले ही प्रथमावस्था में

স্মরণ রুত্তি জন্মিয়া থাকে। সম্বন্ধী বিষয়ক জ্ঞানই স্মরণ জ্ঞানের প্রধান কারণ। সম্বন্ধী অর্থের জ্ঞান হইলেই পরকণে অপর সম্বন্ধীর স্মরণ হয়। সেই সম্বন্ধ নানা প্রকার। কোন স্থলে পরম মিত্রতা সম্বন্ধ, কোন স্থলে পরম বৈরভাব, কোথাও অবিচ্ছিন্ন সাহচর্য্য, কোন স্থানে পরম প্রণয়, কোন স্থানে অত্যন্ত অভেদ, কুত্রাপি একজাতীয়ত্ব, কোথাও ভগ্ন-জনকত্ব, কুত্রচিৎ ভোগ্য-ভোক্তৃত্ব, কুত্রচিৎ স্বত্ব স্বামিত্ব ইত্যাদি। যথা, কৃষ্ণার্জুন অহিনকুল, রাম লক্ষ্মণ, বশিষ্ঠারুন্ধতী, নীলোৎপল, স্বর্ণরৌপ্য, রাজপুত্র, ব্রাহ্মণান্ন, বিপ্রবিত্ত ইত্যাদি স্থলে যখন কৃষ্ণাদি সম্বন্ধীর জ্ঞান হইয়া অপর সম্বন্ধী অর্জুনাতির স্মরণ হয়, তখনই সমাস হইবার সম্ভাবনা হয়।

সমাস স্থলে উক্ত স্মরণ রুত্তি এমত শীঘ্র উদ্ভিত হয় যে তদবকাশে আর জ্ঞানান্তর জন্মিতে পারে না। সুতরাং সমাস স্থলীয় সকল গুলি পদার্থেরই সূচী দ্বারা পত্রস্তর বেধন ক্রিয়ার ন্যায় দূরবগম্য বিচ্ছেদ একটীজ্ঞান ক্রিয়া জন্মে। এ নিমিত্ত তদবকাশে উক্তবিধ জ্ঞান দ্বারা “সমস্ত * পদার্থ” গুলির ক্রিয়ার যে সম্বন্ধ থাকে সেই সম্বন্ধ, কিম্বা ক্রিয়া ভিন্ন কোন বস্তুর সহিত, “সমস্ত পদ” সমূহের সকল পদার্থের সম্বন্ধ সম্ভবপর থাকিলে সেই সম্বন্ধ আভাসিত হয় না। সকল “সমস্ত পদার্থের” জ্ঞানের পরই উক্ত উভয়বিধ সম্বন্ধের জ্ঞান হয়; কিন্তু প্ররোগকর্তার প্রয়োগের হেতুভূত সমস্ত পদার্থের পরস্পর যে সম্বন্ধ তাহার আভাস হয়, অথচ উহা সেই সেই পদার্থের নিয়ত ধর্ম্মের ন্যায় তাহার সহিতই আভাসমান হয়, পৃথগ্ভাবে হয় না। বাগ্‌রুত্তিও পূর্বতন জ্ঞানরুত্তির অধীনা। যে কোন বস্তু পূর্বকণে জ্ঞানার্থীকৃত হয়, তাহাই বাগ্‌রুত্তি দ্বারা প্রকাশিত হয়। এজন্য “সমস্ত পদার্থ” সমূহের উক্তবিধ সম্বন্ধের জ্ঞান না হওয়ায় তাহার ব্যঞ্জিকা বিভক্তির উচ্চারণ হইতে পারে না।

অতএব বক্তা দ্বিতীয় কোন ব্যক্তিকে কৃষ্ণা-র্জুনাতি বিষয়ক কোন কথা প্রতিপাদন করিতে যত্নবান হইলে কৃষ্ণাদিপদের বিভক্তির উচ্চারণ না হইয়া “কৃষ্ণশ্চ অর্জুনশ্চ কথাঃ শৃণু” (কৃষ্ণের অর্জুনের কথা শুন) এইরূপ হইবে। কিন্তু

বক্তাকে মনে সেই অর্থ বিপথ্য কী স্মরণরুত্তি জন্মণী হইে जिसको प्रकाश करना अभिप्राय है। सम्बन्धी विषयक जो ज्ञान है, वही स्मरण ज्ञानका प्रधान कारण है। सम्बन्धी अर्थके ज्ञान होने ही भट दूसरा सम्बन्धीका स्मरण होता है। वह सम्बन्ध नाना भान्तिका है। कहीं परम मित्तरूप सम्बन्ध, किस ही स्थान में वैरभाव, कहीं अविच्छिन्न साहचर्य, कहीं परम प्रणय, कहीं अत्यन्त अभेद, कहीं एकजातीयत्व, कहीं अन्य जनकत्व, कहीं भोग्य भोक्तृत्व, कहीं स्वत्व स्वामित्व इत्यादि। जैसा कि कृष्णार्जुन, अहिनकुल, रामलक्ष्मण, वशिष्ठारुन्धती, नीलोत्पल, स्वर्णरौप्य, राजपुत्र, ब्राह्मणान्न, विप्रवित्त इत्यादि स्थल में जब कृष्णादि सम्बन्धी ज्ञान उपजकर अपरसम्बन्धी अर्जुनादिको स्मरण होता है, तब ही समास होने की सम्भावना है।

समासके स्थल में उक्त स्मरणरुत्ति इतना शीघ्र उदय होती है, जो तदवकाशकाल में दूसरा ज्ञान नहीं उदय हो सक्ता है। सुतरां समासस्थलके हरेक पदार्थ की ऐसी एक ज्ञानक्रिया जनमती है, जिसका विच्छेद काल समझना बल्लिका बाहर है, औ सूँहीसे उपरे उपर रखेऊँ पत्तायोंको बिंधने समान बोध होता है। इस लिये तदवकाश में उक्त भान्ति ज्ञान करके “समस्त * पदार्थों की क्रियाका जो सम्बन्ध रहता है, वही सम्बन्ध, अथवा क्रिया छोड़के अन्यवस्तुके साथ, “समस्त पद” समूहका सम्बन्ध सम्भव होनेपर उस सम्बन्धका आभासना लीया जाती है। सब “समस्त पदार्थ”के ज्ञानके अनन्तरही उक्त उभयविध सम्बन्धका ज्ञान होता है; किन्तु प्रयोगकर्त्ताके प्रयोगके हेतुभूत “समस्त पदार्थ” का परस्पर जो सम्बन्ध है, उसी की आभासना होती है, अथवा वह उन पदार्थके नियत धर्मके न्याय उसीके साथ आभासमान हैं, पृथक रीतिसी नहीं होता है। वाग्वृत्ति भी पूर्वतन ज्ञानरुत्तिका अधीना है। जो कोई वस्तु पहले ज्ञानार्थीकृत होता है, वाग्वृत्ति उसीको प्रकाशकर देती है। इसलिये “समस्त पदार्थ” समूहके उक्त भान्ति ज्ञान ऊँ विना, व्यञ्जिका विभक्तिका उच्चारण नहीं हो सक्ता है।

अतएव वक्ता यदि दूसरा किसीको “कृष्णा-

* ये पदोंर समास हय ताँहाके “समस्त पद” बने।

* जिस पदका समास होता है, उसीका नाम समस्तपद।

“कृष्णञ्च” (कृष्ण) आर “अर्जुनञ्च” (अर्जु-
नेर) “ञ्च” (एर) उच्चारित ना हईया
“कृष्णार्जुन कथां शृणु” (कृष्णार्जुन कथांशुन) एई
प्रकार हईया पड़े।

ए प्रकारे पदार्थेर संक्षेप हईया पदेर
संक्षेप नामक समास हय। एईरूप सर्वत्र।
प्रेमश वाक् श्रुताव जात समासेर आकार प्रतिपाद-
नेर निमित्त व्याकरण विविध सूत्र गान करियाछेन।
अधिक विस्तारेर प्रयोजन नाई।

निरुक्त शास्त्र। ईहा एक प्रकार
अभिधान विशेष। भगवान् यास्क महर्षि ईहार
प्रणेता। ईहा द्वारा वेदोक्त शब्द सकलेर
अर्थेर निर्णय करा हईयाछे। श्रुत्युक्त शब्दार्थेर
निर्वाचन करा हेतु ईहार नाम “निरुक्त”। एज्ज
ईहा वेददेर अङ्ग, एवं त्रिविध भाषा विज्ञानेर फल
विज्ञानेर अङ्ग विशेष। निरुक्त शास्त्र द्वारा भाषा
आकृति मात्र अद्वयत हईया गय। ईहार “हेतु-
विज्ञान” प्रकृति ओ दर्शन शास्त्रे आछे; तत्तावविवरण
“शशधर वाग्निज्ञाने” विस्तारित हईयाछे॥

क्रमशः।

शिशुर प्रकृति गठन।

ये दिन हईते गर्भकोमे प्राणीर सञ्चार हय
सेई दिन हईतेई शारीरतत्त्वविद् चिकित्सक ओ
धर्मतत्त्ववेत्ता महाआगणेर परामर्शानुसारे जन-
नोके नानाविध नियमेर अधीन हईया থাকिते हय।
भोजन, भ्रमण आदि समस्त व्यापारई विशेष विशेष
नियमानुसारे ना करिले गर्भिणी ओ गर्भस्थ शिशुर
अनिष्ट हईया থাকे। ये सकल स्थाने থাকिले,
ये सकल विषय वा वस्तु वा व्यापार दर्शन करिले,
ये सकल शब्द श्रवण करिले, येरूप विषय सम्बन्धे
वाचनिक व्याख्या करिले, ये सकल वस्तु सम्पर्क
करिले, एवं ये सकल पदार्थेर आश्रय ग्रहण
करिले शरीर कम्पित ओ लोमाश्रित, शारीर
यन्त्रादि आकुक्षित वा आन्दोलित, मनभीत,
विस्मित, चिन्तित, अभिभूत, वा आश्रय विन्मृत हईया

जुन” आदि आशयपर कोइ बात प्रतिपादन करने
कहे, तो ज्ञाणादि पदकी विभक्तिका उच्चारण न
होकर “ज्ञाणस्य अर्जुनस्य कथां शृणु” (ज्ञाण की
अर्जुन की कथा श्रुनो) ऐसा होगा। किन्तु यहां
“ज्ञाणस्य” (ज्ञाणकी) औ “अर्जुनस्य” (अर्जुनकी)
यह “स्य” (की) का उच्चारण न होकर “ज्ञाणा-
र्जुनकथां शृणु” (ज्ञाणार्जुन की कथा श्रुनो)
ऐसा होजायगा।

इस रीतिसे पदार्थका संक्षेप होनेपर पदके
संक्षेप नाम समास होता है। ऐसा ही सर्वत्र
जानना। इस भान्ति वाक्स्वभावसे बनता ऊँचा
समासके रूप प्रतिपादनके अर्थ व्याकरण में नाना
सूत्र की व्याख्या को ऊँड़ है; अधिक फैलाने में
प्रयोजन नहीं।

निरुक्त शास्त्र। यह एक भान्तिका कोष
है। भगवान् यास्कका बनाया ऊँचा है। इसकी
सहायतासे वेदोक्त शब्दोंके अर्थ निरूपण किया
गया है। श्रुत्युक्त शब्दार्थोंके निर्वाचनके हेतु इसका
“निरुक्त” नाम ऊँचा। इस लिये यह वेदका
अङ्ग है औ त्रिविध भाषाविज्ञानके फल विज्ञानका
अङ्ग है। निरुक्त शास्त्रसे केवल भाषाका अवयव
जाना जाता है। इसका “हेतु विज्ञान” श्रुति औ
दर्शनशास्त्र में है। विस्तारित विवरण “शशधर-
वाग्निज्ञान” में प्रगट कियाऊँचा है। शेष आगे।

शिशुकी प्रकृति निर्माण।

जिसदिनसे गर्भकोष में प्राणीका सञ्चार होता
है उसी दिनसे जननीकी शारीरतत्त्ववित् चिकि-
त्सकोंके औ धर्मतत्त्ववेत्ता महाआत्माओंके परामर्श-
नुसार विविध नियमके अधीन रहना पड़ती है।
भोजन, भ्रमण आदि समस्त कार्य ही विशेष
विशेष नियम अनुसार न करनेसे गर्भिणी औ
गर्भस्थ शिशुका अनिष्ट होता है। जिस जिस स्थान
मे रहनेसे, जिस जिस विषय वा वस्तु, वा व्यापार
दरशन करनेसे जिन सब शब्द श्रवण करनेसे,
जिस भान्ति प्रबन्धके आशयपर वाचनिक व्याख्यान
करनेसे जिन सब वस्तुको स्पर्श करनेसे औ जिन
सब पदार्थोंकी आश्रय लेनेसे शरीर कम्पित
औ रोमाश्रित, शारीरयन्त्र आदि आकुक्षित वा

থাকে, জননীকে এভাবে হইতে সর্বদা স্মৃতি ও সাবধান থাকিতে হয়। সর্বদা বিকট মূর্তিদর্শন, উৎকট চিন্তা বা বিষয় অনুশীলন প্রভৃতি জন্য যে কতশত জননীকে শোকসন্তপ্ত ও কাতর হইতে হইয়াছে তাহা বোধ হয় তত্ত্ববেত্তাবর্গের অবিদিত নাই। পুরুষাপেক্ষা স্ত্রীজাতির ভাবিকা * বা ভাব গ্রাহিকা শক্তির অধিক প্রবলতা অথবা উহারা উক্ত উপাদানেই গঠিত বলিলেই হয়। শারীরিক ইন্দ্রিয়াদি এবং মানসিক বৃত্তি সকল অত্যন্ত আগ্রহ পূর্বক যে সকল বিষয়ের গ্রহণ বা ধারণা করিতে থাকে, জীবের প্রকৃতি তদনুসারিণী দশা প্রাপ্ত হয় সুতরাং ভাবিকা শক্তি প্রধানা রমণীগণ কস্মেন্দ্রিয়, জ্ঞানেন্দ্রিয় বা মনোবৃত্তি দ্বারা যে সকল ব্যাপার ধারণা করিবেন, তাহাদের প্রকৃতি এবং অগত্যা গর্ভস্থ শিশুর প্রকৃতি তদনুসারিণী হইয়া যাইবে, এই জন্যই তত্ত্ববেত্তা মহোদয়গণ গর্ভিণীকে সর্বদা সাবধান থাকিতে আদেশ ও উপদেশ দিয়াছেন। প্রকৃতিতত্ত্ব মহাত্মাগণই এতদ্ব্যবহারের অবস্থা বশ্যকতা ও সারবত্তা অনুভব করিতে পারেন। স্নেহময়ী জননী অতিক্রমে যথাশাস্ত্র কঠোর ব্রত উদ্যাপন পূর্বক নিয়মিত কালে সন্তান প্রসব করিয়াই অবকাশ পাইলেন না; শিশু যতদিন তাঁহার স্তন্য পান করিবে, যতদিন তাঁহার প্রকৃতি অনুসরণ ও যতদিন তাঁহার আদেশ ও উপদেশানুসারে আপনার প্রকৃতি সংগঠন করিতে থাকিবে, ও যতদিন তাঁহার আদর্শ, শিশুর জীবিত কালের সম্পূর্ণ না হউক আংশিক আদর্শ স্থলও রচনা করিবে, জননী যদি স্বরূপতঃ শিশুর কল্যাণ কামনা করেন, তবে ততদিন তাঁহাকে অতীব সাবধানে জীবনোতিপাত করিতে হইবে।

হা! বর্তমান ভারতবর্ষের কি বিড়ম্বনাই উপস্থিত হইয়াছে। শিশু সূতিকাগৃহকে স্ত্রীশোভিত করিবারাত্রই যে বাহ্য জগতের কতশত প্রকৃতি সেই নিঃসহায় কোমল প্রকৃতির উপর আধিপত্য

* যে শক্তি দ্বারা অল্প বস্তুয়ের যথাযথ ধারণা করিতে পারা যায়।

আন্দোলিত, মন ভীত, বিক্লিত, চিন্তিত, অবি-
ভূত ও আত্মবিচ্ছিন্ন হইয়াছে, জননীকে ইন
সবসে সর্বদা দূর ও সাবধান রাখনা পড়তি
হে। বোধ হইতেছে, তত্ত্ববেত্তাओंকে যাহ অবিদিত
নহা, জা সর্বদা বিকট মূর্তিকে দর্শনসে, উৎকট
চিন্তা বা বিষয় কী স্বপ্না আদিसे कितनी
জননীকে शोकसन्ताप औ दुःख भोगने हो भी
पड़ा। पुरुषसे स्त्रीजाति की भाविका * वा भाव-
ग्राहिका शक्ति की अधिक प्रबलता है अथवा वे
उक्त उपादान हीसे बनी हुई है, मान लेना शारी-
रिक इन्द्रियादि औ मन की वृत्तियें अत्यन्त
आग्रह पूर्वक जिन सब विषयों की धारणा वा
ग्रहण किये करते हैं, जीवकी प्रकृति तदनुसारिणी
दशाको प्राप्त होती है सुतरां रमणीगण, जिन्हो
की भाविका शक्तिप्रधान है, कस्मेन्द्रिय, ज्ञाने-
न्द्रिय वा मनोवृत्तिसे जितने व्यापारोंको धारणा
करेङ्गी उन्हीं की प्रकृति औ अगत्या गर्भस्थ शिशु
की प्रकृति उस भान्ति भावको प्राप्त होजायगी
इसलिये तत्त्वज्ञ महोदयगण गर्भिणीको सর্বदा
सावधान रहनेके अर्थ आदेश औ उपदेश किये हैं।
प्रकृति-तत्त्वज्ञ महात्मागण ही इन सबकी अवस्था-
वश्यकता औ सारवत्ताको अनुभव कर सकते हैं।
स्नेहमयी जननी अतीव कष्टसह कर शास्त्रविधिके
अनुसार कठोर ब्रत उद्यापनपूर्वक सन्तानको केवल
प्रसव कर अवकाश न पाइ; शिशु जबतक उनका
स्तनके दूध पीता रहेगा, जबतक उनकी प्रकृतिका
अनुसरण औ जबतक उनके आदेश औ उपदेशके
अनुसार शिशु निज प्रकृतिका निर्माण करता
रहेगा औ जबतक शिशु जीवित कालके सम्पूर्णरूप
न हो, आंशिक आदर्श स्थल भी रहेगा, यदि
जननी यथार्थ में शिशुका कल्याण चाहे तो तबतक
उनको उचित है अतीव सावधानतासे जीवनको
व्यतीत करें।

हा! वर्तमान भारतवर्ष की क्या दुर्दशा आ
पड़ी है। शिशु जब ही सुतिका गृहको शुशोभित
करता है उसी समय जो बाह्य जगत की कितनी
प्रकृति उस निःसहाय कोमल प्रकृति पर आधिपत्य

* जिस शक्ति करके व्यक्त वस्तु की यथाविधि धारण
की जा सकती है।

करिंते आरंभ करिं ७ ताहार चरम फल किरूप हईवे ताहा कृणजन्तु ७ आर पिता माता चिन्ता करि-
वार जन्तु मस्तिष्क आलोड़न करिंते छाहेन ना ।
ये शुभकृण हईतेई शिशुर चक्षु कर्ण नासादि
इन्द्रियगण कार्यक्षेत्रे अवतरण करे अथवा बाह्य
रुग ७ ये कृण हईतेई शिशुर लीला भूमि हईया
उठे, सेई समय हईते परम यत्नेर सांग्रणी
शिशुके स्रसंगठित करिंवार जन्तु पिता माताके
कायमनोवाक्ये यत्न करिंते हईवे । बाहाते
शरीरेर पुष्टि, आयुर रुद्धि, रुदयेर प्रशस्तता,
मनेर उच्च भावेर बिकाश, मस्तिष्केर गतीर चिन्ता-
शीलतादि गुणेर यथोचित उत्कर्ष साधन हईते
पारे, तद्रूप आहारिय वस्तु, तद्रूप ज्ञाणेर
मानग्री, तद्रूप श्रोतव्य विषय, द्रष्टव्य पदार्थ,
एवं लेपनादि स्पर्शनीय द्रव्य ताहार समुत्थे उप-
स्थित करा कर्तव्य । एई प्रकृति स्फुरणेर अक्षुर
काल हईतेई अत्यन्त अवहितचित्ते ताहार शुश्रूषा
करिंते हईवे । सहायवस्तु किरूमात्र नूनता ७
कृटी हईले शिशुप्रकृति विकृत ७ अति कदर्य
दशाग्रन्तु हईया कालसहकारे जनक जननीर
विविध दुःखेर प्रधान हेतु ७ समाजेर घोर
आवर्जना तुल्य हईया पड़वे ।

आमरा मर्राचर देखिंते पाई, ये वे पर्याप्त
शिशु प्रापुवयस्क ना हय तावकाल पिता माता
गृहकार्य सौकार्यार्थे अथवा शिशुर सर्वदा तदा-
वधान करिंवार जन्तु शिशुदिगके दास दासीर निकट
रक्का करेन । भारतवर्षीय दास दासीगण ये सक-
लेई अशिक्षित, मूर्ख, ७ स्थूल बुद्धि ताहा बोध करिं
काहारई अविदित नाई । ताहादेर सहायेर मध्ये
एकजन ७ अनातिमार्गेर कोन समुत्साह अवगत
आछे किना ताहा ७ सम्पूर्ण सन्देह स्थल । वरं
ताहादेर मध्ये अनेकेर चरित्र दूषित, आचार व्या-
हार कदर्य ७ अननुकरणीय, भावा असाधु, भाव
अतीव कलुषित एवं प्रकृति नीच । तावीवशधर-
गणेर अदृश कोमल प्रकृतिदर्पणे यदि दास दासी-
गणेर मलिन प्रकृतिर प्रतिकृति एकवार अक्षित

करना आरम्भ करती है ओ उसका परिणाम
क्या होगा, पिता, माता पिर इस विषय की
चिन्ताके लिये तनिक भी मस्तिष्कको परिश्रम
कराने नहीं चाहते हैं जिस शुभकृण हीसे शिशुके
चक्षु, कर्ण, नासा आदि इन्द्रियगण कार्यक्षेत्र में
अवतरण करते हैं अथवा बाह्य जगत जिस जग
हीसे शिशुकी लीलाभूमि हो उठती है, उसी
समयसे शिशुको, जो परम यत्नकी सामग्री है, सुसं-
गठित करनार्थ पिता माताको कायमन वचनसे यत्न
करना चाहिये । जिस में शरीर की पुष्टी, आयु
की वृद्धि, हृदय की प्रशस्तता, मनके उच्च भावका
विकास, मस्तिष्क की गम्भीर चिन्ताशीलता आदि
गुणका यथोचित उत्कर्ष साधन हो सके, उसके
योग्य भोजन द्रव्य, उसके योग्य प्राणके सामग्री,
उसके योग्य श्रोतव्य विषय, द्रष्टव्य पदार्थ, औ अक्षु
लेप आदि स्पर्शनीय उसके सामने लाना चाहिये ।
इस तरहसे प्रवृत्ति स्फुरण की प्रथमावस्थाहिसे
अत्यन्त दत्तचित्त होकर उसीकी शुश्रूषा करना
चाहिये । सहायवस्था की कुछ न्यूनता औ लुटी
होने पर भी शिशु की प्रकृति विज्ञत औ अत्यन्त
कदर्य दयाग्रस्त होकर कालसहकार जनक, जन-
नीके नाना भान्ति दुःखका प्रधान हेतु औ
समाजका भयङ्कर आवर्जन तुल्य बनेगा ।

हम सबको सचराचर यह देखने में आता है,
जो जबतक शिशु की अवस्था अधिक न हो तावत
काल पिता, माता, गृहकार्य की सुविहिताके अर्थ
अथवा सर्वदा तत्वावधानके लिये शिशुओंको दास
दासीके निकट रख देते हैं । भारतवर्षीय दास
दासीगण जो नितान्त अशिक्षित, मूर्ख औ स्थूल
बुद्धि हैं सो बोध होता है किसीका अविदित नहीं,
सहस्र ऐसे दास, दासियोंके मध्य में एकजन भी
सुनीतिमार्गका कोई सुसमाचार जानता है, या
नहीं, सो भी सम्पूर्ण सन्देहस्थल है, वरं उन में वज्र-
तेरेका चरित दूषित, आचार व्यवहार कदर्य औ
अनुकरणका अयोग्य, भाषा असाधु, भाव अनीव
दूषित औ प्रकृति अत्यन्त नीच है । भविष्यत्
वंशधरगण की इस भान्ति-कोमल प्रकृतिरूप
दर्पण में यदि दास दासियों की मलिनप्रकृति की
प्रतिकृति एकवार अक्षित हो जाय तो उसको अप-
नयन करना जो कष्टांतक दुःसाध्य होता है सो बोध

है। या तो वह अपनयन करा वे कतदूर दुःसाध्य है। या तो वह बोध करि अनेक पिता माता निज निज जीवने प्रताप्य करिया थाकिवेन । नीच संश्रव वंशतः अनेक बालककेई अनुच्छाया असाधु भाग्य गानिवर्षण करिते देखिते पाँया याय ; रीतिनीति, कार्या कलाप कतक परिमाणे निम्न श्रेणीय कदाचारिगणेर सदृश है। बालक-वर्ग विद्यालये प्रवेश करिले ताहादिगके शिको-चारी ओ धीर करिवार जग्य शिक्षकके बहल परि-श्रम ओ यत्न करिते हय, हयतो कोन कोन बाल-केर बाल्य संश्रव दोये मनःप्रकृति एरूप मलिन ओ अनाविष्ट है। याय ये शिक्षक कोन क्रमेई ताहाके सरल ओ सुनीति अथेर पथिक करिते पाऐरन ना । पिता मातादि गुरुगणेर अग्र्य ओ अनवधानताई एई गुरुतर दोयेर सत्-पात करिया देय । असं बालकवर्गेर सङ्ग करिते ओ नीच श्रेणीर लोकदिगेर सङ्ग थाकिवार अनु-मति वा प्रश्रय दान करिले शिशु प्रकृतिते भवि-मां जीवनेर छरपनेर दूषित भावेर उपादान सङ्गित है। सन्तानगणके छुटे पूटे शरीर, असज्जित, ओ विश्वविद्यालयेर उपाधिवारी करिवार जग्य पिता मातागणके यत यत्नशील देखिते पाँया याय ; ताहादिगके मकरिद्व, निर्मल प्रकृति ओ सदाशय करिवार जग्य तादृश आकिधन दूष्ट हय ना । वर्तमान भारतीय जनक जननीगण भावी सामाजिक विप्लवेर विमग सोपान रचना करिते आरम्भ करियाछेन । विश्वविद्यालयेर वर्त-मान शिक्षा प्रणाली ताहार आवार गथेके पृष्ठ-पोषकता करितेछे ।

उपसंहार काले एतोक शिशु पिता माताेर निकटे आगादेर एई विशेष अग्रोष ये यदि ताँहारा अ अ सन्तानके प्रकृत रूप मेह करिया थाकेन, यदि ताँहारेर चिरदिन कुशल वाम करा ताँहारेर अतीते हय, यदि ताँहारेर गण-सौरभेर सङ्गे सङ्गे निज निज उल्लास वृद्धि है। वार आकाङ्क्षा करेन, यदि ताँहारेर गण-समाजभरण करिते ईछा पाके, एवं आध्यात्मिक विक्रमवले भौतिक विप्लव राशि विदूरित है। याय यदि ईहा ताँहारेर विश्वास थाके तवे ये दिन शिशु दुर्निष्ठ है। ये सेई दिन है। ताँहारेर प्रकृति

होता है बज्जतेरे पिता, माता निज र जीवन में प्रत्यक्ष किये होंगे । नीच जातिके सङ्ग करके बज्जतेरे बालकको यह देख पड़ता है जो वे अनु-स्मार्थ, औ असाधु भाषा में गाली वकते हैं ; रीति, नीति कार्यकलाप भी थोड़ा बज्जत निम्नश्रेणीय कदाचारियोंके बराबर हो जाते हैं । बालकवर्ग विद्यालय में प्रवेश करने पर उन्हींको शिष्टाचारी औ धीर करनेके अर्थ शिक्षकको बज्जत परिश्रम औ यत्न करना पड़ता है ; यह भी देखा जाता है कि बाल्यसंश्रवके दोषसे किसी किसी बालक की मनोप्रकृति इस भान्ति मलीन, औ अनाविष्ट हो जाती है जो शिक्षक कोसी उपायसे सरल औ सुनीति मार्गपर न ला सके हैं । पिता, माता आदि गुरुओंके अयत्न औ अनवधानता ही इस गुरुतर दोषका सूत्रपात कर देती हैं । असत् बालकोंके सङ्ग करने की औ नीचश्रेणीय लोगोंके सङ्ग में रहने की अनुमति वा प्रश्रय देनेसे शिशुप्रकृति में भविष्यत् जीवनके दुरपनय दूषित भावका उपादान सञ्चय होता रहता है । सन्तानोंको छष्ट पुष्ट शरीर, सुमज्जित औ विश्वविद्या-लयका उपाधिवारी करनेके अर्थ पिता, माताको जिस भान्ति यत्नशील देख पड़ता है उन्हींको सच्च-रित, निर्मल प्रकृति औ सदाशय बनानेके लिये उस भान्ति आकिञ्चन नहीं देख पड़ता है । वर्त्त-मान भारतीय जनक, जननीगण भविष्यत् सामाजिक विप्लवके विपम सोपानकी रचना करना आरम्भ करदिये हैं । विश्वविद्यालय की वर्त्तमान शिक्षा-प्रणाली फिर उस की यथेष्ट पृष्ठ पोषकता या सहायता कर रही है ।

उपसंहार काल में हर एक शिशुके पिता, माता के निकट हमारा यह विशेष अग्रोष है, जो यदि वे निज निज सन्तानको प्रत्यक्ष-स्नेह करते रहें, यदि लड़कोंके चिरदिन कुशल में रहना उनका अभीष्ट हो, यदि उन्हींके यगोसौरभके सङ्ग ही सङ्ग निज निज आनन्द वृद्धि की कामना करे, यदि उन्हींको समाज का शोभास्वरूप बनाने चाहे औ यदि यह विश्वास रहे कि आध्यात्मिक विक्रमके बलसे भौतिक विप्लव-राशी दूर होजाते है तब जिस दिन शिशु भूमिष्ठ होगा उसी दिनसे उस की प्रकृति सुन्दर

गर्भनेत्र जगत् सद्भावना करिते থাকুন। शिशुকে असती स्त्री वा दुरात्मा পুরুষের কোড়ে দিবেন না। কুনট, কদাচারিণী ও কুদৃষ্টিপরায়ণা কামিনীগণের নিকট শিশুকে কখনই রক্ষা করিবেন না। দুষ্ক বালক বালিকাগণের সঙ্গে মিত্রতা করিতে দিবেন না। নীচ শ্রেণীর লোকের সহবাস করিবার, ব্যভিচার ও কুৎসিত ক্রিয়া ক্ষেত্রে গমন করিবার প্রশংসা দিবেন না। প্রত্যহ সন্ধ্যাকালে তাহাদের নৈতিক উন্নতির পরীক্ষা ও শিক্ষাদান করিবেন। সুশীল সুবোধ বালকগণের সহিত যাহাতে সখ্যতা হয় তাহার যত্ন করিবেন। গৃহের দাস দাসীগণ শিশুর সমক্ষে কোন কদাচার ও কুৎসিত ভাষা প্রায়োগ না করে, তাহার ব্যবস্থা করিবেন। নীতিজ্ঞ মহাত্মাদিগের তত্ত্বাবধানে বালককে রক্ষা করিবেন। শিশুর মতো অনুরাগ, সংসাহস, সদাচারাদি দৃষ্ট হইলে তাহাকে উৎসাহ ও পুরস্কার দিবেন। নিজ শিশুর সঙ্গে সঙ্গে তাহার পল্লীস্থ সহচরবর্গেরও প্রকৃতি সংস্কার করিতে হইবে। আমরা সংক্ষেপে শিশুর প্রকৃতি গঠনের সঙ্কেত করিলাম, আশা করি পুত্রবৎসল সহৃদয়মাত্রেই এতদ্বিষয়ে মনোযোগী হইয়া জগতের কল্যাণ বৃদ্ধি করিবেন।

ধর্ম সাধন ।

(শ্রীযুক্ত বাবু অমোরনাথ ভট্টাচার্য্যের নিকট হইতে প্রাপ্ত ।)

সম্পাদক মহাশয়! আপনার সাধুজন মান্য “ধর্ম প্রচারকের” পাঠক মহাত্মাগণের পাঠার্থ নিম্ন-লিখিত কয়েক পংক্তি উক্ত পত্রের পাঠার্থে প্রকটন করিলে পরম সুখী হইব।

বিগত ৯ই আশ্বিন শনিবার অপরাহ্ন বেলা ৫ ঘটিকার সময় “ধর্ম প্রচারক” পত্র সম্পাদক মান্যবর শ্রীযুক্ত কুমার *শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন মহাশয়

* সর্বভাগী মহাত্মা অবধূতের প্রিয়শিষ্য শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন ভারতে সনাতন আধ্যাত্মের পুনরুদীপনা ও পুনর্গৌরব ঘোষণা করিবার তত্ত্ব আপনার জীবনকে উৎসর্গ করিয়াছেন এবং তজ্জড়ই অতীত কঠোর “চির কৌমার” ব্রত অবলম্বন পূর্বক স্বকর্তব্য সাধনে বথাবৎ প্রবৃত্ত হইয়াছেন। ধর্মার্থ বক্তাকে “বাবু” বলিয়া সম্মান দান করায় কোন গৌরব নাই বরং অমর্যাদাই হইয়া থাকে। তিনিও স্বয়ং উপাধিপ্রিয়

বনানেকে লিয়ে সহ্যবস্থা করতে रहें। शिशुको असती स्त्री वा दुरात्मा पुरुषके गोदपर नहीं देना। दुःशीला, कदाचारिणी और कुदृष्टियुक्त स्त्रियोंके निकट शिशुको कभी नहीं रखना। दुष्ट बालक बालिकागणके सङ्ग मित्रता करने ना देना। नीचश्रेणीके लोगोंके सहवास करनेका, व्यभिचार और निन्दित क्रियाक्षेत्र में जानेका प्रशंसा न देना। प्रतिदिन सन्ध्याकाल उन्हीं की नैतिक उन्नतिको परीक्षा लेना और शिक्षादान करना। और ऐसा यत्न करना कि जैसे सुशील और सुबोध बाल कैसे मित्रता बढ़े। इस भान्ति व्यवस्था कर देना कि गृहके दास, दासीगण शिशुके सान्हने, किसी भान्ति कदाचार न करे, और निन्दित भाषा न बोले। नीतिशास्त्रवेत्ता महात्माओंके तत्त्वावधान में बालकको रक्षा करना चाहिये। जब शिशुका सत्यानुराग, सत्साहस, सदाचार, आदि देख पड़ेगा तब उसको उत्साह और पुरस्कार देना चाहिये। निज शिशुके सङ्ग ही सङ्ग उसकेमहल्लेके सहचरों की प्रकृति संस्कार करना चाहिये। हमने संक्षेपसे शिशु की प्रकृति निर्माणाका इसारा किया, आशा करते हैं कि हर एक पुत्र-वत्सल सहृदय पुरुष इस विषय में दत्तचित्त होकर जगतका कल्याण दृष्टि करेंगे।

धर्मसाधन ।

(श्रीमान् बाबु अमोरनाथ भट्टाचार्य जीके निकटसे प्राप्त) ।

सम्पादक महाशय! आपके साधुजनमान्य धर्मप्रचारकके पाठक महात्माओंके पठनार्थ यदि निम्न लिखित कतिपय पङ्क्ति उक्त पत्रके एक किनारे में स्थान दीजिये तो मैं परम सुख मानुङ्गा।

आवणवदी त्रयोदश के दिन, शनिवार, पूवजेके समय “धर्मप्रचारक” पत्रके सम्पादक, परम माननीय श्रीमान् कुमार *श्रीकृष्ण प्रसन्न सैन जीने

* सर्वभोगी महात्मा अवधूतके प्रियशिष्य श्रीकृष्ण प्रसन्न जीने भारतवर्ष में सनातन आर्यधर्म की पुनरुदीपना और उसका गौरव फिर घोषणा करना निज जीवनको समर्पण किया है और तद्विनिमित्त अतीव कठोर “चिरकौमार” व्रत अवलम्बन पूर्वक निज कर्तव्य साधन में यथारोति प्रवृत्त हुए हैं। धर्मार्थ ब्रह्माको “बाबु” रूप उपाधि करके सम्मान देनेसे कुछ गौरव नहीं, बरं अमर्यादा ही देख पड़ती है। वे भी स्वर्ग

“धर्म साधन” सम्बन्धे जामालपुर हरिमठाय एकटी सुदीर्घ वाचनिक वक्तृता করেন। বক্তার প্রায় দুই ঘণ্টা কাল অবিশ্রান্ত বক্তৃতায় ভগবদ্ভক্ত ব্যক্তি মাঝেই বিশেষরূপে স্তম্ভী ও উৎসাহিত হইয়া ছিলেন। যাহাতে উৎসাহিত বা নবানুপ্রাণিত হইয়া সুশিক্ষিত ভারতবাসীগণ আধ্যাত্মিকের প্রকৃত তত্ত্ব-বগত হইয়া তাহাতে আত্মবান্ধ হইয়েন এবং তাঁহাদের পূর্ববংশীয় অর্থাৎ মহাত্মাগণের আচরিত ধর্ম পথে অগ্রসর হইতে পারেন, তাহাই বক্তার প্রধান উদ্দেশ্য। এই জন্য তিনি “ধর্ম সাধনের” মানব-প্রকৃতিগত আবশ্যকতা, তাহার ভিন্ন ভিন্ন পন্থা, তত্ত্বাবতের গুণ অভিপ্রায়, ধর্মই যে সক্ষমব্রহ্ম মানবগণের বিশ্রাম স্থান, এতাবৎ বৈজ্ঞানিক পদ্ধতি ক্রমে উদ্ভাব ও সরলভাবে ব্যাখ্যা করিলেন। প্রকৃতির অক্ষশোভা ভারতভূমির প্রাচীন শূর বীর শাস্ত্র স্তম্ভীর সন্তানগণের অন্তর্নিহিত সনাতন ধর্ম যে আবার নবীন উৎসাহ, বীর বিক্রমে ও বৈজ্ঞানিক বেশে বিচিত্র মূর্তিতে প্রচারিত হইবে, ইহা আমাদের আদৌ আশা ছিল না, যাহাউক বক্তার যেরূপ উদ্যম, উৎসাহ ও ধর্মোন্মত্ততা দৃষ্ট হইতেছে তাহাতে ভারতীয় প্রাচীন ধর্মের পুনর্নবোজ্জল মূর্তি দর্শনে বোধ করি আমাদের আশা সফল হইবে। ভগবান এই কৌমারব্রতী বক্তার হৃদয়ে ঐশী শক্তির সঞ্চার করুন এবং তাঁহাকে দীর্ঘজীবী করিয়া ভারতের গুরুতর কার্যে নিরন্তর নিযুক্ত রাখুন। বক্তার সারাংশ এই স্থানে প্রকাশ করিলাম।

মনুষ্যের চক্ষুরাদি ইন্দ্রিয়ের প্রকৃতির (চক্ষু-তাড়ি) দিকে দৃষ্টি নিরূপ করিলে এইরূপ প্রতীতি হয়, যে তাহারা যেন কোন বিশেষ লক্ষ্য পদার্থের অনুসরণ করিতেছে, কিন্তু কি উপায়ে ও কোথায় যে তাহা প্রাপ্ত হইবে তাহার কিছুই জানে না। কেবল অনুসন্ধানই ব্যস্ত; একবার একটা বস্তুকে অবলম্বন করিয়া মনে করিল, ইহাই বুঝি আমার অভিলষিত দ্রব্য, কিন্তু পরক্ষণেই আবার তাহাতে বীতরাগ হইয়া পরিত্যাগপূর্বক ব্যাকুলভাবে

নহেন; এই বিবেচনায় তাঁহার মিত্রগণ তাঁহার বভাবগত “কুমার” এই শাস্ত্রোক্ত উপাধি দান করিয়াছেন। তাঁহাকে কেহ “বাবু” বলেন ইহা তাঁহার নিতান্ত অভিপ্রায়-বিরুদ্ধ।

জামালপুর হরিসভা মেন্ ধর্মসাধন” ইহা আশ্রয়পর এক সুদীর্ঘ বাচনিক বক্তৃতা করি। প্রায় দুই ঘণ্টা কাল অবিশ্রান্ত বক্তৃতায়ে বক্তা মহাত্মানে ভগবদ্ভক্ত মাতৃহীকে মন মেন্ বিশেষরূপে সুখ ঐ উত্সাহকো বড়ায়ে। বক্তাকা প্রধান অভিপ্রায় যহীয়া কি অংরেজী মেন্ নবীন রীতিসে সুশিক্ষিত ভারতখন্ড-নিবাসিয়ো আর্থ্যধর্মকে প্রকৃততত্ত্ব জানকর এসপর আস্থা দেখাবে ঐর উনকে পূর্ববংশী আর্থ্য মহাত্মায়েকে আচরিত ধর্মমার্গ মেন্ আগুচা হো সকে। ইহালিয়ে বে ইন আশ্রয়পর বৈজ্ঞানিক রীতিসে উদার ঐ সরল ভাব করকে ব্যাখ্যা কিয়ে কি ধর্মসাধনকে মানব-প্রকৃতিগত ক্যা আবশ্যকতা হৈ, উসকো ভিন্ন ভিন্ন রাহ ক্যো ঐ কৈসে বনী, উন সবকা গুণ অভিপ্রায় ক্যা হৈ, ঐর স্বচ্ছবুদ্ধি মানবোকে লিয়ে ধর্ম হী একমাত্র বিশ্বাসস্থল হৈ। যহ হমলোগো কী কভী আশা ন থী জো সনাতন ধর্ম, জিসকো প্রকৃতি কী ক্রোধ-শোভা ভারতভূমিকে প্রাচীন শূরবীর, শান্ত, সুধীর সন্তানমণ্ডলী অনুষ্ঠান করতে গয়ে, ফির নবীন উত্সাহ, বীরবিক্রম ঐ বৈজ্ঞানিক বেশ করকে বিচিত্র মূর্তি লিয়ে উহ প্রচারিত হোগা, জো হী, বক্তাকে জিস ভান্টি, উদ্যম, উত্সাহ ঐ ধর্মোন্মত্ত-জনা দেখ পড়তি হৈ, উসসে বোধ হোতা হৈ কি ভারতীয় প্রাচীন ধর্ম কী পুনর্নবীন ঐ উজ্জ্বল মূর্তি দেখকর হম সব কী আশা সফল হোগী। অব যহী প্রার্থনা হৈ কি ভগবান ইহ কৌমারব্রতী বক্তাকে হৃদয় মেন্ এসী শক্তিকো ফেলাবে ঐ উনকো দীর্ঘমায়ু কর ভারতকে গুরুতর কার্য মেন্ নিরন্তর নিয়ত রখেন। বক্তৃতাকা সারাংশ মেন্ যহা প্রগট করতা হৈ।

মনুষ্যকে চক্ষুরাদি ইন্দ্রিয়কে প্রকৃতি (বস্তু-তাড়ি) কে আর দৃষ্টিক্ষেপ করনেসে এসী প্রতীতি হোতি হৈ, জো বে জৈসে কোদ বিশেষ লক্ষ্য পদার্থকা অনুসরণ কর রহে হৈ, কিন্তু কিস উপায়ে ঐ কহা জো উস দ্রব্যকো প্রাপ্ত হোক্তে সো উনকো মালুম নহী। কেবল অনুসন্ধান হী মেন্ ব্যস্ত হৈ; একবার কিসী বস্তুকো অবলম্বন করকে সমঝে কি যহী মেরা অভিলষিত দ্রব্য হৈ, কিন্তু ক্ষণে ফির এসপর বিরাগ পূর্বক পরিত্যাগ করকে ব্যাকুল হুএ ইধর

কোদ উপাধিকে আরে নহী হৈ, ইতনো বিবেচনাসে মিত্রগণ উনকে সম্ভাবাহুগত “কুমার” ইহ উপাধিক উপাধি দয়ে হৈ। উনকো কোদ “বাবু” করকে ফুকারে, যহ উনকা নিতান্ত অভিপ্রায় বিরুদ্ধ হৈ।

इतस्तुतः अन्वेषण करिते থাকे । सम्मुखे बाह्ये
देखे ताहाकेई व्याघ्रतार सहित ताहार लम्बा
सामग्रार समाचार जिज्ञासा करे, किन्तु के बलिया
दिबे ! सकलैई सेई अव्यय अन्वेषण करितेछे,
केह वा किष्किष्मात्र सन्धान पाहियाछे, केह वा
किछुई पाय नाई । घोर संसार मायाय मुक्त जीव
किछुतेई लम्बा लाभे समर्थ नहे—ताहाके जिज्ञासा
करियाई वा कि हईबे ; यन्मायाय बलिते पारि
लेओ ताहार कथाय विश्वास हय ना, कारण ताहादेर
बुद्धिओ कलुषित । ऐरूपे जीव स्वलक्ष्य सन्धाने
इतस्तुतः भ्रमण करिया शेये निवृत्त गुहावासी
ध्यानस्थितितनेत्र आदिदिगेर निकटे उपस्थित
हईया देखिल ताँहारा बाहेन्द्रियेर कार्यारोप
करिया निश्चय भावे बलिया आछेन । तथाय याई-
वामात्र ताँहादेर सेई अलौकिक मोनभावै
ताहाके बलिया दिल ये ईश्वराई यथार्थ अभीष्ट
वस्तु लाभ करियाछेन । ताँहादेर इन्द्रिय-चेष्टा-
चापला विदूरित हईया गियाछे । ताँहादेर निश्चय
भाव नीरव स्वरै ऐई कथा बलिया देय ये धीवर
येमन निज शक्ति द्वारा ज्ञान निष्केप ओ संहरण
करिया থাকे तद्रूप जगत्स्रक्ते केन्द्रातिग ओ
केन्द्रानुग शक्ति (Centrifugal एवं Centripetal
forces) द्वारा सृष्टि ओ संहार करितेछेन । उक्त
शक्तिद्वयेर मध्ये प्रथमटी सृष्टि ओ द्वितीयटी संहारेर
कारण । अनेके मन करिते पारेन धिनि मङ्गलमय
ओ संहार पालनशक्ति निता, तनि कि कथन अनिष्ट
वा नाश करिते पारेन, ताहा हईले ताँहार मङ्गल-
मय ओ पालनकर्ता नामे अनपनेय कलङ्केर सकार
हईबे । किन्तु संहरण शब्देर अर्थ (विनाश)
साधारणतः बाह्य प्रतीत हय ताहा नहे । सम्यक्
प्रकारे आहरण अर्थात् दूर निष्किण्ट जगज्जालके
आचार प्रेमार्कर्मण पूर्वक जेधरेर निज विशुद्ध
सहाय आनयन करार नाग संहार । ईहा कि प्रेम-
मय-मङ्गलमयेर अमाङ्गलिक अनुष्ठान ! ऐई केन्द्रा-
नुग शक्तिर प्रबलता जख जीव ये कार्यानुष्ठाने
प्रवृत्त वा उतेजित हईया থাকे, ताहारई नाग
“धर्म-साधन” । समस्त परमाणु ओ पारमाणविक
शक्तिई ऐई छई महतीशक्ति द्वारा परिचालित हई-
तेछे, अतएव कोन जीवके यथेच्छा पथे विचरण
करिते देखिले ताहाके निन्दा वा स्तुति करिते

उभर दुड़ते रहते हैं । सम्मुख में जिसको देख
पड़ता है उसीको व्यग्रतासे पुछते रहते हैं कि लक्ष्य
द्रव्यका पता वाताश्रय, किन्तु हा ! को वाताश्रय,
सबकोई उसी द्रव्यको दुड़ रहे हैं, कोइ किञ्चि-
न्मात्र सन्धान पाया, कोइ फिर कुछ भी नहीं
पाया है । घोर संसारमाया में मोहित हुए जीव
किस ही प्रकारसे लक्ष्य द्रव्यको नहीं पा सकता है ।
उसको पुछने हीसे फिर क्या होगा ! यदि थोड़ा
वृद्धत भी कह सके तो उसकी बातपर विश्वास
नहीं ठहरता है । क्योंकि उन सबकी बुद्धि भी
मलिन है । इस रीतिसे जीव निज लक्ष्यका सन्धान
करके इतस्ततः भ्रमण कर अनन्तर निवृत्त गुहा-
निवासी ध्यानस्थितितनेत्र आदिदियोंको निकट जा
पहुँचा और देखा कि वे वास्तव इन्द्रियोंके कार्य
रोक कर निश्चल भाव में विराज कर रहे हैं, वहाँ
पहुँचने ही उन्होंनेका अलौकिक मौनभाव यह
कह दिया जो येही यथार्थ अभीष्ट वस्तुको लाभ
किये है । उन्होंनेकी इन्द्रिय-चेष्टा चपलता सब दूर
होगयी है । उन्होंने निश्चल भाव नीरव स्वरसे
इतने ही कह देता है जो धीवर (मल्ला) जैसा निज
शक्तिसे जाल पसारता और समेट लेता है उस
भान्ति जगतके रखनेहारे केन्द्रातिग और केन्द्रानुग
शक्ति (Centrifugal और Centrepetal forces)
करके सृजन और संहार कर रहे है । उक्त शक्ति-
योंके मध्य में प्रथम सृष्टि और दूसरी संहारका
कारण है । वृद्धतेरे लोग यह कह सक्ते है कि
जो मङ्गलमय हैं और जिनकी पालनी शक्ति नित्य
है, वे क्या कभी किसीका अनिष्ट वा नाश कर सक्ते
हैं, इससे उनका “मङ्गलमय” और “पालनकर्ता”
इस नामपर ऐसा कलङ्क गीरेगा जो कभी मिटने-
वाला नहीं है, किन्तु “संहरण” शब्दका अर्थ
“विनाश” यह जो साधारण लोग मानते हैं सो
नहीं है । सम्पूर्ण रीतिसे आहरण अर्थात् दूर
तक पसारा हुआ जगज्जालको फिर प्रेमार्कर्मण
पूर्वक ईश्वर की निज निशुद्धमत्वा में लानेका नाम
“संहार” । यह क्या प्रेममय, मङ्गलमयका अमा-
ङ्गलिक अनुष्ठान है ! ! इस केन्द्रानुग शक्ति की प्रव-
लता करके जीव जिस कार्यके अनुष्ठान में प्रवृत्त
वा उत्तेजित हुआ करता है उसीका नाम “धर्म-
साधन” । समस्त परमाणु और पारमाणविक शक्ति
ही इन दो महती शक्तियों करके चलायी जाती
है, अतएव यदि कोई जीवको यथेच्छा पथ पर
विचरता हुआ देखा जाय तो उसकी निन्दा वा

पारा যায় না। সকলেই লক্ষ্যানুসন্ধানে প্রবৃত্ত। বানরগণ সকলেই রামবনিতা সীতার অন্বেষণে ব্যস্ত, সকলেই সমান যত্ন ও আগ্রহের সহিত জনক-নন্দিনীর উদ্দেশে দিগ্দিগন্তে ধাবিত হইল, কিন্তু তন্মধ্যে কেবল পবনকুমারের শ্রমই সিদ্ধ ও সার্থক হইল, অপর বানরবৃন্দ বিফলমনোরথ হইয়া প্রত্যাবৃত্ত হইল বলিয়া কি তাহারা নিন্দাভাজন হইবে! কখনই নহে। তজ্জপ যাহার যেরূপ প্রকৃতি সে সেই পথে যাইবে, তজ্জগৎ তাহাকে নিন্দা করিবার কোন কারণ দৃষ্ট হয় না। এক্ষণে প্রকৃতি ভিন্ন ভিন্ন হয় কেন ইহাই বিচার্য। নিম্ন-লিখিত কয়েকটি কারণই প্রধান বলিয়া বোধ হয়। বিশেষ বিশেষ বাসস্থান হইতে সোম, সূর্য্য তারাদির দূরত্ব, স্থানীয় জল বায়ু, প্রাকৃতিক দৃশ্যমালা আদি দ্বারা জাতীয় প্রকৃতি সংগঠিত হয়; এই জাতীয় প্রকৃতি, পিতা মাতাদির ধাতুগত প্রকৃতি এবং পূর্ব জন্মকৃত কৰ্ম ফলাদির প্রকৃতি জীবের বিশেষ বিশেষ প্রকৃতি বা ভাব রচনা করিয়া থাকে। কেন্দ্রানুগ শক্তি দ্বারা সমস্ত জীব সর্বদাই পরিচালিত হইয়া, পরমাাত্রার অভিমুখে আকৃষ্ট হইতেছে এবং তদনুসারী কার্য্যকেই আমরা সংক্ষেপে “ধর্ম্মসাধন” পদে বরণ করিলাম। স্ব স্ব প্রকৃতি অনুসারে মনুষ্য ধর্ম্ম সাধন করিয়া থাকে, এই জগৎই মানব ধর্ম্ম, দানব ধর্ম্ম, দেব ধর্ম্মাদির প্রবর্তনা, এই জগৎই মতবৈষম্য, সাম্প্রদায়িকতা ও বিবিধ ধর্ম্মশাস্ত্রের অভ্যুদয় হইয়াছে।

ধর্ম্মসাধন করিতে হইলে, কেন্দ্রাতিগ শক্তির* বিরুদ্ধে দণ্ডায়মান হইয়া, কেন্দ্রানুগ শক্তির আশ্রয় গ্রহণ করিতে অর্থাৎ অনাসক্ত, জিতেন্দ্রিয়, বিষয়-বিরাগী, নিষ্কাম ও ভগবৎপ্রেমী হইতে হইবে। ধর্ম্মাভিমান, সাম্প্রদায়িকতা আদি ধর্ম্ম সাধনের বিরোধী ভাব ত্যাগ করিয়া, ধর্ম্মানুকূল ভাব সমূহকে আগ্রহ পূর্বক গ্রহণ করিয়া স্থিরচিত্তে মহাজনগণের পথ অনুসরণ করিবে। বাহ্য পদার্থের সহিত মনো-প্রকৃতির বিশেষ সম্বন্ধ আছে, তজ্জগৎ আগাদের ধর্ম্ম সাধনের ভাষা, উপকরণ, পরিচ্ছদ, আরাধনার কাল, ও স্থানাदि বিশেষ অনুকূল হওয়া আবশ্যক। সংস্কৃত ভাষা; আসন, ধূপ, চন্দন, পুষ্প, কোশা-

* যদ্বারা সংসারশক্তি বা সংসার বিস্তার বাসনা উদ্ভূত হয়।

হুয়া নহী কীজা তক্তি হৈ। সবকোই লক্ষ্যানুসন্ধান মেন্ প্রবৃত্ত হৈ। বানরমণ্ডলীকে সবকোই শ্রীরাম-বনিতা সীতাকে অন্বেষণ মেন্ ব্যস্ত হৈ, সবকোই সমান রীতি যত্ন শ্রী আগ্রহকে সহিত জনকনন্দিনীকা পত্না লগানেকের লিয়ে দিগ্দিগন্ত মেন্ ধাব-মান জ্ঞে, কিন্তু তন্ মেন্ কেবল পবনকুমারকা শ্রম হী সিদ্ধ শ্রী সার্থক জ্ঞা, অন্যান্য বানর-বৃন্দ বিফল মনোরথ জ্ঞে লৌট আয়ে, এতদর্থ ক্যা বে সব নিন্দাকে ভাজন হোঙ্কে? কভী নহী। তস ভান্দি জিসকী জৈসী প্রকৃতি হৈ বহু তসী রাহু পর জাঙ্কে, তদর্থ তসকো নিন্দা করনেকা কোই কারণ নহী দেখ পড়তা হৈ। প্রকৃতি ভিন্ন ভিন্ন মনুষ্যকী ভিন্ন ভিন্ন ক্যোঁ হোতী হৈ, সোই অব বিচারনা চাহিয়ে। নীচে লিখে জ্ঞে কারণোঁ হীকো প্রধান বোধ হোতা হৈ। বিশেষ বিশেষ বাস-স্থানসে সোম, সূর্য্য, তারকাদিকা দূরত্ব, স্থানীয় জল, বায়ু, প্রাকৃতিক দৃশ্যমালা আদি করকে জাতীয় প্রকৃতি বনতী হৈ : ফির যত্ন জাতীয় প্রকৃতি, পিতা, মাতা কী ধাতুগত প্রকৃতি শ্রী পূর্ব জন্মার্জিত কৰ্ম-ফলাদি কী প্রকৃতি জীবকো প্রকৃতি বা ভাবরচনা করতী হৈ। কেন্দ্রানুগ শক্তি করকে সমস্ত জীব সদা হী পরিচালিত হোकर পরমাাত্রাকে, আর আকৃষ্ট হোতে হৈ শ্রী তদনুসারী কার্য্য হীকো হম সংক্ষেপ মেন্ “ধর্ম্মসাধন” ইস পদ মেন্ বরণা করতে হৈ। মনুষ্য নিজ নিজ প্রকৃতিকে অনুসার ধর্ম্ম-সাধন কিয়া করতা হৈ, ইসলিয়ে মানবধর্ম্ম, দানব ধর্ম্ম, দেবধর্ম্মাদি কী প্রবর্তনা জ্ঞে, ইসলিয়ে মতবৈষম্য, সাম্প্রদায়িকতা শ্রী নানা ভান্দি শাস্ত্রকা অভ্যুদয় জ্ঞা হৈ।

যদি ধর্ম্মকা সাধন करना হো তো কেন্দ্রাতিগ* শক্তিকে বিরুদ্ধ মেন্ দণ্ডায়মান হোकर কেন্দ্রানুগ শক্তিকে আশ্রয় গ্রহণ करना অর্থাৎ অনাসক্ত, জিতেন্দ্রিয়, বিষয়-বিরাগী, নিষ্কাম শ্রী ভগবৎপ্রেমী হোনা পড়তা হৈ। ধর্ম্মাভিমান, সাম্প্রদায়িকতা আদিকে, জো সব ধর্ম্মসাধনকা বিরোধী হৈ, ত্যাগ করকে ধর্ম্মানুকূল ভাব সমূহকো আগ্রহ পূর্বক গ্রহণ কর স্থির চিত্তাসে মহাজনোঁ কী রাহু পর চলনা হোনা। বাহ্য পদার্থোঁসে মনোপ্রকৃতিকা বিশেষরূপ সম্বন্ধ হৈ, তদর্থ হম সবকে ধর্ম্মসাধন কী ভাষা, উপকরণ, পরিচ্ছদ, আরাধনাকা কাল শ্রী স্থান আদি বিশেষরূপ অনুকূল হোনা চাহিয়ে। সংস্কৃত ভাষা, আসন, ধূপ, চন্দন,

* जिससे संसारशक्ति वा संसार विस्तार की वासना उत्पन्न होती है।

कूशी, कलादि उपकरण ; पट्टे वस्त्र, नामावलि, माला, तिलकादि, परिच्छद ओ चिह्न ; उषा, मध्याह्न ओ सायंकाल ; गङ्गातीर, देवगृहादि स्नान मङ्गावन्दनादि नितास्तु वैज्ञानिक रीतिक्रमे अनुकूल बलिया, आर्यागण एतावतेर व्यवस्था करिया गियाछैन । याँहारा एतदनुसारे साधना करिया থাকेन, ताँहारा अवश्याही स्वीकार करिवेन ये उक्त पद्धति अवलम्बन काले, सांसारिक बाक्तिर संसार भाव तिरौहित हईया, आध्यात्मिक भावेर उदय हईया থাকे । केन्द्रानुग शक्तिर विधि पूर्वक सेवा अर्थात् धर्मसाधने जीवनोत्सर्ग करिले, आमादिगेर आशा-पूर्ण हईवे ; आमरा देवदुर्लभ परम धाम प्राप्ति हईव ।

ये स्थाने अवस्थान करिले, मनुष्याके स्थूल दृष्टि विमोहित करिते পারে ना, ये स्थाने आकृष्ट हईले, काल जीवके स्पर्श करिते পারে ना, ये पद प्राप्ति हईले, जीव संसारेर सम्पद, विपद अतिक्रम पूर्वक चिरकाल अविचलित থাকे, केन्द्रानुग शक्ति धर्मसाधन बले जीवके सेह परम धामे लईया যায় । ये स्थाने गमन करिले, सोम सूर्यादि ग्रहगण जीवके पीड़ा दिते समर्थ হয় ना, येथाने दिवा, रात्रि, शीत, वर्षादि काल भेद नाई, येथाने बाल्य, यौवन, मूर्ध, ज्ञानी, दुःखी, धनी आदि अवस्था भेद ओ साम्प्रदायिक विरोध, विद्वेष नाई, येथाने আমি तুমि, आलोक, अन्धकार, अस्ति, नास्ति नाई, केन्द्रानुग शक्ति धर्मसाधन बले जीवके अनिकार स्पर्श सेह परम धामे लईया যায় । ये स्थाने उपस्थित हईले बाह्यनोबुद्धिर विकार निरुद्ध हईया যায়, ये स्थान लाभ करिबार जन्तु त्रिजगत् उर्द्ध गूणेषु वित हईतेछे, ये स्थाने नित्य अधिष्ठान करा विरिधि, विष्णु आदिर ओ वाङ्मन्य, केन्द्रानुग शक्ति धर्मसाधन बले सेह देवदुर्लभ परम धामे लईया যায় । जीव वारिधिर बुद्धिबल महान् सन्नर्गवेर कोन् निवृत्त स्थले विलीन हईया থাকे, ताहा ब्रह्मेन्द्र मरुदणगादिर ओ अगोचर ।

हे धर्म ! आमादिगके सेह अगाध गम्भीर भावमय परम धामे लईया याओ ।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरिः ॐ ।

पुष्प, ताम्रपात्र, जल आदि उपकरण, पट्टवस्त्र, नामावली, कराटो, तिलक आदि परिच्छद ओ चिह्न ; उषा, मध्याह्न ओ सायंकाल ; गङ्गातीर, देवगृहादि स्थानको सम्मत्ता वन्दनादिके लिये वैज्ञानिक रीतिसे विधेय अनुकूल जानकर आर्यमहात्मागण इन सब की व्यवस्था कर गये हैं । जो लोग एतदनुसार साधनाकिये करते हैं वे लोग अवश्य ही मानेंगे कि उक्त रीतिसे काम करनेपर सांसारिक पुण्यका संसारभाव अन्तर्धान होकर आध्यात्मिक भावका उदय हुआ करता है । केन्द्रानुग शक्ति की विधिपूर्वक सेवा अर्थात् धर्मसाधनाई जीवनको उत्सर्ग कर देनेपर हम सब की आशा पूर्ण होगी—हम सब देवदुर्लभ परम धामको प्राप्त होंगे ।

जहाँ स्थित होनेपर स्थूलदृष्टि मनुष्यको विमोहित नहीं कर सक्ति है, जहाँ आकृष्ट होनेपर काल जीवको स्पर्श नहीं कर सक्ता है, जिस पद मिलनेसे जीव संसारके सम्पद विपदकी टपकर चिरदिन अविचलित रहता है । केन्द्रानुग शक्ति धर्मसाधन केवलसे जीवको परम धाम में ले जाती है । जहाँ जानेपर सोम सूर्यादि ग्रहमण्डली जीवको पीड़ा देने में समर्थ नहीं होते हैं, जहाँ दिवा, रात्रि, शीत वर्षादि कालभेद नहीं है, जहाँ बाल्य, यौवन, मूर्ध, ज्ञानी, दुःखी, धनी, आदि अवस्थाभेद ओ साम्प्रदायिक विरोध, विद्वेष नहीं हैं, जहाँ मैं, तूम, प्रकाश, अन्धकार, अस्ति, नास्ति नहीं है, केन्द्रानुग शक्ति धर्मसाधन केवलसे जीवको विकारसे रहित परम धाम में लेजाती है । जहाँ पञ्च-चने पर बचन, मन, बुद्धिका विकार निरुद्ध हो जाता है, जिस धामको लाभार्थ त्रिजगत जर्जमुक्त होकर दौड़ रहे हैं, जहाँ नित्य अधिष्ठान करना विरिधि विष्णु आदिका भी बाष्कनीय है, केन्द्रानुग शक्ति धर्मसाधनके बलसे उस देवदुर्लभ धाम में लेजाती है । जीव वारिधिके बुद्धाके समान मज्जन सत्वा सागरके कौन निश्चय स्थान में विलीन हो जाता है, सो ब्रह्मेन्द्र मरुदणगादिका भी अगोचर है ।

हे धर्म ! हम सबको उस अगाध गम्भीर भावमय परम धाम में ले चलिबे ।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः, हरिः ॐ ।

प्राप्त पुस्तक समालोचना।

१। रामायण। श्रीयुक्त बाबू प्रतापचन्द्र राय महाशय कर्तृक कलिकाता, गोड़ासांको, दातवा तारत कार्यालय इहते प्रकाशित ७ विना मूल्ये वितरित। ईहार मूल देवनागरी अक्षरे ७ अनुवाद वङ्गाक्षरे ७ वङ्गभाषाय प्रकाशित इहतेछे। मूल अनुवादें मांशुलादि बाय ८- टोका करिया ८ टोका ७ केवल अनुवादें मांशुल ८- टोका मात्र। मांशुल एककालान देय। आमरा एतद्रामायणें १म, २य ७ ३य खण्ड प्राप्त इहियाछि। पुस्तकद्वयें आकृति प्रकृति देखिया मने मने प्रताप बाबुर अध्यवसाय ७ यथोचित यत्नेर बल्ल प्रशंसा करि-
लाम। भगवान तैहार अवतरणिकानुयायी अर्भीके सुसिद्ध करुन। ये आर्यासन्तानगण सुलभ मूल्ये आर्यकुलतिलक निष्कलक श्रीरामचन्द्रें सचार्-
चरितामृत पान पिपास, आशा करि तैहारा अवशुहै एतद्रामायणें ग्राहक श्रेणीभूक्त इहिया, प्रकाशकें अर्भीके साधनेर साहाय्य करिवेन। अनुवादें भाषा अपेक्षाकृत समयोचित मोष्ठव-
सम्पन्न करिले, प्रकाशक वर्तमान भारतेर सम्पूर्ण अनुरागाकर्षण करिते पारिवेन।

२। सामवेद। २य खण्ड। अद्वैतसिद्ध श्रीयुक्त पण्डित सत्यव्रत सामश्रमी कर्तृक प्रकाशित। १म खण्डें न्याय एथानि ७ प्रशंसनीय इहियाछे।

३। सङ्गीत-मञ्जरी। श्रीयुक्त बाबू लाल-
विहारि बडाल महाशय कर्तृक प्रकाशित। सङ्गीत
तुलि धर्म भाव पूर्ण ७ साधकमण्डलौर हृदयग्राही
इहियाछे।

४। प्रेमगङ्गा तरङ्ग। मुन्नी श्रीतपस्वीराम
सीताराम कर्तृक रचित ७ प्रकाशित। मूल्य डाक
कर सहित २॥० मात्र। इहाते आर्या साधारण
(हिन्दी) भाषाय कवितकुसुम हारे श्रीरामचन्द्रें
चारु चरित्र सङ्गित इहियाछे। रचयितार कवित्व
शक्ति ७ प्रेमभाव अतीव प्रशंसनीय। कवितानू-
रागी प्रेमिकगण एत ७ ग्रन्थ पाठे आनन्दित इहते
पारिवेन।

५। शान्तिरसोदय काव्य। दिनाजपु-
रान्तर्गत आइहाइ निवास श्रीयुक्त पण्डित कृष्णचन्द्र

प्राप्तपुस्तकोंकी समालोचना।

१। रामायण। कलकत्ता, गोंडासांको,
दातव्य भारतकाय्यालयसे श्री बाबू प्रतापचन्द्र राय
जीने छपवा कर विन भौल लिये बट रहा है।
मूल देवाक्षर श्री उल्था वङ्गाक्षर श्री वङ्गभाषा में
प्रकाश हुआ करता है। मूल श्री अनुवादको
इकट्टेलेने में डाक करादिका व्यय ८ रुपये श्री
केवल अनुवाद में ४, रुपये लगेगा। महशुल एक-
वारगी देना चाहिये। इस रामायण १म, २य
औ ३य खण्ड मुझे प्राप्त हुआ। इन दो पुस्तकों
की आकृति प्रकृति देखकर हमने प्रताप बाबूकी
अध्यवसाय श्री यथोचित यत्नकी बद्धतही प्रशंसा
की। भगवतसे यह प्रार्थना है कि वे अवतरणिके
का लेख अनुसार अभीष्ट सुसिद्ध करें। जितने
आर्यवंशी सुलभ मौल में आर्यकुलतिलक निष्कलक
श्रीरामचन्द्रके सुचारु चरितामृत पानके प्यास
है, हम आशा रखते हैं कि वे अवश्य ही एतद्रामा-
यणके ग्राहक श्रीणी में प्रविष्ट होकर प्रकाशक
के अभीष्ट साधन करने की सहायता करेंगे।
पुस्तककी भाषा यदि और भी कुछ वर्तमान समय
योग्य सुन्दरही तो सर्वसाधारणके पूर्णरति
अनुराग बढ़ सक्ता है।

२। सामवेद। २य खण्ड। अद्वैतसिद्ध
श्रीमान पण्डित सत्यव्रत सामश्रमी जी ने प्रकाश
किया। १म खण्डके समान यह भी प्रशंसा योग्य
हुआ।

३। सङ्गीत मञ्जरी। श्री बाबू लाल
विहारि बडाल जीने छपावा कर प्रकाश किया है।
समस्त भजन ही धर्म भावसे पूर्ण श्री साधकोंके
लिये परम मनोहर हुए।

४। प्रेम-गङ्गा-तरङ्ग। मुन्नी श्री
तपस्वीराम सीतारामने छपावया। इसका मौल
डाककर सहित २॥० मात्र है। आर्यसाधारण
(हिन्दी) भाषा की कविता-कुसुम-हारसे इस
ग्रन्थ में श्रीरामचन्द्रजीका चारु चरित रचा गया
है। रचने वाले की कवित्व शक्ति श्री प्रेम भाव
अतीव प्रशंसा योग्य है। कवितानुरागी प्रेमि-
योंने इस ग्रन्थ को पढ़कर परमानन्द प्राप्त हो
सक्ता है।

५। शान्तिरसोदय-काव्यम्। जिले
दिनाजपुरके आई आई निवासी श्रीयुक्त पण्डित-

राय प्रणीत । ईशाते ज्ञान, भक्ति, वैराग्यादि भावपूर्ण ७८ टी नवरचित संस्कृत श्लोक ७ तहारा अनुवाद प्रकाशित हईयाछे । कविता गुनि सरल, सरस ७ साधुभावपूर्ण हईयाछे । धर्मात्मा पाठक पुष्पेरे चित्त-विनोदनार्थ भानानुवादसह छुईटी कविता निम्ने उक्कार करिया दिलाय ।

“सर्व्वं दिनं गतमहो धनचिन्तया ते,
रात्रिर्गता प्रणयिनी परिचिन्तया च ।
हे चित्त ! राधवपदं स्मरचिन्तनीयं
यत्नैस्त्वया किल कदा सुविचिन्तनीयम् ॥

हे चित्त ! तोमार सकल दिन धनचिन्ताते ७ रात्रि रमणीचिन्ताते गत हईल : कोन् काले तोमा कर्तृक देवचिन्तनीय राम-पदेर चिन्ता हईवे !

क्रोशत्रयं क्रोशचतुष्टयं वा
गच्छन्ति लोका यदि सम्बलं हि ।
चिन्तयति, किं भो तव मूर्ख चित्त
पाथेयमागारगतौ यमस्य ॥

लोक सकल क्रोशत्रय किंवा क्रोश चतुष्टय गमन करिले, सम्बल संग्रह करे, हे मूर्ख चित्त ! यमगृह गमने तोमार पथेर सम्बल कि ?

कृतज्ञतासहकारे ४र्थ वर्षेर मूल्यप्राप्ति स्वीकार

श्रीमहात्मा नरेन्द्र नारायण राय बाहादुर,	कांदी	९
श्रीमहाबु विपिन मोहन सेन,	कलिकाता	७५०
“ तारक चन्द्र प्रामाणिक,	ऐ	७५०
“ गोविन्द कुमार चौधुरी,	ऐ	७५०
“ काली कृष्ण प्रामाणिक,	ऐ	७५०
“ दीन नाथ गङ्गोपाध्याय,	सैमरपुर	७५०
“ आमाचरण घोष,	तुरकुलिया	७५०
“ रघु नन्दन लाल,	गया	२५०
“ राजकृष्ण प्रामाणिक,	ऐ	
“ गणपति प्रसाद,	डगगपुर	२५०

मुष्पेर, आर्यधर्म- } श्रीकृष्णप्रसन्न सेन ।
प्रचारिणी सभा } सम्पादक ।

इहै पत्रिका प्रति पूर्णिमाते मुष्पेर आर्यधर्म प्रचारिणी सभा उद्देशे प्रकाशित हईया पाके ।

लक्ष्मणचन्द्र राय जीने बनाया । इस में ज्ञान, भक्ति, वैराग्यादि भावपूर्ण ३८ नवीन संस्कृत श्लोक श्री वङ्गभाषा में उसका उल्था प्रकाशित हुआ है । कविता सब सरल, सरस श्री साधुभावसे पूर्ण हुई है । धर्मात्मा पाठकोंके चित्तविनोदनार्थ देा कवितायें श्री उसकी भाषा नीचे प्रगठ की गयी ।

सर्व्वं धनं गतमहो धनचिन्तयाते,
रात्रिर्गता प्रणयिनी-परिचिन्तया च ।
हे चित्त ! राधव-पदं स्मरचिन्तनीयं
यत्नैस्त्वया किल कदा सुविचिन्तनीयम् ॥

दिनभर धन की चिन्ता में श्री रातिभर रमणी की चिन्ता में तु वतीत किया, तो फिर हे चित्त ! तुंझसे कब वह श्रीराम पद की चिन्ता बनेगी, जो कि देवताओंको भी भजनीय हैं ।

क्रोशत्रयं क्रोशचतुष्टयं वा,
गच्छन्ति लोका यदि सम्बलं हि ।
चिन्तयन्ति, किं भो तव भूर्खचित्त
पाथेयमागारगतौ यमस्य ॥

लोगोंने यदि तीन अथवा चार क्रोश दूर कीसी स्थान में जाय तो पथव्यय साथ ले लेता है, किन्तु हे मूर्ख चित्त ! तु जो यमालयको जाने-वाला है, तर्ह्य क्या संग्रह कर रखा ।

कृतज्ञतापूर्वक ४र्थ वर्षकी मूल्यप्राप्ति स्वीकार

श्रीमहात्मा नरेन्द्रनारायण रायबाहादुर,	कांदी	५)
श्रीमहाबु विपिनमोहन सेन,	कलकत्ता	६॥॥
“ तारकचन्द्र प्रामाणिक,	“	२॥=
“ गोविन्दकुमार चौधुरी,	“	२॥=
“ कालीकृष्ण प्रामाणिक,	“	२॥=
“ दीननाथ गङ्गोपाध्याय,	सैमरपुर	२॥=
“ आमाचरण घोष,	तुरकुलिया	२॥=
“ रघुनन्दन लाल,	गया	२॥=
“ राजकृष्ण प्रामाणिक,	“	२॥=
“ गणपति प्रसाद,	भागलपुर	२॥=

मुष्पेर, आर्यधर्म- } श्रीश्रीकृष्णप्रसन्न सेन
प्रचारिणी सभा । } सम्पादक ।

इहै यह पत्र हर पूर्णिमा में मुष्पेर आर्यधर्मप्रचारिणी सभाके उद्देशे प्रकाशित होता है ।



“एक एव सुहृद्भर्त्ता निधनेऽप्यमुयाति यः ।
शरीरेण समन्नाशं सर्वमन्यत्तु गच्छति ॥”

“एक एव सुहृद्भर्त्ता निधनेऽप्यमुयाति यः ।
शरीरेण समन्नाशं सर्वमन्यत्तु गच्छति ॥”

४र्थ भाग । } शकाब्दः १८०३ ।
४७ संख्या । } त.प्र.—पूर्णिमा ।

४र्थ भाग । } शकाब्दः १८०३ ।
४७ संख्या । } भाद्र.—पूर्णिमा ।

परमार्थ सार ।

(पूर्व प्रकाशितके पर) ।

लोकव्यवहारकृतां य इहाविद्यामुपासते मूढाः ।
ते जननमरणधर्माणां हन्ततम एतद्युधिद्वन्द्वे ॥५७॥

याहारा अज्ञानवशतः केवल लोक व्यवहारे
निरत থাকিয়া জীবনাতিপাত করে, তাহারা কখন
জন্ম, মরণ হইতে মুক্তিলাভ করিতে পারে না, এবং
ঘোরান্ধকারময় নরকে পতিত হইয়া অতীব খেদ-
গ্রস্ত হইয়া থাকে ।

গ্রাসাচ্ছাদনাদির আহারণ, পুত্র, দারা ও
কুটুম্বাদির ভরণ পোষণ, সংসারে অভ্যুদয় কামনায়
বিবিধ বিদ্যা ও কৌশলজাল শিক্ষাদিকেই জীবনের
সার সর্বস্ব বোধে যে ব্যক্তি দিনপাত করে, আত্ম-
চৈতন্যদীপ্তি তাহার সম্মুখে প্রকাশিত হয় না ।
সে জন্ম, মৃত্যুর বশীভূত হইয়া ঐদৃশ নীচ যোনীতে
প্রবেশ করে যে তাহা ঘোর অবিদ্যাক্রান্তমসচ্ছন্ন,
তথা হইতে জীব শীঘ্র উত্তীর্ণ হইবার পথ দেখিতে
পায় না ।

পরমার্থ সার ।

(পূর্ব প্রকাশিতকে জানে)

লোকব্যবহারকৃতাং য ইহাবিদ্যাসুপাসতে মূঢ়াঃ ।
তে জননমরণধৰ্ম্মাণো হ্যন্বতম এত্ব খিद्यন্তে ॥৫৭॥

জো মূঢ় লোক অজ্ঞান করকে কেবল লোক-ব্যব-
হার में फंसे रहकर दिन बीताते हैं, उन सबका
जनम, मरण कभी नहीं छुट सकता औ वे अत्यन्त
अन्ध नरक में गिरकर अतीव खेद्युक्त ऊँचा
करते हैं ।

भोजन औ आच्छादनके संग्रह, पुत्र, स्त्री औ
कुटुम्ब आदिके भरण, पोषण, संसार में अभ्युदय
की कामना करके विविध विद्या औ कुल बल शिखना
हीको जो जीवनका सारकार्य समझ कर दिनाति-
पात करता है, आत्मचैतन्य-दीप्तिका प्रकाश उसके
सामने नहीं होती है । वह जनम, मरणके वश
होकर, इस भान्ति नीच योनी में प्रवेश करता है,
जो अतीव अविद्यारूप अन्धकारसे परिपूर्ण है ;
वहांसे शीघ्र निकलने की सुराह जीवको नहीं
सुझता है ।

हिमफेणुबुद्धा इव जलस्य धूमोद्गमो यथा वहेः ।
तद्वत्स्वरूपभूता मायैषा कीर्तिता विष्णोः ॥ ५१ ॥

येमन शीतलता, फेणा वा बुद्धा जलकेइ अवलम्बन करिया विद्यमान থাকे, एवं विशेष विशेष प्रक्रिया गुणे जनेइ अत्र वस्तुत्राया प्रतीति हय, धूम येमन बहिःते अप्रकाशित हईया থাকे एवं क्रिया काले प्रकाशित हय, मायाओ विष्णुते तद्रूपवशाते स्थिति करितेछे ।

एवं द्वैतविकल्पां त्रयस्वरूपां विमोहिनीं मायां ।
उत्सृज्य सकलनिष्कलमद्वैतं भावयेद्ब्रह्म ॥ ५४ ॥

त्रैदृश द्वैतकल्पना त्रयस्वरूपा विश्वविमोहिनी मायाके सम्पूर्ण रूपे परिहार पूर्वक विकलता विहीन अद्वैतब्रह्मके भावना करिबे ।

माया छै अंशे विभक्त ; विद्या ओ अविद्या । विद्या प्रभावे अविद्याके क्षीण करिया, आज्ञा योगाभ्यास पूर्वक क्रमशः विद्याके ओ परित्याग करिबे । येमन अश्रिकणा प्रथमतः तृण राशिके जलावशेष करिया अरु ओ सर्कराशेने भस्म हईया याय तद्रूप विद्या अविद्याके विनष्ट करिया अवशेषे अरु विलुप्त हईया गइबे, अतःपर अद्वैतब्रह्म बुद्धि उदय हईबे ।

यद्वत्सलिले सलिलं क्षीरे क्षीरं समीरणे वायुः ।
तद्वद्विमले ब्रह्मणि भावनया तन्मयत्वमुपयाति ॥ ५२ ॥

येमन जले जल, छूके छूक ओ समीरणे वायु मिश्रित हईया याय, तद्रूप जीव प्रगाढ चिन्ता समाधान द्वारा निर्मल ब्रह्मे एकीभूत हईया থাকे ।

इत्यं द्वैतसमूहे भावनया ब्रह्मभावमुपासते ।
को मोहः कः शोकः सर्वं ब्रह्मावलोकयतः ॥ ५० ॥

विनि एईरूपे एकाग्रचित्ते समस्त जगते ब्रह्म-बुद्धि आरोपण करिते समर्थ हयैन, तौहार शोक मोह विदूरित हईया याय एवं समस्तइ ब्रह्ममय प्रतीति हईते থাকे ।

विगतोपाधिः स्फटिकः सप्रभया भाति निर्मला यद्वत् ।
चिदीपः सप्रभया तथा विभातीह निरुपाधिः ॥ ५१ ॥

स्फटिकमणि निकट कोन रज्जिल वस्तु থাকिले तौहार प्रतिबिम्ब स्फटिके पतित हय ओ स्फटिकके तद्वर्णानुरजित बोध हय ; तद्वस्तु अभाव हईलेइ,

हिमफेणुबुद्धा इव जलस्य धूमोद्गमो यथा वहेः ।
तद्वत्स्वरूपभूता मायैषा कीर्तिता विष्णोः ॥ ५१ ॥

जैसी शीतलता, फेणा वा बुद्धा जल हीको अव-लम्बन करके, विद्यमान रहता है, फिर कोई विशेष प्रक्रिया गुणसे जल ही में दूसरा किसी वस्तुके समान भासित होता है, घुवां जैसा अग्नि में अप्र-काशित रहता औ क्रिया काल में प्रगट होता है, माया भी विष्णु में उस अवस्था करके रहती है । एवं हैतविकल्पां त्रयस्वरूपां विमोहिनीं मायां । उत्सृज्य सकलनिष्कलमद्वैतं भावयेद्ब्रह्म ॥ ५४ ॥

इस भान्ति हैत की कल्पना त्रयस्वरूप विश्व-विमोहिनी मायाको सम्पूर्ण रूपसे छोड़ कर विक-लतासे रहित अद्वैत ब्रह्मको भावना करें ।

माया दो अंशमें विभक्त है ; विद्या औ अविद्या । विद्याके प्रभावसे अविद्याको क्षीण करके आत्म-योगाभ्यास पूर्वक धीरे धीरे विद्याको भी परि-त्याग करना । जैसा अग्नि की कक्षा पहले दृश्य राशिको भस्म करके सर्वशेष में स्वयं भी भस्म हो जाती है, उस भान्ति विद्या अविद्याको विनष्ट कर अन्त में स्वयं विलुप्त हो जाती । अनन्तर अद्वैत ब्रह्म बुद्धिका उदय होता है ।

यद्वत्सलिले सलिलं क्षीरे क्षीरं समीरणे वायुः ।
तद्वद्विमले ब्रह्मणि भावनया तन्मयत्वमुपयाति ॥ ५२ ॥

जैसे जल में जल, दुध में दुध औ वायु में वायु मिल जाता है, तद्रूप जीव प्रगाढ़ चिन्तन समाधान करके निर्मल ब्रह्म में मिल जाता है ।

इत्यं द्वैतसमूहे भावनया ब्रह्मभावमुपासते ।
को मोहः कः शोकः सर्वं ब्रह्मावलोकयतः ॥ ५० ॥

जिनने इस रीति एकाग्रचित्ततासे सारे जगत् में ब्रह्मबुद्धिका आरोपण कर सकता है, उनके शोक मोहादि सब छुट जाते हैं औ सब ही ब्रह्ममय प्रतीत ऊँचा करता है ।

विगतोपाधिः स्फटिकः

स्वप्रभया भाति निर्मला यद्वत् ।

चिदीपः स्वप्रभया

तथा विभातीह निरुपाधिः ॥ ५१ ॥

स्फटिकमणिके निकट कोई रज्जुदार वस्तु रह-नेसे उसका प्रतिबिम्ब स्फटिक पर गिरता है, इससे स्फटिकको उस रज्जुसे रज्जा ऊँचा बोध होता है ; उस वस्तुको हटाने हीसे स्फटिक निज निर्मल

ক্ষটিক নিজ নির্মল প্রভায় দীপ্তি পাইতে থাকে, তদ্রূপ চৈতন্যরূপ দীপ জগৎরূপ উপাধি বর্জিত হইলেই স্বীয় তেজে প্রকাশিত হইয়া থাকে ।

ক্রমশঃ ।

আর্য্যশাস্ত্র-বিজ্ঞান ।

(পূর্বে প্রকাশিতের পর) ।

ছন্দঃ শাস্ত্র । বাগ্ধিজ্ঞানের অন্তর্গত প্রক্রিয়া বিজ্ঞান দুই ভাগে বিভক্ত । ১ম, অবিশিষ্ট ও ২য় বিশিষ্ট । বক্তার বাঙ্নিষ্পাদন প্রযত্নের তারতম্য থাকিলেও যে প্রক্রিয়ার ইতর বিশেষ না হয়, তাহাই অবিশিষ্ট প্রক্রিয়া এবং যে শাস্ত্র দ্বারা তদ্রূপ প্রতিপন্ন করা যায় তাহার নাম “অবিশিষ্ট প্রক্রিয়া বিজ্ঞান” । এবং এতদ্বারা বাহার ইতর বিশেষ হয় তাহাকে বিশিষ্ট প্রক্রিয়া এবং তৎ-প্রতিপাদক গ্রন্থকে বিশিষ্ট প্রক্রিয়া বিজ্ঞান বলা যায় ।

ইতি পূর্বে যে শিক্ষাশাস্ত্রের বিষয় বিবৃত হইয়াছে, তাহাই বাক্যের অবিশিষ্ট প্রক্রিয়া বিজ্ঞান । শিক্ষাশাস্ত্র দ্বারা বাক্যোৎপত্তির যাদৃশ প্রক্রিয়া প্রতিপাদিত হইয়া থাকে, তাহা বক্তার প্রযত্নভেদে বিভিন্ন প্রকার হয় না । বক্তা যে প্রকার প্রযত্নই করুন না কেন, স্মারু-ক্রিয়া-জনিত বক্ষঃস্বাদি-পেযো-ক্রিয়া দ্বারা সঞ্চালিত ফুনফুন হইতে বহিঃর্গিঃসার্থ্য-মান বায়ু দ্বারা যথানিয়ত কারণে আকৃষ্টিকণ রসনিকার সংঘর্ষণ না হইলে “অ”কারের উৎপত্তি হইতে পারে না, ঐ সমস্ত কারণের প্রকারভেদও সম্ভবপর নহে । “আ”কারাদি বর্ণোৎপত্তিরও এই বিধি । এবম্বিধ বাক্-প্রক্রিয়া শিক্ষাশাস্ত্র-প্রতিপাদ্য । এজন্য শিক্ষাশাস্ত্র, বাক্যের “অবিশিষ্ট-প্রক্রিয়া-বিজ্ঞান” । অবিশিষ্ট বিশিষ্ট প্রক্রিয়া বিজ্ঞানের নামই “ছন্দঃ শাস্ত্র” । এতদ্বারা যে প্রক্রিয়া প্রতিপন্ন হইয়াছে, তাহা বক্তৃ-প্রযত্নভেদে ভিন্ন রূপ হইতে পারে ।

আভ্যন্তরিক ক্রিয়ার (বক্তার মনোগত ভাবের) সহিত মিলিত বাক্-ক্রিয়ার বিভক্তিকে “ছন্দঃ” বলে । যখন সেই বক্তৃ মনোগত ভাবের মিলন না হয়, তখনও কৃত্রিম বিভক্তিশূন্য বাক্যের প্রয়োগ হইতে

প্রমাণ করকে শোভাকে প্রাপ্ত होता है; उस भान्ति चैतन्यरूप दीप जगत्‌रूप उपाधिसे रहित होने हीसे अपने तेज करके सुगोभित ऊँचा करता है ।

(शेष आगे)

आर्य्य शास्त्र-विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशितके आगे)

छन्दः शास्त्र । वाग्ध्विज्ञानके अन्तर्गत प्र-
क्रियाविज्ञान दो भाग में विभक्त है । १म, अवि-
शिष्ट, २य, विशिष्ट । वक्ताके वाङ्निष्पादन प्रय-
त्नका तारतम्य रहे पर भी जिस प्रक्रिया की कोई
विभिन्नता नहीं रहती है, उसीको “अविशिष्ट
प्रक्रिया” करके जानना और जिस शास्त्रके द्वारा
उन सबको प्रतिपन्न किये जाते हैं उसीका नाम
“अवशिष्ट प्रक्रिया विज्ञान” । और इससे जिसको
तारतम्य होता है उसको “विशिष्ट प्रक्रिया” और
तत्प्रतिपादक ग्रन्थको “विशिष्ट प्रक्रियाविज्ञान”
कहा जाता है ।

इसके पूर्व में “शिक्षा-शास्त्र” इस आशय पर
जो लिखा गया है उसीको वाक्यका “अविशिष्ट प्रक्रि-
याविज्ञान” करके जानना । शिक्षा शास्त्रसे वाक्यो-
त्पत्ति की जिस भान्ति प्रक्रिया प्रतिपादित ऊँचा
करती है, सो कहनेहारके प्रयत्नकी भिन्नता करके
भी दूसरी रीति की नहीं होती है । वक्ता जिस
भान्ति प्रयत्न क्यों न करें स्वायु की क्रिया-जनित
भीतर वक्त को पेथीयों की क्रिया करके चलता
ऊँचा फुस फुससे बाहर निकलनेवाला वायुके द्वारा
नियमित हेतुसे संकुचित ऊँचा कराट्ट जिह्वाके
संघर्षण विना “अ” कारको उत्पत्ति नहीं हो सकती
है । उन सब कारणों की भिन्नता होना भी
सम्भव नहीं । “आ”कार आदि की उत्पत्ति की
विधि भी ऐसी है । इस भान्ति वाक् की प्रक्रिया
शिक्षा-शास्त्र करके प्रतिपन्न होती है, एतन्निमित्त
शिक्षाशास्त्रको वाक्यका “अविशिष्ट प्रक्रियाविज्ञान”
करके कहा जाता है । अवशिष्ट जो “विशिष्ट प्रक्रि-
याविज्ञान” रहा, उसीका नाम “छन्दः शास्त्र” ।
इससे जो प्रक्रियाको प्रतिपन्न करी गयी है सो
वक्ताके प्रयत्न की रीतिसे भिन्नरूप हो सक्ति है ।

भीतर की क्रिया (कहनेहाराके मनके भाव)
से मिली ऊँच वाक् क्रिया की जो विभक्ति है,
उसीका नाम छन्दः । जब वक्ताके उस मनके भावसे
न मिले उस समय में भी कृत्यिम विभक्तियुक्त वाक्य

पाए, किन्तु ताहाके कृत्रिम छन्दःई बला যায় । केवल वक्ताके अभ्यास वा छल निबन्धनई ताहा मञ्जूर হয় ।

छन्दः शास्त्रे, छन्देर लक्षण, प्रकार भेद ओ ताहार लक्षण, उदाहरण ओ ताहार कालादि निर्णीत हईयाछे ।

क्रमशः ।

चारु चिन्तावली ।

९। कुलटा कामिनीर परपुरुष संसर्गजात पूत्रके क्रोড়ে करिया यदि स्वामी निजपूत्रबोधे आदर वा स्नेह प्रकाश करे, तबे तद्दर्शने उल्लू पुरुष ओ कामिनी এই बलिया मने मने हांशु करे ये काहार वा पूत्र के वा आदर करे !! जीव এই संसारे माया विमोहित हईया शरीरादिके “आमार” बलिया कत यत्न, कत मज्जा ओ कत झंझझा करितेछे किन्तु दूर हईते काल এই बलिया हांशु करितेछे ये हा मूढ़ ! तूमि काहाके निज-बोधे यत्न करितेछ, किछुई तोमार नहे, तूमि मझुरेई एतावत् हईते बन्धित हईबे । आमार जीवके गृहेर वा उद्यानादिर सीमा लईया प्रति-वासीर सहित विवाद करिते देखिया पृथिवी এই बलिया मने मने हांशु करेन ये आमि कार आर आमाके केईवा “आमार” बलिया अधिकार करिते चाहे !! जीव ! आमि तोमादेर काहारओ नहि—ब्रथा विवाद परित्याग कर ।

१०। मिठे येथानेई पड़िया थाकुक ना केन, पिपीलिका दले दले आपनाराई तथाय आसिया उपस्थित हईबे । तूमि साधु वा गुणवान् ए कथा निज मूथे कथन घोसणा करिओ ना । यदि तूमि अश्वरेर सम्मुखे प्रकृत साधु वा गुणी हओ, तबे देखिते पाईबे, ये दले दले संसद्गो ओ गुण-प्राहीगण तोमार उपदेशायत पाने लालायित हईया, तोमार गुण कूठिरे आसिया उपस्थित हईबे ।

११। एत लोकके ये तूमि हासिते देखि-तेछ, तन्मध्ये अनेकेर हांशु गरल मिश्रित आछे, केनना अनेके परेर दुःख वा हिन्द देखिया

का प्रयोग हो सका छै, किन्तु उसको कृत्रिम छन्द ही कहा जायगा । केवल वक्ताके अभ्यास वा छल ही करके ऐसा होता है ।

छन्दः शास्त्र में छन्दका लक्षण, प्रकारभेद औ उसका लक्षण, उदाहरण औ काल आदि निरूपण किया हुआ है । शेष आगे ।

चार चिन्तावली ।

९। दुष्टा कामिनीके पुत्रको, जो कि दुसरा पुरुषके संसर्ग करके जन्म लिया है, यदि स्वामी निज पुत्र समझके आदर वा स्नेह देखावेतो उक्त स्त्री औ पुरुष यह समझ कर मन मन हंसते रहते हैं, कि हा ! किसका यह पुत्र है औ कौन फिर इसको आदर करता है !! इस संसार में जीवको मायासे मोहित हुए “शरीरादि मेरे” है, इस भ्रमसे कितना यत्न, कितना साज, कितनी सुश्रूषा, करता हुआ देखकर काल दूरसे हंसता हुआ यह कहा करता है, कि हा मूढ़ ! तू किसको अपना मानकर यत्न करता है, कुछ ही तेरा नहीं है, शीघ्र ही ये सब तुझसे छिनलिया जायगा । फिर जीवको गृह वा उद्यान आदिके लिये निकटनिवासियों भगड़ता विगड़ता देखकर पृथिवी यह कहके हंसती रहती है कि हा “मैं” किसकी ऊँ औ मुझको फिर कौन अपनी मान अधिकार करने चाहता है !! जीव ! मैं तुम सबके किसीही की नहीं ऊँ । दया विवाद छोड़ दो ।”

१०। मिठा जहां ही क्यों पड़ा रहे, चूटीयों भुण्डके भुण्ड वहां आप ही आप आ पड़ते हैं । तुम साधु वा गुणवान हो इस समाचार निज मुंहसे कभी न कहा करो । यदि तुम ईश्वरके सामने यथार्थ ही गुणी वा सज्जन हो तो देखोगे जो दले दल सत्सङ्गी औ गुणप्राहीगण तुम्हारे उपदेशावत पीनेके लालचसे तुम्हारे गुम कुठोर में आ पड़ेंगे ।

११। इतना लोगों को जो तुम हंसते हुए देखते हो, उन में बड़तेरेके हास्य में गरल मिला हुआ है, क्यों कि बड़तेरे लोग दुसरेका दुःख वा दोष देखकर, दुसरे की निन्दा कीर्तन वा अशय कर हंसते रहते हैं । और इतना लोगको जो

परेर कुंसा कीर्तन वा अवण करिया हसिया থাকे । आर एत लोकके ये रोदन करिते देखितेछ, तन्मध्ये काहारो अश्रुविन्दुते अमृत मिश्रित आछे, केनना अपरेर दुःख देखिया, पूर्वकृत निज अपराध स्मरण करिया अथवा भगवत्-प्रेमे विगलित हईया, कोन कोन महाश्वार निष्पाप नयने अश्रुधारा बहिया থাকे ।

भारतवर्षीय आर्यधर्मप्रचारिणी सभा ।

प्रथम उद्घास ।

१९२२ शकाब्दर शेष दिन, महाविषुव संक्रान्ति दिवसे “धर्मप्रचारक” पत्र सम्पादक श्रीयुक्त कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन परम पवित्र तीर्थ हरिद्वार क्षेत्रे कुम्भमेलां महा महोत्सव काले, शुभ दिने, शुभ लग्ने, तत्रोपस्थित देश विदेशीय महाश्वारगणेर निकट भारतेर वर्तमान दृष्टशापसारण जग्न सनातन आर्यधर्मेर पुनःप्रचारार्थ प्रस्ताव करिया सकलैर निकटेइयथोचित सहानुभूति लाब करेन । तनि तथा हईते लवपुर (लाहोर) अमृतसर, देवबन्ध, आलिगढ़, मतिहारी आदि स्थान समूह परिभ्रमण करिया आसिवार समय स्थाने स्थाने अनेक गुलि धर्मार्थयुक्त वक्तृता करेन ओ सर्कत्र एई अतीव गुरुतर कार्येर आवश्यकता घोषणा करिया आसेन । “धर्मप्रचारक” “प्रभाती” “ग्रामग्राम पेपर” “एडुकेशन गेजेट” “भारत बन्धु” “नित्रविलास” “भारत मित्र” आदि प्रकाश संवाद पत्रादिते एई शुभ संवाद प्रकाशित हईल । एई भारतीय भावी मङ्गलैर भाव तरङ्ग भागीरथीर अनिवार्य तरङ्गैर त्राय क्रमे “धर्म-प्रचारक” सम्पादकैर हृदये प्रबलरूपे उद्घसित हईते लागिल । अतःपर ईहार कार्यक्षेत्र विस्तार जग्न सतत पश्चा उन्मुक्त करा गिर हईल ।

प्रथमाधिवेशन ।

१८०१ शकाब्दर १२ई माघ, रविवार, अपराह्न बेला ७टांर समय मुङ्गेर आर्यधर्मप्रचारिणी सभा-मण्डपे एकटी रहती विशेष सभार अधिवेशन

रोतेछए देखते हो उन में किसीके अंस में अमृत मिला, ऊआ है क्योंकि हमरेका दुःख देखकर, अपना किया, पूर्व पाप ऊआ अपराध स्मरण कर अथवा भगवत् प्रेमसे विगलित होकर किसी किसी महात्माके निष्पाप नयनेसे अंसकी धार बहती रहती है ।

भारतवर्षीय आर्यधर्मप्रचारिणी सभा ।

प्रथम उद्घास ।

शकाब्द १७२८के अन्त दिन,—महा विषुव-संक्रान्तिके दिवस—धर्मप्रचारक पत्रके सम्पादक श्रीमान कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेन जीने परम पवित्र तीर्थ श्री हरिद्वार क्षेत्र में कुम्भमेलाके महा महोत्सव काल-शुभ दिन, शुभ लग्न में देश देशा-न्तरके महाश्वारगणके निकट, जो वहां विद्यमान थे, भारतवर्ष की वर्तमान दुईया की शान्तिके निमित्त सनातन आर्यधर्मके पुनः प्रचारार्थ निर्देश किया था श्री सबसे उसवात की यथोचित सहानुभूति प्राप्त हुई । कुमार जीने वहांसे लवपुर (लाहोर) अमृतसर, देवबन्ध, आलीगढ़, मतिहारी, आदि स्थानों में परिभ्रमण कर लौटते समय, स्थान स्थान में धर्मार्थयुक्त वक्तृतेरी वक्तृता करी श्री इस अतीव गुरुतर कार्यकी आवश्यकता घोषणा करती आइ । धर्मप्रचारक, प्रभाती, नाथानल पेपर, एडुकेशन गेजेट, भारतबन्धु, मित्रविलास, भारतमित्र, आदि प्रसिद्ध समाचर पत्रादि में यह शुभ संवाद प्रचार ऊआ । भारतीय भावी मङ्गल के भावतरङ्ग भागीरथीके अनिवार्य तरङ्गके समान स्वरैः स्वरैः धर्मप्रचारक सम्पादकके हृदय में प्रबल रूपसे उद्घसित होने लागे । अनन्तर इसके कार्यक्षेत्र विस्तार करनेके लिये स्वतन्त्र पत्रा उन्मुक्त करना स्थिर ऊआ ।

प्रथमाधिवेशन ।

माघ सुदी १२ई शकाब्द १८०१ रविवार, दोपहरके उपरान्त बेला तीन बजे, एक विशेष रहती सभाका अधिवेशन, मुङ्गेर आर्यधर्मप्रचा-

ইইয়াহিন। ভূতপূর্ব সভাপতি পরম ধর্মাত্মা ৮
রায় অন্নদা প্রসাদ রায় বাহাদুর মহাশয় সভাপতি-
য়কের আসন পরিগ্রহ করিয়াছিলেন এবং ধর্ম-
প্রচারক পত্র সম্পাদক শ্রীযুক্ত কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন
সেন মহাশয় আর্য সাধারণ (হিন্দি) ভাষায়
“ভারতীয় ধর্মরক্ষা” বিষয়িণী একটি বক্তৃতা করেন।
বক্তৃতা মধ্যে সনাতন আর্যধর্মের প্রতিভা ক্ষীণ
ইইবার বিবিধ কারণ এবং তাহা পুনরুদীপিত
করিবার উপায় স্বরূপ ধর্মচার্যাদি নিয়োগ দ্বারা
ভারতের সর্বতোভাবে সনাতন আর্যধর্মপ্রচার,
মূল গ্রন্থাদির মানুষ্যবাদ বহুল প্রকাশ, সংস্কৃত
ভাষাদির পুনরুৎকর্ষ সাধন প্রভৃতির উল্লেখ এবং
তদ্ব্যবস্থা কার্য্য স্থপত্যে চালাইবার জন্য এক লক্ষ
টাকা মূলধন সংগ্রহের প্রস্তাব করেন। ইহারই
উপস্থিত হইতে ধর্মপ্রচার কার্য্যাদি যথারীতি
নির্বাহিত হইতে থাকিবে। এই গুরুতর হিতকর
প্রস্তাব সর্ব সজ্জন কর্তৃক আনন্দপূর্বক অনুমোদিত
হইল, এবং পরম ধর্মোৎসাহী সভাপতি মহাশয়
এতৎ গুরুতর কার্য্যের সাহায্য জন্য ৪০০০ চারি
সহস্র টাকা দানাক্ষীকারপত্রে স্বাক্ষর করিলেন।
অতঃপর সভাপতিকে ধন্যবাদ দান পূর্বক সভা
বিসর্জিত হইল।

এই সময় হইতেই এই অভিনব ব্যাপারের
সূত্রপাত ও যথাসম্ভব কার্য্যারম্ভ হইল। “ধর্ম-
প্রচারক” সম্পাদকের যত্নে দেশ বিদেশ হইতে ধন
সংগৃহীত হইতে লাগিল এবং তিনি নিজ ব্যয়ে
দেশ দেশান্তরে, কোথাও স্থায় প্রবৃত্ত কোথাও বা
আহুত হইয়া ধর্মপ্রচার কার্য্য আরম্ভ করিলেন।
এই সময়েই এই কার্য্যক্ষেত্রের “ভারতবর্ষীয় আর্য-
ধর্মপ্রচারিণী সভা” নাম রক্ষিত, সভার উদ্দেশ্য*
নিয়মাবলী* এবং ধর্মচার্য্য সম্বন্ধীয় নিয়মাবলি*
লিপিবদ্ধ ও অবধারিত এবং ভারতের দিগ্দিগন্ত
হইতে নির্বাচিত অধ্যক্ষ মণ্ডলীর দ্বারা কার্য্যপ্রবাহ
চলিতে থাকিবে নিরূপিত হইল।

রিণী সাভামহুদপ মেন জুয়া যা। তস সভাকে
সভাপতি পরম ধর্মাত্মা রায় অন্নদাপ্রসাদ রায়
বাহাদুর মহাশয়নে সভাপতিয়ায়ককে আসনপর সু-
যোমিত জুয়ে যৌ অীমান কুমার অীজ্ঞা-
প্রসন্ন সেন “ধর্মপ্রচারক” পত্রকে সম্পাদক জীনে
“ভারতীয় ধর্মরক্ষা” ইস আশয় পর আর্থ
সাধারণ (হিন্দী) ভাষা মেন এক বক্তৃতা কী থী।
সনাতন আর্থধর্ম কী প্রতিভা ক্ষীণ হোনেকা ক্যা
ক্যা কারণ হৈ, অী ধর্মার্থ্যাদি নিয়ত করকে
ভারতকে সর্বতো ভাগ মেন সনাতন আর্থধর্মকা ফির
প্রচার করাবন্য, তত্থা সহিত মূল সংস্কৃত গ্রন্থ
সমূহকো ছপবাकर प्रकाश करना, संस्कृत भाषा
का पुनरुत्कर्ष साधन करना आदि जो इस धर्म
की पुनरुद्दीपनाका उपाय है, सो वक्तृता मেন भली
भान्ति प्रसिद्ध कियागया था, अी यह प्रस्ताव छेडा
गया कि इतना कार्य उत्तम रीति निवाहनेके अर्थ
एक लक्ष रुपये संग्रह होना चाहिये। इसी की
उपस्थत्व करके धर्मप्रचार कार्य्यादि यथा रीति
निर्वाह होता रहेगा। इस गुरुतर हितकर
निर्देश की सर्वसज्जन आनन्द पूर्वक अनुमोदन
किये अी परम धर्मात्माहि सभाधिनायक जी इस
गुरुतर कार्य की सहायताके अर्थ ४०००) चार
सहस्र रुपये दानाङ्गीकारपत्र में स्वाक्षर किये।
तत्पश्चात् सभाधिनायकको धन्यवाद देकर सभा
विसर्जन हुई।

इसी समयसे अभिनव व्यापारका सूत्रपात हो
यथासम्भव कार्य्यारम्भ हुआ। “धर्मप्रचारक”
सम्पादक जीके यत्नसे देश देशान्तरसे धन इकट्ठे
होने लगे अी वे निजव्यय स्वीकार करके, कहीं
स्वयं प्रवृत्त हुए कहीं बुझाये हुए, देश देशान्तर
में जा आकर धर्मप्रचार कार्य्यका प्रारम्भ किये।

इसी समय में इस कार्य्यभूमिका नाम “भारत-
वर्षीय आर्थधर्मप्रचारिणी सभा” रखा गया। सभा
का उद्देश्य* नियमवली* अी धर्माचार्य्य समन्धी
नियमवली* लिखगये अी निश्चय हुए, अी भारतके
दिग्दिगन्तसे निर्वाचन कियेहुए अध्यक्षोंसे सभाके
कार्य्य-निर्वाह होता रहेगा यह स्थिर हुआ।

द्वितीय अधिवेशन ।

सुद्धर तां २० आषाढ, शकाब्द १८०३ । ई० ७-८-८१ शनिवार ।

उपस्थित व्यवस्थापकगणेर नाम ।

श्रीयुक्त बाबू कालीप्रसाद चौधुरी—उपाधिनायक

ए कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन (धः, प्रः सः) कार्या
सम्पादक

ए बाबू देवी प्रसाद (डिपूटी कलेक्टर) सभासद

ए ए कमलेश्वरी प्रसाद (भू-स्वामी) ए

ए ए भगवतीचरण घोष ए

ए ए महेश्वरनाथ घोष ए

श्रीयुक्त बाबू कालीप्रसाद चौधुरी, उपाधिनायक
महाशय यथारतीत्यनुसारे सभाधिनायक केर आसन
ग्रहण करिलेन ।

१ । सम्पादक महाशय भारतवर्षीय आः, धः,
प्रः सभा प्रथमोच्छास, प्रथमाधिवेशन केर कार्य
विवरण पाठ एवं तत्पर सभा उद्देश्य ओ
नियमावली, धर्माचार्य सम्बन्धी नियमावली पाठ ओ
विवृत करिलेन ।

श्रीमान बाबू कमलेश्वरी प्रसाद महाशय केर प्रस्ताव
ओ अग्राह्य सभागणेर अनुमोदनानुसारे सभा केर वर्य
नियमे ये द्वादश जन मात्र व्यवस्थापक सभा केर सभा
थाकिबेन निरूपित छिन, तत्परिवर्ते विंशति
जन गृहीत हईते पारिवेन अवधारित हईल ।

२ । सम्पादक महाशय सभा केर १ म नियमानु-
सारे निर्वाचित व्यवस्थापक महाशयगणेर निकट
हईते उद्देश्य ओ सहायक केर एवं स्व स्व पद
ग्रहण सूचक ये समस्त पत्र पाईराछिलेन, तन्मध्य
सभाधिनायक पाकुड़वासी श्रीयुक्त राजा तारेश चन्द्र
पाण्डे बाहादुर, कानपुर के श्रीयुक्त बाबू महेश्वरनाथ
घोषाल, आलिगढ़ के “भारतवर्ष” पत्र सम्पादक
ओ पश्चिमोत्तर प्रदेशीय हाईकोर्ट केर उकील
श्रीयुक्त बाबू तोताराम वर्मा, मतिहारी के श्रीयुक्त
बाबू दरबारीलाल, सैयदपुर के श्रीयुक्त बाबू दीननाथ
गङ्गोपाध्याय महाशय केर पत्र गुलियर मन्त्र क्रमाश्वरे
सभामध्य विवृत करिलेन । सभा ताँहादेर एतावत
भारत ग्रहण जन्म विशेष आनन्द प्रकाश करिलेन,
एवं सभा केर सर्वसम्मतिक्रमे सम्पादकोक्त अग्राह्य
नियमादि समस्त ई अपरिवर्तित ओ अविचलित रहल ।

दूसरा अधिवेशन ।

सुद्धर आषाढ सुदी ११ शः १८०३ ।

ई० ६-८-८१ शनिवार ।

सभा में विद्यमान सभासदों के नाम ।

श्रीयुक्त बाबू कालीप्रसाद चौधुरी, उपाधिनायक

” कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेन,

(धः पुः सं) कार्यसम्पादक

” बाबू देवीप्रसाद, (डिः कलेक्टर) सभासद

” बाबू कमलेश्वरी प्रसाद, (भूस्वामी) ”

” बाबू महेश्वरनाथ घोष, ”

” बाबू भगवतीचरण घोष, ”

यथारतीसे सभा के उपाधिनायक श्री बाबू काली-
प्रसाद चौधुरी जी सभाधिनायक के आसन पर
सुशोभित छल ।

१ । भारतवर्षीय आर्थधर्मप्रचारिणी सभा के
प्रथमोच्छास वा पहिली सूचना, पहिली सभा
(प्रथमाधिवेशन) की प्रति, सभा के उद्देश्य श्री
नियमावली धर्माचार्य-सम्बन्धी नियमावली,
सम्पादक जीने पढ़कर सभासदों को सुनाया ।

बाबू कमलेश्वरी प्रसाद जी के निर्देश और
अन्यान्य सभ्य सज्जनों के अनुमोदनसे सभा के पत्र
नियम जिस में यह लिखा था कि व्यवस्थापक सभा
की सभ्यसंख्या द्वादश मात्र रहेगी, बढ़ल कर
उसके स्थान पर विंशति तक रह सकेगी, यह
निश्चय हुआ ।

२ । सभा के ३ म नियमानुसार देश देशा-
न्तरसे निर्वाचित किये हुए व्यवस्थापक महा-
शयों से जो लोग अत्यन्त उद्यम और सहायुभूति
देखाये और निज निजोचित पदों की स्वीकार कर
पत्र व्यवहार किये, उन में से सभाधिनायक
पकौड़वासी श्रीमान् राजा तारेशचन्द्र पाण्डे
बाहादुर, कानपुर के श्री बाबू महेश्वरनाथ घोषाल,
आलिगढ़ के श्री बाबू तोताराम वर्मा, (हाईकोर्ट के
वकील श्री भारतवर्ष पत्रसम्पादक) सैयदपुर के श्री
बाबू दीननाथ गङ्गोपाध्याय जी के लिखे हुए पत्रों के
अभिप्राय सम्पादक जीने सभा में प्रगट किया ।
उन्हें जो निज निज पदों की स्वीकार किये, इससे
सभा अतीव आनन्द प्रकाश करी । तदनन्तर
सभास्य सब किसीको सम्मतिसे सम्पादकोक्त अन्यान्य
नियमों विन बढ़ले स्थिर रहें ।

३। श्रीयुक्त बाबू कमलेश्वरी प्रसादेर प्रस्ताव
७ अधिकांश সভ्यगणेर अनुमोदनानुसारे स्थिर
हईल ये मुन्स्रेर प्रसिद्ध महाजन श्रीयुक्त बाबू
गङ्गाप्रसादके सभासद श्रेणीभूक्त करा हय एवं
तज्जन्म सम्पादक तौहाके पत्र लिखिवेन एवं उक्त
बाबू स्वपदास्वीकार पत्र पाठाईले तौहाके सभा
श्रेणीभूक्त करिवेन बलिया भार ग्रहण करिलेन ।

४। मुन्स्रेर आः, धः, प्रः सभार भूतपूर्व
सभाध्यक्ष मृत महात्मा राय अन्नदाप्रसाद राय बाहादुर
ये ४००० सहस्र मुद्रा दान स्वीकार ७ स्वीकार
करियाहिलेन, तौहार स्वर्गारोहणांते तौहार समस्त
धर्मार्थ सम्पत्ति कोर्ट अब् वार्डसेर तत्वावधानाधीन
हईले पर सम्पादक तदस्वीकृत अर्थ प्रार्थना पूर्वक
मुन्स्रेर कलेक्टर माहेबके आवेदन करेन, नेई
आवेदनपत्र यथाक्रमे बोर्ड कर्तृक ग्राह्य हईया
आईसे । तदनुसारे श्रीयुक्त कुमार आशुतोषनाथ
रायेर वैयक्तिक कार्याध्यक्ष महाशय गुरशिदावादेर
कलेक्टरके ये २८ ए मे, थः १८८१, २१८
संख्याक पत्र लेखेन, उक्त कलेक्टर तौहार प्रति-
लिपि अत्र सभार आपनार्थ मुन्स्रेर कलेक्टरके
प्रेरण करेन । मुन्स्रेर कलेक्टर उक्त पत्रेर
तृतीय सूचनार (Para) प्रतिलिपि तौहार ७ ई जून,
थः १८८१ तारिखेर २४ संख्याक पत्र द्वारा अत्र
सभार पाठाईया दियाह्लेन । एतद् पत्रेर मर्म एई
ये “यथन कतकगुलि मात्र साधारण लोकेर हस्ते
एत अधिक मुद्रा धर्मकार्योद्देशे दान करा
हईतेह्ले, तथन आमार बोध हय, मुन्स्रेर
कलेक्टर, सभार सम्पादक ७ सभासदगणेर निकट
हईते एरूप अनुवक्त पत्र स्वीकार करिया लईवेन
ये उक्त टाका छिर दिन गवर्नमेण्टेर हस्ते থাকिवे
एवं तौहार हृदमात्र लईया सभार कार्य नियोग
करिवेन एवं इहाई ये मृत दातार अभिप्राय छिल,
ताहा बोध करि, सम्पादक वा सभासदगण अव्वीकार
करिवेन ना ।” एतन्मह मुन्स्रेर कलेक्टर लेखेन
ये “सम्पादक उक्तमत अनुवक्त पत्र लिखिया देन
अथवा तौहार यदि कोन आपत्ति থাকे तवे ताहा
परिष्कार करिया ज्ञापन करेन ।

सम्पादक एई पत्रधानि पाठ करिले सभासद-
गण श्रीकुमार आ, ना, रायेर विषयाध्याक्केर पत्र
मर्मवगते अत्यन्त आश्चर्य हईलेन, एवं एई

२। श्री बाबू कमलेश्वरी प्रसाद जीके निर्देश
ओ अधिकांश सभ्योके अनुमोदनसे यह निश्चय
हुआ कि मुन्स्रेरके प्रसिद्ध महाजन श्री बाबू गङ्गा-
प्रसाद जीको सभासद बना लिया जाय ओ तन्नि-
मित्त सम्पादक जीने यह भार उठा लिया कि
उनने उक्त बाबूजीको इस आशय पर पत्र भेजेगे
ओ यदि बाबू गङ्गाप्रसाद जी इस बातको स्वी-
कार करे तो उनके नाम सभासदोंके मध्य में लिख
लिया जायगा ।

४। मुन्स्रेर आ, ध, प्र, सभाके भूतपूर्व सभा-
ध्यक्ष मृत महात्मा राय अन्नदाप्रसाद राय बाहादुर
ने जो ४००० रुपये दान स्वीकार ओ स्वीकार कर
गये, उनके परकीक सिधारने पर जब उनके समस्त
ऐश्वर्य कोर्ट अब वार्डस्के तत्वावधानके अधीन
हुआ तब सभाके सम्पादक जीने मुन्स्रेरके कलेक्-
टर साहबको इस आशयपर एक आवेदनपत्र भेजा
कि मृत महात्माके स्वीकार कियेहुए धन शीघ्र
मिले । उस आवेदनपत्र यथा क्रमसे बोर्डसे ग्राह्य
हो आया । तदनुसार श्रीमान कुमार आशुतोष
नाथ रायके वैयक्तिक कार्याध्यक्ष जीने जो पत्र नं
२१८, तां २८से, सन इसाई १८८१, कलेक्टर
गुरशिदावादको भेजा थ, इस सभाके विदितार्थ
उक्त कलेक्टर उस पत्र की प्रतिलिपि कलेक्टर
मुन्स्रेरको भेजे हैं । यहांके कलेक्टर साहब फिर
उस पत्र की तीसरी सूचना (पैरा) की प्रतिलिपि
(मेमो) नं ६४, तां ६६ जून, सन इसाई १८८१, इस
सभा में भेजे हैं । इस पत्रका आशय यह है—
“जब कौन साधारण (प्राईवेट) पुरुषोंके हात पर
इतनेसे रुपये धर्मकार्यार्थ दिये जाते हैं, तो मेरे
विचार यह कि मुन्स्रेरके कलेक्टर साहब, सभाके
सम्पादक ओ सभासदोंसे ऐसा एक अनुवन्धपत्र
लिखवाले कि उक्त रुपये बराबर गवर्नमेण्ट सिक्क-
रिट में रहे ओ उसका ह्रद सभाके कार्य में
नियत किया जायगा, ओ बोध होता है कि सम्पा-
दक ओ सभ्य सज्जन यह स्वीकार नहीं करेङ्गे
जो ऐसा ही मृत दाताका अभिप्राय था” । इसके
साथ मुन्स्रेरके कलेक्टर साहब और यह भी
स्चित्त किये कि “सम्पादक जी उक्त रीति अनु-
वन्ध पत्र लिख दें अथवा यदि कुछ आपत्ति या
उजुर रहे सो प्रगट करें ।”

सम्पादक जीने इस पत्रको पढ़कर सभासदोंको
सुनाये ।, आ, ना, रायके वैयक्तिक कार्याध्यक्षके
पत्रके अभिप्राय सुनकर वे लोग बड़े आश्चर्य माने

मन्त्रे मुद्गरेण कलेक्टर साहेबके पत्र लिखिवार जन्म सम्पादकके भारार्पण करिलेन ये “ये सभा विश्वस्तार सहित देश विदेशे विशेष मात्र ओ परिचित ओ याहार धर्मप्रचार कार्य (वाचनिक वक्तृता ओ “धर्मप्रचारक” पत्र द्वारा) भारतेर दिग्दिगन्तके आर्याभावे उद्दीपित करितेछे, एवं ये सभा लक्ष मुद्रा मूलधनेर अधिकारी हईया भारते धर्मप्रचारार्थ प्रवृत्त, ताहा कथनई झूठ वा संकीर्ण-मना लोकमण्डलीर सभा नहे। भारतवर्ष यथन एतए सभार कार्यार्थ लक्ष वा ततोधिक मुद्रा दान करिवे, तथन ४००० मुद्रार दायीइ कि तदपेक्षा अधिक? सभा ये मूलधनेर उपसहृ हईते कार्य करिवेन, तज्जन्म अनुवक्त पत्र लिखिया दिते पाऐन, किन्तु गवर्णमेण्टे सिकिउरिटीते टाका राखिते सम्यत नहेन, केनना अगोपाये मूलधनेर उपसहृ अनेक अधिक परिमाणे हईते पाऐर। गवर्णमेण्टेर दातव्य हृद अति अल्प, ताहाते सभार कार्य सौकार्य सिद्ध हईवे ना। मृत दातार ओ ये उपसहृ हईते कार्य निर्वह करिवार ईच्छा छिल ताहा गवर्णमेण्टे सिकिउरिटीते नहे, आमादिगेर सभार २२ नियमानुयायी उपसहृ हईते बुझिते हईवे। मुद्गरेण कलेक्टरेर पत्रोत्तर एतावन् उल्लेख करिया ताहार पाठार्थ २२ नियमेर अनुवाद प्रेरण कराओ आवश्यक।”

५। सम्पादकेर निकट ये विविध स्थान हईते प्राप्ता आपाततः २१२८/१० सङ्कित आछे, ताहा तिनि तृपुष्टिवर्द्धनार्थ येरूप कार्यो नियुक्त राखियाछेन, सर्वसम्यतिक्रमे आपाततः नैरूप धाकाई स्थिर रहिल।

६। श्रीयुक्त बाबू भगवतीचरण घोष महोदय प्रस्ताव करेन ये एही सभार कार्य कले मुद्गरेण हईते धनसंग्रहार्थ श्रीयुक्त बाबू कालीप्रसाद चौधुरी ओ श्रीयुक्त बाबू देवीप्रसाद (डिपुटी कलेक्टर) भारग्रहण करेन। सम्पादक एतद् प्रस्तावनाय अनुमोदन करिलेन उक्त बाबू द्वय कार्य-भार ग्रहण अनुग्रह पूर्वक स्वीकार करिलेन।

७। सम्पादकेर प्रस्तावानुसारे सकलैह अनुमोदन करिलेन ये देश विदेशीय व्यवस्थापक महोदय मात्रैह एही गुरुतर कार्येर जन्म अनुग्रह पूर्वक अर्थ संग्रहण भार ग्रहण करेन।

श्री सम्पादक जीको एक पत्र कलेक्टर साहब मुद्गरेको इस आशयपर लिखनेको भार दिया गया कि जिस सभाने विश्वस्तारके साथ देय देयान्तर में विशेषरूप मान्य श्री परिचित है, जिस सभाका धर्मप्रचार कार्य (वाचनिक व्याख्यान श्री धर्मप्रचारक पत्रसे) भारतवर्षके दिग्दिगन्तको आर्य भावसे उद्भाता श्री चेताता जाता है, और जिस सभाने लाख रुपये मूलधनके अधिकारी बने भारतवर्षीय कल्याण कार्यार्थ प्रवृत्त हो रहा है, वह सभा कभी झूठ वा संकीर्णचित्त सामान्य सभा नहीं है। वह सभा जब भारतवर्षसे एक लक्ष वा उससे अधिक रुपये इकट्ठे कर कार्य करना चाहती है, उसके सामने ४००० रुपयेका दायील क्या अधिक है? मूलधन की उपस्थितसे जो कार्य निवाहा जागा तदर्थ सभा अनुवक्त पत्र लिख दे सकती है, किन्तु गवर्णमेण्टे सिकुरिटी में रुपये रखना स्वीकार नहीं करती है, क्यों कि गवर्णमेण्टेसे खूद अत्यन्त अल्प मिलता है, उल्लेख सभाके कार्य में हानि पड़ने लगी श्री स्वर्गारोही दाता की जो उपस्थितसे काम चलानेकी इच्छा थी सो गवर्णमेण्टे सिकुरिटी करके नहीं, हमारी सभाके २२ नियमानुसार उपस्थितसे बूझना चाहिये। मुद्गरेके कलेक्टर साहबके पत्रोत्तर सहित उनके पाठार्थ २२ नियमका उक्त्या भी अङ्कुरेजी में भेजना चाहिये।

५। २१२८॥ जो कि विविध स्थानसे मिला हुआ अब सम्पादक जीके पास है, उसकी दृष्टिके लिये वे जिस काम में अब लगा रहे हैं, सर्वसम्यक-तिसे वह अब बैसाही रहे, यह निश्चय हुआ।

६। श्री बाबू भगवतीचरण घोष जीने यह निर्देश किया जो सभाके कार्यके लिये श्री बाबू कालीप्रसाद चौधुरी श्री बाबू देवीप्रसाद (डि: कलेक्टर) ने मुद्गरे में से धन संग्रहार्थ भार उठावे, सम्पादक जीके अनुमोदनसे उक्त दो महात्मा अनुग्रह कर इस भारको उठाना स्वीकार किये।

७। सम्पादक जीके निर्देश श्री सब किसी की अनुमोदनसे यह निश्चय हुआ कि इस गुरुतर कार्यके अर्थ देय देयान्तरके व्यवस्थापक महात्मा भी ज्ञाता कर धनानामके भार उठावे।

८। श्रीगुरु बाबू भगवतीचरण घोष महाशय प्रस्ताव ओ अन्त्या सभ्यगणेर उ०साहपूर्ण अनुमोदन ओ उद्देजनाय ईहा स्थिर हईल ये एत० सभार संग्हापक ओ सम्पादक श्रीगुरु कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेन महाशय भारतेर दिग्दिगन्ते पर्याटन पूर्वक वक्तृतादि द्वारा सर्वनाधारणके धर्मप्रचारेर कार्य-कार्यता बूझाईया उद्देजना ओ चेका ना करिले सभार आशानुरूप अर्थ संगृहीत ओ उद्देश्य सं-मिद्ध ह०या अतीव कठिन। अतएव मासिक ४०० बा ५०० टाका उपसहोपवोगी मूलधन संगृहीत हई-लेई अथवा तिनि सुविधा बोध करिलेई प्रथमतः भाः, आः, धः, प्र, सभार कार्यार्थ त्रती हईया यात्रा करिवेन, त०परे क्रमशः धर्माचार्य नियो-गादि अन्त्या कार्ये मनोवोगी ह०या याईवे।

एतदनन्तर सभाधिनयकके धन्यवाद पूर्वक सभाभङ्ग हईल।

श्री श्रीकृष्णप्रसन्न सेन।

कार्यसम्पादक।

धन्य भारत भूमि !!

अध्यापक मोक्षमूलार साहेब बहरमपुर निवासी श्रीमन्नाबुराम दास सेन महाशयके एक थानि पत्रे लिखियाछेन “यदिओ आमि कथन भारत-वर्षे गमन करि नाई सत्य, किन्तु आमार जीवनेर अधिकांश समय भारतवर्षीय शास्त्र ओ आर्यवर्गेर विरचित ग्रन्थादि पाठेई अतिवाहित करियाछि। आमि यदि भारतवर्षे जन्म ग्रहण करिताम ताहा हईले बड़ सुखेर हईत। एक्केणे आमि पूर्वकालेर न्याय भारतवासिनिगेर जातीय भाव ओ उ०साह एव० ताहादिगके प्राचीन शास्त्रपाठे त०पर देखिते नितान्त ईच्छा करि। आपनादिगेर भविष्य० नाहाते अतीत अपेक्षा उत्तम ओ उज्ज्वलतर हय तद्विषये आपनादिगेर विशेष यत्न करा कर्तव्य। ईउरोपेर याहा उ०कृत् ताहा ग्रहण करन किन्तु ईउरोपीय हईवार चेका करिवेन ना। आपनारा आर्यनामेई परिचित थाकून अर्था० ये मनुष्य सन्तान आछेन सेई मनुष्य सन्तानई थाकून। पूण्यमयी भारतभूमि रक्षमस्तान हईया, सत्यानु-सक्ताने यत्नवान थाकिया एव० सेई अविच्छेद्य परमा-

८। श्री बाबू भगवती चरण घोष जीके निर्देश श्री अन्त्या सभ्य सज्जनोंके उत्साह पूर्वक अनुमोदन श्री उत्तेजनासे यह स्थिर ऊँचा जो इस सभाके संस्थापक श्री सम्पादक श्री कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न सेन जीको भारतभूमिके दिग्दिगन्त में पर्याटन पूर्वक वक्तृतादिके द्वारा उत्तेजना श्री चेष्टा किये बिना सभा की आशाशुरूप धनागम होना अतीव कठिन है, अतएव ऐसे कुछ रुपये जमने पर, जिससे मासिक ४०० बा ५०० रुपये उपसल हो, अथवा जितना शीघ्र वे स्वयं सुविधा समझे, पहले ही भारतवर्षीय आः, धः, प्रः सभाके कार्यार्थ व्रत लिये जाए यात्रा करेंगे। तत्पश्चात् क्रम क्रमसे धर्माचार्यनियोगादि अन्यान्य कार्य में दक्षचित्त होना चाहिये।

तदनन्तर सभाधिनयकको धन्यवाद देकर सभा विसर्जन ऊँई।

श्री श्रीकृष्णप्रसन्न सेन।

कार्यसम्पादक।

भारतभूमि ! तू धन्य है !!

बहरमपुरके रहसि श्रीमन्नाबू रामदास सेन जीको अध्यापक मोक्षमूलार साहेबने एक पत्र में लिखा है, “यदिच यह सत्य है, कि मैं भारत-वर्ष में कभी नहीं गया, किन्तु भारतवर्षीय शास्त्र श्री आर्यवर्गके बनायेऊए ग्रन्थादिके पठन हीसे मैं ने मेरे जीवनका अधिकांश समय व्यतीत किया है। मैं यदि भारतवर्षीय होता तो परम सुख मानता। अब मैं पूर्णान्तःकरणसे यही चाहता हूँ, कि वर्तमान भारतनिवासीगण पूर्व कालके समान जातीय भाव श्री उत्साह देखावे श्री प्राचीन शास्त्रोंके पठन में तत्पर रहें। आप सबको अब ऐसा विशेष यत्न करना चाहिये, कि जैसे आप-लोगोंको भविष्यत् अतीतसे भी उत्तम श्री अधिक उज्ज्वल होय। यूरोपके जो कुछ उत्तम है सो ग्रहण करना। परन्तु साहब बननेकी चेष्टा न कीजिये। आप लोग “आर्य” नाम हीसे प्रसिद्ध रहिये, अर्थात् जो मनुके सन्तान हैं, सो मनुके सन्तान ही बने रहिये। पुण्यमयी भारतभूमिके सुसन्तान बनकर, सत्यानुसन्धान में यत्नवान रह-कर श्री उस परमात्माका उपासक बनकर निराजते

आर उपासक हईया अवस्थिति करन. यँहाके ना जानिते पारिया मानवगात्रेई कोन ना कोन रूपे पूजा करिया থাকे, अथऽ यँहाके प्रत्येकेई आर ओ प्रकृतार्थयुक्त श्रेयस्कर कार्यानुष्ठान द्वारा परिसेवन पूर्वक सत्य ओ ज्ञान लाभेर परिचय दिया থাকे ।” हा ! एई भारतमित्र महाश्वर गधुर बाक्य गुलि पाठ करिले कोन भारतमन्त्रानेर हृदय तन्त्री आनन्दे नृत्य ना करिया उठे । भारत ! उक्त साधुहृदय महोदयका सत्परामर्श पर ध्यान दीजिये ।

अकास्पद श्रीयुक्त धर्मप्रचारक सम्पादक

महाशय मान्यवरेषु ।

तत्त्व विज्ञान ।

आपनार ४६ संख्यक धर्मप्रचारक केर “निरुद्धेश” शीर्षक विज्ञापन पाठे अवगत हईलाम ये श्रीश्रीश्री ओ ब्रह्मलोक हईते तँहार बनितार उद्देशे अवनीते संवाद घोषणा करियाछेन । आमि तद्भूमिगत पुरस्कारे प्रयुक्त हईया प्रश्नभावे अनुसन्धाने प्रवृत्त हउतः कोन स्थानेर एकटी जनरवे सन्निहान हईया प्रकाश करितेछि ये एक स्थाने कतकगुलि लोक समावेश हईया एई कलरव करितेछेन “आमादिगेर मध्ये वखन भक्तिर उदय हईयाछे, आइन आमरा एई नूतन विधान अवलम्बन करिया ब्रह्मानन्द उपभोग करि, एई नूतन भावेर भक्ति श्रोते सर्वजातीय धर्म-भाव प्रवेश कराय जगत् प्रावित हईवे ।” “भक्ति” एवं “ब्रह्मानन्द” एई शब्द द्वय आमार कर्णकुहरे प्रवेश करिवायात्र भाविलाम. ईहा तो ब्रह्म-लोक केर कथा, अतएव एई खानेई भक्तिर आगमन हईया থাকिवे । एईरूप मने करिया आमि किछि अन्तराले दण्डायमान थाकिया निरीक्षण करिते लागिलाम । दृष्ट हईल एकटी अर्द्धवृद्धनवती युवती तथाय चपलार आर प्रकाशित हईयाई तत्कणां अन्तर्हित हईलेन । तँहार समागमगात्रेई येन काहार काहार मुखे आश्चर्य भावावेशेर छाया पड़िल आवार क्षणमध्येई ताहा विलुप्त हईल । ऐन्द्रजालिकेर आर ताहार हाव भाव लक्षणदि भालरूपे बुझिते पारिलाम ना ? यदि केह

रहिये जिनको बिन जान सकें । मानवमात्र ही किसी न किसी रूपसे पूजा किया करता है, अथवा न्याय श्री प्रकृतार्थयुक्त श्रेयस्कर कार्यके अनुष्ठान करके जिन की सेवापूर्वक सत्य श्री ज्ञान लाभका परिचय दिया करता है ।” हा ! इस भारतमित्र महात्माके मधुर वचन पढ़कर कौन भारतमन्त्रान की हृदयतन्त्री आनन्दसे न द्रव्यकर उठती है । भारत ! उक्त साधुहृदय महोदयका सत्परामर्श पर ध्यान दीजिये ।

अकास्पद श्रीमान् धर्मप्रचारकसम्पाद

मान्यवरेषु

तत्त्वज्ञान ।

आपके ४५ संख्यक धर्मप्रचारक में “पता नहीं मिलता” इस आशय की सूचना पढ़कर मालूम हुआ जो श्री श्री श्रीश्रीकाररूप पुरुषोत्तम जीने आपनी भार्याका पता लगानेके अर्थ संसार में सम्वाद घोषणा किया । उस में लिखा हुआ पुरस्कारके लालचसे मैं प्रच्छन्नभावसे अन्वेषण में प्रवृत्त हुआ । किसी एक स्थानके गोरगुलसे मेरा सन्देह उपजा, सो मैं प्रगट करता हूँ । किसी स्थान में कितनेसे मनुष्य इकट्ठे होकर यह गुल-मचाते हैं “हम सबके मध्य में जब भक्तिका उदय हुआ” अब आओ हमलोग इस “नूतन विधान”के आशय लेकर ब्रह्मानन्दका उपभोग करते रहें, इस नवीन रीति की भक्तिप्रवाह में सर्व जातीय धर्मभाव आजानेपर जगत् प्रावित होनेवाली है ।” “भक्ति” श्री “ब्रह्मानन्द” वे दोशब्द मेरे कर्णकुहरे में पैठने हीसे मैंने सोचा किये तो ब्रह्मलोक की वास्ता है, मालूम होता है कि यहां ही भक्तिका शुभागमन हुआ । इतना विचारकर मैं किञ्चित् अन्तराल में खड़े खड़े देखने लगा । वहाँसे यह देख पड़ा कि एक अर्द्धवृद्धनवती युवती चपलाके समान चमककर झट अन्तर्धान होगयी । उनके समागम हीसे ऐसा सूझ पड़ा कि किसी किसीके मुँहपर एक आश्चर्य भावावेश की छाया पड़ी, फिर क्षणभर हीमें सब मिट गयी । इन्द्र-जालीके समान उनके भाव लक्षणा आदि मैं कुछ जली भांति समझ न सका । यदि कोई उनकी

तौहाके चिन्ते पारैन आमि देखाइया दिव ।
एकणे प्रार्थना এই आपनार विज्ञापकेर प्रिय-
तमार प्रकृत लक्षण कि प्रकाश करिले अगुहूत
हईव एवंग तौहार अनुसरणे प्रसुत থাকिव ।

कञ्चुचिं तद्वागुसन्धायी

ब्रह्मलोकविनोदिनी भक्तिर ये स्थाने समागम
हईवे সেই परम पवित्र धाम पूर्णानन्देर् नौगङ्गे
आमोदित हईवे । तौहार समागममात्रेई लोक-
मण्डली अनन्यकर्मा हईया एकतान चित्ते राजा
परौष्कितेर न्याय तौहार पतिर गुणानुवाद अवगे
अभिनिविष्ट हईवे ; मुनिपुङ्गव शुक्देवेर न्याय
तद्गत चित्ते हरिगुणकीर्तने निमग्न हईया याईवे,
दैत्यकुलपावक प्रह्लादेर न्याय निर्धार सहित
तन्नाम स्मरण परायण থাকिवे, उर्कवेर न्याय तत्पद
परिसेवने आपनाके निरन्तर कृतार्थ मने करिवे ;
अम्बरीषेर न्याय निर्मलभावे तौहार अर्चनाय प्रवृत्त
हईवे ; अनीतिसूत क्रुवेर न्याय तत्पदरविन्द
बन्दने आनन्दित ओ निश्चलचित्त থাকिवे ; हनु-
मानेर न्याय नारायणेर दासत्वे त्रती हईया त्रि-
जगतेर परम पद तुच्छ करिवे ; अर्जुनेर न्याय
तत्सह सत्यता ओ एकहृदयता स्थापन करिवे एवं
दानवदलतिलक बलिर न्याय तौहाके आज्ञा निवेदन
करिया दिवे । येथाने এই सकल लक्षण दृष्ट हईवे
नेई थानेई जानिवेन निःशुबिलासिनी प्रकृत भक्तिर
उदय हईयाछे । आरओ दोगेवेन नृत्य ओ निश्चलता
हास्य ओ रोदन एकत्रे आविस्मयितभावे तौहार
निकट रहियाछे एवंग आज्ञाबोध ओ वैराग्य नामे
तौहार पुष्ट कलेवर प्रियपुत्र द्वय तौहार मङ्गलमय
हस्तद्वय धारण करिया विचरण करितेछे एवं मुक्ति
नाम्नी दासी तौहार सेवाय सदाई तत्पर रहि-
याछे । संक्षेपे भक्तिर परिचारक आर्यावागीर
अतिश्रुति करिलाम । यदि प्रेक्षणी भक्ति प्राप्ति हयैन
तवे अवशुई आपनि विज्ञापनानुसारे पुरस्कार
पाईवेन । किन्तु सावधान, भक्तिर भाग्यारिणी अम-
मयी भामिनीर कूहकमन्त्रे विमोहित हईवेन ना ।

५०, ५१, ५२ ।

पहचान सके तो मैं देखा दूँगा । अब आपसे
मेरी यह प्रार्थना है, कि आपके विज्ञापक की प्रिय-
तमाका लक्षण आदि शिखर सुझे अलुप्तहीत
कीजिये, मैं ठूढ़ता रहूँगा ।

कस्यचित् तत्त्वागुसन्धायी ।

ब्रह्मलोकविनोदिनी भक्तिका समागम अहांही
होगा, वह परम पवित्र धाम पूर्णानन्द की सुग-
न्धतासे आमोदित हो जायगा । उनके समागम
होनेहीसे लोकमण्डली अनन्यकर्मा होकर एक-
तान चित्तासे राजा परौष्किते नाई उनके पतिको
गुणानुवाद अवगण में अभिनिविष्ट होंगे ; मुनि-
पुङ्गव शुक्देव जीके समान तद्गतचित्त होकर हरि-
गुणकीर्तन में निमग्न हो जाऊँगे ; दैत्यकुल पावक
प्रह्लादजीके नाई निष्ठाके सहित उनके नाम स्मरण
में तत्पर रहेंगे ; उर्ध्वजोके समान उनके पादार-
विन्दकी सेवा में अपनेको निरन्तर ज्ञतार्थ मानेंगे ;
अम्बरीषके समान निर्मल रीतिसे उनकी अर्चना
में प्रवृत्त होंगे । सुनीति महारानीके पुत्र ध्रुवजीके
समान तत्पदारविन्द-वन्दनासे आनन्दित औ नि-
श्चलचित्त रहेंगे ; हनुमानजीके समान नारायणको
दासत्व करतेहुए त्रिजगत्को परमपदको तुच्छ
समझेँगे ; अर्जुनके समान सरव्यता औ एकहृद-
यता उनसे स्थापन करेँगे औ दानव-दलतिलक बली
राजाके नाई उनके निकट आज्ञानिवेदन कर देंगे ।
ये सब लक्षण अहां ही देख पड़ेँगे ; जान लेना कि
अहांही विष्णु विलासिनी प्रकृत भक्तिका उदय हुआ
है । और यह भी देख लेना जो वृत्त्य औ निश्च-
लता, हास्य औ रोदन विन परस्पर विरोध किये,
एकट्टे उनके समोप रहें हैं और आमबोध वो
वैराग्य नाम उनके दो पुष्टकलेवर प्रियपुत्र उनके
मङ्गलमय हस्तद्वय धारण पूर्वक विचरते हैं औ
मुक्तिनाम दासी उनकी सेवा में सदा ही तत्पर
रही है । मैं ने भक्तिको यह आननेके अर्थ आदि-
योंकी कही ऊई वाणियों की प्रतिध्वनि संक्षेपसे
कर दिया । यदि इस भान्तिका आप पाइये तो
अवश्य ही विज्ञापनानुसार पुरस्कार आपके हाथ
लगेगा, परन्तु इतना सावधान रहना कि भक्तिका
भाण्ड करने वाली अममयी भामिनीके मायामन्त्र
में विमोहित न होइये ।

५०, ५१, ५२ ।

प्राप्त पुस्तकें समालोचना ।

प्राप्त पुस्तकों को समालोचना ।

१। **उर्मिला-काव्य** । श्रीमद्बाबु देवेन्द्र नाथ सेन प्रणीत । (मूल्य १० चारि आना मात्र) । पति विरह-विधुरा उर्मिलार उक्तिमाला अमिताकरे, फूलबालादिगेर वचन-माधुरीते मिश्रित हईया काव्यानि रचित हईयाछे । काव्येय स्थाने स्थाने कविके भावसागरेर गभीर गर्भे मग्न हईते देखिया आमरा अतीव आनन्दानुभव करिলাম । फूलबालादिगेर सरल हाशुविकाशे ओ अकपट भाव माधुर्य कवितावली यथोचित मनोहर रूप धारण करिग्याछे । कविर भावुकता प्रशंसनीय ।

२। **यमलोक यात्रा** । ब्रह्मावनन्द श्रीमन्मान्यवर राधाचरण गोस्वामी कर्तृक प्रणीत ओ प्रकाशित । मूल्य ८/० छुई आना मात्र । पुस्तिका-थानिर प्रथमांश रहस्यजनक ओ उपसंहारांश बीभत्ससंपूर्ण नरककुण्डेर दृश्यालयाय रचित हई-याछे । गोस्वामी महाशय यदि एतन्मध्ये स्वर्गराज्येर विविध स्तर ओ तन्त्र स्थान निगामीगणेर अपूर्व सुखसौभाग्येर चित्र देखाईतेन तबे आमरा आरओ आनन्दित हईताम, केन ना तँहार नायकके केवल नरक दर्शन करिते देखिया, अतीव दुःखित हईताम । तथाच ईहा अवशुई श्रीकार करि, ये पापाचारेर विषम परिणाम दर्शने अनेक पाठकेर चेतन्योदय हईबे ।

३। **शिक्षासार** । ब्रह्मावनन्द श्रीमद्राधा-चरण गोस्वामी महाशयेर द्वारा संगृहीत । मूल्य ८/० एक आना मात्र । ईहाते समीचीन ओ परम हितजनक १५० नीति उपदेश आर्यासाधारण (हिन्दी) भाषाय प्रकाशित हईयाछे । आवाल, बुद्ध, ओ श्रीपुरुषादि सकलैरई पाठोपयोगी बलिते हईबे, विशेषतः विद्याध्ययनशील बालक मात्रैरई सावहितचित्ते ईहा पाठ करा कर्तव्य । भाषा प्रशंसनीय हईयाछे ।

४। **श्रीमती सुमति उपाख्यान** । श्रीमन्मान्यवर बाबु कालीप्रसाद चौधुरी प्रणीत ओ तत्कर्तृक मुद्रेर हईते प्रकाशित । मूल्य ८/० छुई आना मात्र । ईहाते नारीगणेर चरित्र-त्रेर पवित्रता रक्षार्थ सङ्केत करा हईयाछे ।

१। **उर्मिला-काव्य** । श्रीमद्बाबु देवेन्द्र नाथ सेनजीका बनाया छुआ । मौल्य १० चारि आना मात्र । “फूलबालों की वचन-माधुरीसे मिलोज्झई पति-विरह-विधुरा उर्मिला की कात-रोक्ति समूह करके अमिताकर में इस काव्य को रचना है । काव्यके किसी किसी स्थान में कवि की भाव-सागरके गभीर गर्भ में मग्न होते देखकर हम अतीव प्रसन्न हुए । फूलबाले सबके सरल हास्य विकाश औ छल कपटाईसे रहित मधुर भावसे कवितावली यथोचित मनोहर रूप धरी है । कवि की भावुकता शक्ति प्रशंसनीय है ।

२। **यमलोक की यात्रा** । ब्रह्मावनन्दके श्रीमन्मान्यवर राधाचरण गोस्वामीजीसे बनायी औ प्रकाश की गयी है । मौल्य केवल ८/० । इस पुस्तकके प्रथमांश रहस्यजनक औ अन्तभाग बीभत्स रससे पूर्ण नरककुण्डके दृश्य समूहसे रचे गये हैं । गोस्वामी जी यदि इस में स्वर्गराज्यके भान्ति भान्तिके शोभायुक्त धाम औ तत्तत् स्थान निवासी-गणके अपूर्व सुखसौभाग्यका चित्र देखाते तो हम औरभी प्रसन्न होते क्यों कि उनके नायकको केवल नरक देखते ही देखकर हम अत्यन्त दुःख माने । तथाच हम यह अवश्य ही श्रीकार करते हैं जो पाप कर्मका परिणामफल देखकर बड़तेरे पाठक सज्जन सचेत होंगे ।

३। **शिक्षासार** । ब्रह्मावनन्दके श्रीमद्राधाचरण गोस्वामीजीका संग्रह किया छुआ । मौल्य ८/० मात्र । इस में समीचीन औ परम हित जनक १५० नीतिपूर्ण उपदेश, भाषा में प्रकाशित छुआ हैं । आवाल ब्रह्म औ श्रीपुरुषादि सबके पठनोपयोगी छुआ, विशेषतो विद्याभ्यासी करेक बालकको सावहितचित्ततासे पढ़नाही चाहिये । रचना प्रशंसनीय छुई है ।

४। **श्रीमती सुमति उपाख्यान** ।

श्रीमन्मान्यवर बाबु कालीप्रसाद चौधुरी जीने बनाकर मुद्रेरसे प्रकाश किया है । मौल्य ८/० मात्र । नारियोंके चरित्र को पवित्रता रक्षार्थ सङ्केत इस में किया गया है । श्रीमात की

শিক্ষিতা ও অশিক্ষিতা স্ত্রীমাত্রেই এক এক বার ইহা অভিনিবেশ পূর্বক পাঠ বা শ্রবণ করিলে, অবশ্যই উপকার বোধ করিবেন। আজ কাল নাটক ও নবন্যাসে বঙ্গদেশ আচ্ছন্ন হইয়া গেল, কিন্তু সরলভাবে চরিত্র সংগঠনের উপদেশমূলক পুস্তক অতি অল্পই দেখিতে পাওয়া যায়। ভারতনারীর একমাত্র অমূল্য নিধি “সতীত্ব” রক্ষার সঙ্গপদেশ দানের প্ররতি জনা মাননীয় কালীপ্রসাদ বাবুকে আমরা ভূরি ভূরি ধন্যবাদ দিলাম।

৫। উপদেশায়ত। বৃন্দাবনস্থ শ্রীমন্মান্যবর মধুসূদন গোস্বামী মহাশয় কর্তৃক দেবনাগরাক্ষরে মূল ও ভাষা প্রকাশিত হইয়াছে। ১১টী মাত্র সরল সংস্কৃত শ্লোকে কৃষ্ণভক্তির উদ্দীপনা, লক্ষণ ও ভাবাদি পাঠ করিয়া বিশেষ আনন্দলাভ করিলাম। মানব হৃদয়ের কোমল ভাব ভক্তির শিক্ষা দানে গোস্বামী মহাশয় প্রযত্নবান দেখিয়া, চিত্ত প্রফুল্ল হইল। ভাষা উত্তম হইয়াছে।

কৃতজ্ঞতাসম্বন্ধে ৪র্থ বর্ষের মূল্যপ্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীমদ্বাবু আখেরী কান্দজী প্রসাদ,	বরহরোয়া	৩/০
.. কেশবনাথ মিত্র,	রামপুরহাট	৩/০
.. কালীপ্রসাদ চৌধুরী,	মুন্সেং,	৩
.. মহেন্দ্রনাথ রায়,	ঐ	৩
.. বলাকীলাল মহাজন,	ঐ	৩
.. পাক্ষতীচরণ নন্দী,	জামালপুর,	২
.. জানকীনাথ ভট্টাচার্য্য	ঐ	২
.. বৈদ্যনাথ বরাট	ঐ	২
.. কেশবনাথ রায় (শ: ১৮০৩) কলিকাতা		২১/০
শ্রীমৎ পণ্ডিত কৃষ্ণ চন্দ্র রায়,	আই হাই	২১/০
শ্রীমদ্বাবু মধুসূদন চৌধুরী,	হাবড়া	২১/০
.. শত্ৰুঘ্ন বিদ্যাস	মুন্সেং	১
.. পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়, (শ: ১৮০২)	কলিকাতা	১
.. শ্রীনাথ ঘোষ, (শ: ১৮০২—৩)	ঐ	২৫০
.. শত্ৰুঘ্ন ঘোষ, (শ: ১৮০২—৩)	ঐ	১১/০
.. অবিনাশ চন্দ্র দে, (ঐ)	ঐ	২৫০
.. জ্ঞানেন্দ্র নাথ গুপ্ত,	ঐ	১১/০
.. কান্তিচন্দ্র মুখোপাধ্যায়,	ঐ	১১/০
.. বংশী লাল,	ভগনপুর	১১/০
.. রঘুনাথ সহায়,	ঐ	১১/০
.. হরিশ্রী প্রসাদ মিত্র,	ঐ	১১/০
.. কিশোর লাল মিত্র,	ঐ	১১/০
.. হেমচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	লক্ষৌ	১১/০
.. গঙ্গাধর ঐ, (শ: ১৮০২)	মুরসিবাদ	১১/০
.. জ্ঞানেন্দ্র নাথ,	রাজমহল	১১/০
.. ক্ষেত্রনাথ ঘোষ,	আমলগোল	১১/০
.. সারদাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায়,	সয়াহুমকা	১১/০
.. বিপিন চন্দ্র রায়,	কালীগঞ্জ	১১/০

বাহে শিক্ষিতা বা অশিক্ষিতা হৌ, এক এক বার भी वे यदि दत्तचित्त हुए पढ़े वा सुने तो अवश्य ही कुछ उपकार मिलेगा। आज कल नाटक नवन्यासोंसे बङ्गदेश छाया गया, किन्तु, सरल रीतिके साधु चरित निरर्माणके अर्थ उपदेशपूर्ण पुस्तक अति अल्प ही देखने में आती है। भारत-नारीके एकमात्र अनमूल्य निधि “सतीत्व” की रक्षा हेतु सदुपदेश दानार्थ प्रवृत्ति अन्य माननीय कालीप्रसाद बाबुको हम भूरि भूरि धन्यवाद दिये।

५। उपदेशायत। बृन्दावनके श्रीमन्मान्यवर मधुसूदन गोस्वामीजीने देवाक्षर में मूल औ भाषा प्रकाश किया है। केवल ११ सरल संस्कृतवाक्य श्लोक में कृष्ण-भक्ति की उद्दीपना, लक्षण औ भावादिके पठनसे हम बड़े प्रसन्न हुए। मानव-हृदयके कोमल भावभक्ति की शिक्षादान में गोस्वामी जीकी प्रयत्न करते हुए देखकर चित्त-प्रफुल्ल माना। भाषा उत्तम ऊई है।

कृतज्ञतापूर्वक ४थ वर्षकी मूल्यप्राप्ति स्वीकार।

श्रीमद्वাবु आखरी कान्दजीप्रसाद,	बरहरोवा	२।=
.. केशवनाथ मित,	रामपुरहाट	२।=
.. कालीप्रसाद चौधुरी,	मुन्सै	१)
.. महेंद्रनाथ राय,	..	१)
.. बलाकीलाल महाजन	..	१)
.. पाल्खीचरण नन्दी,	जामालपुर	२)
.. जानकीनाथ भट्टाचार्य,	..	२)
.. वैद्यनाथ बराट,	..	२)
.. केशवनाथ राय,	कलकत्ता	२।=
.. गङ्गधन्व विद्यास,	मुन्सै	२)
श्रीमत्यण्डित कृष्णचन्द्र राय,	आइहाट	२।=
श्रीमद्वাবु मधुसूदन चौधुरी,	हाबड़ा	२।=
.. पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय, (श: १८०२)	कलकत्ता	१।=
.. बंशीलाल घोष, (श: १८०२-३)	..	२।।
.. मरचन्द्र घोष, (श: १८०२)	..	१।=
.. अधिनाथचन्द्र दे. (.. ३)	..	२।।
.. प्रानेन्द्रनाथ गुप्त,	..	१।=
.. कालिचन्द्र मुखोपाध्याय,	..	१।=
.. बंशीलाल,	भागपुर	१।=
.. रघुनाथ सहाय,	..	१।=
.. हरिप्रसाद मित,	..	१।=
.. केशोरलाल मित,	..	१।=
.. हेमचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	लक्ष्मी	१।=
.. गङ्गादास, .. (श: १८०२)	हरिदाबाद	१।=
.. ज्ञानलाल साह,	राजमहल	१।=
.. कृष्णनाथ घोष,	आइलखौड	१।=
.. सारदाप्रसाद मुखोपाध्याय,	सयाहूमका	१।=
.. विपिनचन्द्र राय,	कालीगञ्ज	१।=

শ্রীমদ্বাবু মণুরানথ ঘোষ,	গাউবাক্স	১১/০
,, রত্নগোবিন্দ চৌধুরী,	করিমগঞ্জ	১১/০
,, শ্রীমন্ত রায় কবিরাজ,	ভবানীগঞ্জ	১১/০
,, দীননাথ দাস, (শ: ১৮০২)	শ্রীহট্ট	১১/০
,, কালীদাস মুখোপাধ্যায়, (শ: ১৮০২-০)	কলিকাতা ২৬	
,, রাসবিহারী বসাক (শ: ১৮০২)	ঐ	১১/০
,, মতিলাল সেন,	মুর্শিদাবাদ	১১/০
,, মহিমাচরণ আচার্য্য,	ঐ	১১/০
,, জগজ্জয় রায়,	ঐ	১১/০
,, কৈলাশচন্দ্র রায়,	ঐ	১১/০
,, কৃষ্ণচন্দ্র বসু,	ঐ	১১/০
,, তারাদাস চট্টোপাধ্যায়,	হুগলী	১১/০
,, নীলমোহন মুখোপাধ্যায়,	বাঁকা	১১/০
,, কৃষ্ণেন্দ্রনাথ সরকার, জমীদার,	শুদলা	১১/০
,, তারাপ্রসাদ রায় চৌধুরী,	হুব্বাজপুর	১১/০
,, গোপাল গোবিন্দ চৌধুরী, জমিদার ইন্দানগর		১১/০
,, দীননাথ প্রামাণিক,	ভদ্রেশ্বর	১১/০
,, অম্বোহানন্দ চট্টোপাধ্যায়, (শ: ১৮০২) বননবন্দ্যাস		১১/০
,, রামমোহন আদিতা চৌধুরী,	করি-গঞ্জ	১১/০
,, রাধাগোবিন্দ দত্ত,	ঐ	১১/০
,, গৌরীচরণ আদিতা,	ঐ	১১/০
,, রাধামোহন দাস,	মালদহ	১১/০
,, কৃষ্ণ কিশোর দত্ত,	ফেনবপুর (শ্রীহট্ট)	১১/০
,, আশুতোষ মুখোপাধ্যায়,	সারণ	১১/০
শ্রীমৎপণ্ডিত রাজচন্দ্র চক্রবর্তী,	হবিগঞ্জ	১১/০
শ্রীমদ্বাবু প্যারে লাল,	পাঁচমারী (মধ্য প্রদেশ)	১১/০
,, প্রমথ নাথ ঘোষ,	অহম্মদনগর	১১/০
,, বগলাপ্রসাদ রায়,	দারজিলিং	১১/০
,, প্যারীমোহন গোস্বামী,	মোনাখালি	১১/০
,, ভুবনমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়,	পুণ্ডুরিয়া	১১/০
,, কৈলাশচন্দ্র নিরঞ্জী,	বারিলা	১১/০
,, রাধিকাপ্রসাদ সিংহ,	ভয়পুর	১১/০
,, মধুসূদন ভট্টাচার্য্য,	পাকুড়	১১/০
,, বলরাম পাল,	ঐ	১১/০
,, বিষ্ণুনারায়ণ দাস,	বীরভূম	১১/০
,, রমণীমোহন দাস,	নহানরক	১১/০
শ্রীমান্ পণ্ডিত জগন্নাথ,	জঁ সিরারপুর	১১/০
শ্রীমদ্বাবু পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট	১১/০
,, ধর্মদাস মুখোপাধ্যায়,	ঐ	১১/০
,, চুনীলাল মুখোপাধ্যায়,	ঐ	১১/০
,, বিশ্বেশ্বর ঘোষ,	ঐ	১১/০
,, সারদাপ্রসাদ রায়,	ঐ	১১/০
,, হারাধন সেন,	ঐ	১১/০
,, জগদ্বন্ধু দাস,	ঐ	১১/০
,, ব্রজনাথ বসু,	ঐ	১১/০
,, যোগেশচন্দ্র রায়,	ঐ	১১/০
,, মতিলাল চট্টোপাধ্যায়,	ঐ	১১/০

শ্রীমদ্বাবু মণুরানথ ঘোষ,	গাউবাক্স	১১=
,, রত্নগোবিন্দ চৌধুরী,	করিমগঞ্জ	১১=
,, শ্রীমন্ত রায় কবিরাজ,	ভবানীগঞ্জ	১১=
,, দীননাথ দাস, (শ: ১৮০২)	শ্রীহট্ট	১১=
,, কালীদাস মুখোপাধ্যায় (শ: ১৮০২-০) কলকাতা ২৬		১১=
,, রাসবিহারী বসাক, (শ: ১৮০২)	..	১১=
,, মতিলাল সেন,	মুর্শিদাবাদ	১১=
,, মহিমাচরণ আচার্য্য,	..	১১=
,, জগজ্জয় রায়,	..	১১=
,, কৈলাশচন্দ্র রায়,	..	১১=
,, কৃষ্ণচন্দ্র বসু,	..	১১=
,, তারাদাস চট্টোপাধ্যায়,	হুগলী	১১=
,, নীলমোহন মুখোপাধ্যায়,	বাঁকা	১১=
,, কৃষ্ণেন্দ্রনাথ সরকার, জমীদার, মাদলা		১১=
,, তারাপ্রসাদ রায়চৌধুরী,	হুব্বাজপুর	১১=
,, গোপালগোবিন্দ চৌধুরী, জমীদার, ইন্দনগর		১১=
,, দীননাথ প্রামাণিক,	ভদ্রেশ্বর	১১=
,, অম্বোহানন্দ চট্টোপাধ্যায়, (শ: ১৮০২)		১১=
,, রামমোহন আদিত্যচৌধুরী,	করিমগঞ্জ	১১=
,, রাধাগোবিন্দ দত্ত,	..	১১=
,, গৌরীচরণ আদিত্য,	..	১১=
,, রাধামোহন দাস,	মালদহ	১১=
,, কৃষ্ণ কিশোর দত্ত,	ফেনবপুর (শ্রীহট্ট)	১১=
,, আশুতোষ মুখোপাধ্যায়,	সারণ	১১=
শ্রীমৎপণ্ডিত রাজচন্দ্র চক্রবর্তী,	হবিগঞ্জ	১১=
শ্রীমদ্বাবু অরেন্দ্রনাথ, পাণ্ডুরী,	(মধ্য প্রদেশ)	১১=
,, প্রমথনাথ ঘোষ, অহম্মদনগর (দক্ষিণপ্রদেশ)		১১=
,, বগলাপ্রসাদ রায়,	দারজিলিং	১১=
,, আরীমোহন মোল্লাসী,	মোনাখালী	১১=
,, ভুবনমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়,	পুণ্ডুরিয়া	১১=
,, কৈলাশচন্দ্র নিরঞ্জী,	বারিলা	১১=
,, রাধিকাপ্রসাদ সিংহ,	ভয়পুর	১১=
,, মধুসূদন ভট্টাচার্য্য,	পাকুড়	১১=
,, বলরাম পাল,	..	১১=
,, বিষ্ণুনারায়ণ দাস,	বীরভূম	১১=
,, রমণীমোহন দাস,	নহানরক	১১=
শ্রীমান্ পণ্ডিত জগন্নাথ,	জঁ সিরারপুর	১১=
শ্রীমদ্বাবু পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট	১১=
,, ধর্মদাস মুখোপাধ্যায়,	..	১১=
,, চুনীলাল,	..	১১=
,, বিশ্বেশ্বর ঘোষ,	..	১১=
,, সারদাপ্রসাদ রায়,	..	১১=
,, হারাধন সেন,	..	১১=
,, জগদ্বন্ধু দাস,	..	১১=
,, ব্রজনাথ বসু,	..	১১=
,, যোগেশচন্দ্র রায়,	..	১১=
,, মতিলাল চট্টোপাধ্যায়,	..	১১=

শ্রীমদ্বাবু হরিদাস মুখোপাধ্যায়,	রামপুরহাট	১০
,, ধনকৃষ্ণ বিশ্বাস,	ঐ	১০
,, দীননাথ পাল,	ঐ	১০
,, মহেন্দ্রনাথ ঘোষ,	মুন্সের	১০
,, নবীনচন্দ্র সরকার,	ঐ	১০
,, রামচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়,	জামালপুর	১০
,, রামলাল চট্টোপাধ্যায়,	ঐ	১০
,, নেপালচন্দ্র সেন,	ঐ	১০
,, বিপিনবিহারী মজুমদার,	ঐ	১০

শ্রীমদ্বাবু হরিদাস মুখোপাধ্যায়,	রামপুরহাট	১০
,, ধনকৃষ্ণ বিশ্বাস,	,,	১০
,, দীননাথ পাল,	,,	১০
,, মহেন্দ্রনাথ ঘোষ,	মুন্সের	১০
,, নবীনচন্দ্র সরকার,	,,	১০
,, রামচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়,	জামালপুর	১০
,, রামলাল চট্টোপাধ্যায়,	,,	১০
,, নেপালচন্দ্র সেন,	,,	১০
,, বিপিনবিহারী মজুমদার,	,,	১০

বিদেশীয় এজেন্টগণের নাম ।

শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	বাঁকীপুর ।
,, ,, যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী ।
,, ,, জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর ।
,, ,, পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট ।
,, ,, ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্তী এম্. এ. বিএল,	গয়া ।
,, ,, বিহারিনাথ রায়,	জামালপুর ।
,, ,, রমেশচন্দ্র সেন,	ঐ ।
,, ,, উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	ঐ ।
,, ,, রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম ।

উপরোক্ত এজেন্ট মহোদরগণকে উক্তস্থানীয় গ্রাহক মহাশয় গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব ।

বিদেশীকে এজেন্ট সৎকা নাম ।

শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়,	বাঁকীপুর ।
,, ,, যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী ।
,, ,, জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর ।
,, ,, পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট ।
,, ,, ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্তী, এম্. এ. বিএল	গয়া ।
,, ,, বিহারীনাথ রায়,	জামালপুর ।
,, ,, রমেশচন্দ্র সেন,	জামালপুর ।
,, ,, উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	জামালপুর ।
,, ,, রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিগ্রাম ।

উপরোক্ত বিদেশী এজেন্ট মহোদরগণের পাঠ তদন্ত স্বাক্ষরকে প্রাপ্তক মহোদরগণ মূল্যাদি দে' তো ম' প্রাপ্তক ।

ধর্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী ।

- ১। যদি কোন ধর্মপ্রচারক আর্থিকভাবে প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষার বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টি সরবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহসহকারে ধর্ম প্রচারকে প্রকাশ করিব ।
 - ২। ধর্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি মুন্সের "আর্থিকপ্রচারিণী সভায়," আমার নামে পাঠাইতে হইবে । পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না ।
 - ৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মনিঅর্ডারে, পাঠাইবেন । ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন ।
 - ৪। ধর্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১০ সংখ্যা হইতে ডাকব্যয় সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইয়াছে ।
- | | | | |
|--------------|---------|-------|----------------|
| উত্তম কাগজে, | বার্ষিক | ৩০/০, | প্রতিখণ্ড ১০/০ |
| মধ্যম | ঐ | ২০/০ | " ১০ |
| সাধারণ | ঐ | ১০/০ | " ৮/০ |
- মুন্সের, আর্থিকপ্রচারিণী সভা } শ্রী শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন ।
প্রচারিণী সভা } সম্পাদক ।

এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুন্সের আর্থিকপ্রচারিণী সভায় উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে ।

ধর্মপ্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী ।

- ১। যদি কোন ধর্মপ্রচারক আর্থিকভাবে প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার করণের নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষার বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টি সরবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহসহকারে ধর্ম প্রচারকে প্রকাশ করিব ।
 - ২। ধর্মপ্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি মুন্সের "আর্থিকপ্রচারিণী সভায়," আমার নামে পাঠাইতে হইবে । পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না ।
 - ৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মনিঅর্ডারে, পাঠাইবেন । ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন ।
 - ৪। ধর্মপ্রচারক ১ম ভাগ, ১০ সংখ্যা হইতে ডাকব্যয় সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার হইয়াছে ।
- | | | | |
|--------------|---------|-------|----------------|
| উত্তম কাগজে, | বার্ষিক | ৩০/০, | প্রতিখণ্ড ১০/০ |
| মধ্যম | ঐ | ২০/০ | " ১০ |
| সাধারণ | ঐ | ১০/০ | " ৮/০ |
- মুন্সের, আর্থিকপ্রচারিণী সভা } শ্রী শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন ।
প্রচারিণী সভা } সম্পাদক ।

এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুন্সের আর্থিকপ্রচারিণী সভায় উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে ।



“একএব সুহৃদ্বর্গো নিধনেঃপ্যনুযাতি যঃ
শরীরেণ সমন্বাশং সর্বমন্যন্তু গচ্ছতি ॥”

“एक एव सुहृद्वर्गो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समन्वाशं सर्वमन्यन्तु गच्छति ॥”

৪র্থ ভাগ । } শকাব্দাঃ ১৮০৩ ।
৪৮ সংখ্যা । } আশ্বিন—পূর্ণিমা ।

৪র্থ ভাগ । } শকাব্দা ১৮০২ ।
৪৮ সংখ্যা । } আশ্বিন—পূর্ণিমা ।

পরমার্থ সার ।

(পূর্ব প্রকাশিতের পর ।)

গুণকরণগণশরীর প্রাণৈক্য মাত্রজাত স্বত্বদুঃখৈঃ ।
অপরামৃষ্টাব্যাপী চিজপোহং সদা বিমলঃ ॥৬২॥

সজ্বাদি তিন গুণ, চক্ষু, কণ, নাসাদি দশ ইন্দ্রিয়, স্থূল সূক্ষ্মাদি তিন শরীর এবং প্রাণাপানাদি পঞ্চ বায়ু আদি জাত স্বত্ব দুঃখ আমাকে স্পর্শ করিতে পারে না । আমি সর্বব্যাপী সদা নির্মল চৈতন্য স্বরূপ ।

অনেকের এইরূপ সিদ্ধান্ত যে “আমি ব্রহ্ম” ইত্যাকার চিন্তা করা অতীব ঘৃণিত ও অহংকার-মূলক । ঐদৃশ সিদ্ধান্ত অতীব অপরিণত বুদ্ধি বিজুড়িত বলিতে হইবে । সাধারণ অহংমমেতির চূর্ণক দূষিত বায়ু যত দূর গমন করে আত্মজ্ঞানোপ-দেশের “অহং” শব্দ সে রাজ্যের সীমার বহির্ভূত । আত্মজ্ঞানবিমূঢ় জীব । “আমি” বলিবারাত্রিই ভূমি যত দূর ভাবরাজ্যে প্রবিষ্ট হইলে, আত্মজ্ঞ পুরুষের “আমি” তথা হইতে অলক্ষ্য স্থানের দৃষ্টান্ত

পরমার্থ সার ।

(পূর্ব প্রকাশিতের পরে)

গুণকরণগণ শরীরপ্রাণৈক্যমাত্রজাতস্বত্বদুঃখৈঃ ।
অপরামৃষ্টাব্যাপী চিদ্রূপোহং সদা বিমলঃ ॥৬২॥

সত্ত্ব আদি করকে তিন গুণ, চক্ষু, কণ, নাসা, আদি দশ ইন্দ্রিয়, স্থূল, সূক্ষ্ম আদি তিন শরীর আদি প্রাণাপানাদি পঞ্চ বায়ু আদিকে জ্ঞান করিয়াও দুঃখ সুখে স্মরণ নহী করিতে পারে ।

বক্তারেরা যাহা সিদ্ধান্ত দেন, তাহা “মৈ” ব্রহ্ম জ্ঞান হইতে আত্মজ্ঞান করা অতীব ঘৃণিত আত্মজ্ঞানস্বরূপ । যাহা সিদ্ধান্ত অত্যন্ত অপরিণত বুদ্ধি যেরূপে স্থাপিত হইতে পারে । সাধারণ অহংমমেতি রূপে দুর্গন্ধ দূষিত বায়ু জন্মাতক জাতি করিতে হইবে আত্মজ্ঞানোপদেশের “অহং” শব্দ ভস্ম রাজ্যের সীমার বাহিরে । হে আত্মজ্ঞান-বিমূঢ় জীব ! “মৈ” হইতে যাহা সিদ্ধান্ত হইতে পারে তাহা “মৈ” ব্রহ্মজ্ঞান হইতে বাহিরে আত্মজ্ঞানস্বরূপ

हैते निर्गत हैतेछे जानिवे तोमार “आमि”
 ओ आञ्ज्जेर “आमि” छुईटी अतीव सतन्त्र पदार्थ ।
 ज्जको श्रोता श्रोता स्पर्शयिता रसयिता गृहीता च ।
 देही देहेन्द्रियधी विवर्जितः आत्मकर्तामो ॥ ७३ ॥

ये जीवके ज्जको, श्रोता, श्रागकर्ता, स्पर्श-
 यिता, रसास्वादनकर्ता वा ग्रहणकर्ता बलिया बोध
 हैया থাকे, ताहा वास्तविक देह वा इन्द्रिय धर्म
 विवर्जित, सुतरां तिनि किछुई करेन ना ।

सूक्ष्म ज्ञानेर अभाव प्रयुक्त देहेन्द्रियादिर
 क्रिया जीवात्माते आरोपित हैया থাকे । आञ्ज
 विचारणा भिन्न ए भ्रम विदूरित हैवार उपाय नाई ।
 एकोनैकत्रावस्थितोहमैश्वर्यो गतो व्यापुः ।
 व्याप्याकाशवदखिलं न कश्चिदत्रास्ति सन्देहः ॥ ७४ ॥

आञ्जा एक हैया अहं रूप ईश्वर्य गुणे
 सर्वत्रहै अवस्थित एवं आकाशेर आंय सर्वत्रहै
 व्यापु, ईहाते आर किछिआत्रो सन्देह नाई ।

आञ्जवेदं सर्वं निःकलसकलं यदैव भावयति ।
 मोह गहनाद्विमुक्तुदैव परमेश्वरो भवति ॥ ७५ ॥

निःकल वा कलायुक्त वाहा किछु विद्यमान आछे
 समस्तहै आञ्ज सद्भासय, एह रूप चिन्ता द्वारा यখন
 वस्तु बुद्धिर उदय हैवे, तखन जीव मोहमला मुक्त
 हैया श्रयं ज्ञेय पद लाभ करिवे ।

सिद्धान्तागमतर्कादिषु भ्रमन्ति ये यद्वागाक्ताः ।
 अनुमोदान्तेषां सर्वान्नावादिधिया ॥ ७६ ॥

विषयानुरागे अक्र हैया याहारा सिद्धान्त,
 आगम, तर्कादि शास्त्रेर ज्ञानाभिमाने उन्नत,
 आमरा आञ्जवाद-बुद्धि द्वारा ताहादिगेरओ प्रति
 प्रसन्न थाकि ।

आञ्जतद्वज्ज पुरुषेर यখন आञ्जदृष्टि बल-
 वती हय, कोन जीवे वा कोन पदार्थे वा
 कुत्रापि तांहार भेद बुद्धि वा असन्तोषेर उदय
 हैवार सम्भावना नाई । आमिहै सर्वत्रे ओ समस्तहै
 आमाते जेदूष ओतःप्रोतभावे आञ्ज दर्शन हैले
 जीवेर शक्र, मित्र, ऊरु, नीच, लघु, गुरु, शुभ,
 अशुभ, उन्नत, निम्न, तत्त्व, ग्रह, आञ्जिय,
 अपर आदि विकृत भाव विदूरित हैया याय ।
 आञ्जगण आपनाते बाधुष अतिरमण करिते

वे निगल रहा है जानना । तेरा “मैं” औ आत्मज्ञ
 पुरुषका “मैं” येदो अतीव स्वतन्त्र पदार्थ है ।

द्रष्टा श्रोता प्राप्ता स्पर्शयिता रसयिता गृहीता च ।
 देही देहेन्द्रियधी विवर्जितः स्यान्म कर्त्तासौ ॥ ७३ ॥

जिन जीवकी द्रष्टा, श्रोता, प्राणकर्त्ता, स्पर्श-
 यिता, रसास्वादनकर्त्ता वा ग्रहणकर्त्ता करके
 स्तुतित होता है, वे वास्तव में देह वो इन्द्रिय-धर्मसे
 रहित हैं, सुतरां वे कोई कार्य नहीं करते हैं ।

सूक्ष्म ज्ञानके अभाव करके शरीर वो इन्द्रियों
 की क्रिया सब जीवात्मा पर डाली जातो हैं । विन
 आत्म विचार किये यह भ्रम कभी छुटनेवाला
 नहीं ।

एको नैकत्वावस्थितोहमैश्वर्यो गतो व्यासः ।

व्याप्याकाशवदखिलं न कश्चिदत्रास्ति सन्देहः ॥ ७४ ॥

आत्मा एकमात्र ऊँच भी अहंरूप ऐश्वर्य करके
 सर्वत्र ही स्थित हैं औ आकाशके समान सर्वत्र ही
 व्याप्त हैं, इस में कुछ भी सन्देह नहीं ।

आत्मैवेदं सर्वं निष्कलसकलं यदैव भावयति ।

मोहगहनाद्विमुक्त सदैव परमेश्वरो भवति ॥ ७५ ॥

कलासे रहित वा कलासे युक्त जो कुछ विद्य-
 मान है, समस्त ही आत्मसत्तासे पूर्ण है, इस भान्ति
 चिन्ता करके अब वस्तु बुद्धिका उदय होगा उस
 समय जीव मोहरूप मलीनतासे मुक्त होकर स्वयं
 ईश्वरपद प्राप्त होगा ।

सिद्धान्तागमतर्कादिषु भ्रमन्ति ये यद्वागान्वाः ।

अनुमोदान्तेषां सर्वान्नावादि धिया ॥ ७६ ॥

विषयके अनुरागसे अन्ध होकर जितने लोग
 सिद्धान्त, आगम, तर्क आदि शास्त्रोंके ज्ञानाभि-
 मानसे उन्मत्त हैं, हम आत्मवाद बुद्धि करके उन-
 पर भी प्रसन्न रहने हैं ।

आत्मतत्त्वके जाननेहारे पुरुष की आत्मदृष्टि
 अब तेज होजाती है, उस समय किसी जीव में वा
 कोई पदार्थ में वा किसी स्थान में उनकी भेदबुद्धि
 वा असन्तोषका उदय होना सम्भव नहीं । मैं ही
 सर्वत्र, औ सब ही मुझ में इस भान्ति ओतप्रोत
 भावसे आत्मदर्शन होनेपर जीवका शत्रु, मित्र,
 उन्नत, नीच, लघु, गुरु, शुभ, अशुभ, उन्नत,
 निम्न, तत्त्व, ग्रह, अपना वेगान आदि विज्ञत
 भाव छुट जाता है । आत्मज्ञानी पुरुषगण अपने
 में जिस भान्ति अभिरमण करते रहते हैं

थाकेन अग्रजो तद्ग अभिरति प्रयुक्त काशरु
प्रति अप्रसन्न ह्येन ना ।

क्रमशः ।

आर्यशास्त्र विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशिते पर ।)

दर्शनजातीय ग्रन्थ भिन्न संस्कृत भाषा निखिल
ग्रन्थ है छन्द बद्धने ग्रथित ; किन्तु आधुनिक काव्यादि
ग्रन्थ कृत्रिम छन्दः है अधिक देखिते पाँया याय,
केवल मात्र वेदेर है सर्वान्तर—गारुड्यादि अकृत्रिम
छन्दः परिदृष्ट है । एज्ज अनुमित है ये, वेद
सङ्कलनेर पर केवल वैदिक छन्दः सकल बोधेर
निमित्त है प्राचीन छन्दःशास्त्रेर अवतारणा हैयाछे ।
अतएव छन्दःशास्त्र वेदेर अङ्ग बलिया परिगणित ।
वास्तविक तद्द्वारा अग्रज छन्दोयुक्त ग्रन्थेर
उपकारिता है ।

एकणे आमामेर आलोच्य है ये, छन्देर
प्रयोजन कि, एवं उहा स्वाभाविक एकटि
वैज्ञानिक विषय कि ना । छन्देर वैज्ञानिकता
एवं स्वाभाविकतेर प्रमाण हैले वेदाङ्गता
सप्रमाणिकृत हैते पारे ।

छन्देर प्रथम प्रयोजन तावोद्भासन । छन्दो-
द्वारा वक्ता अन्तःकरणगत भावेर उद्भासन है,
एवं श्रोतार मने सेहै भाव स्फुरित हैया
प्रकृतार्थ बोधेर उद्भासन करे । वक्ता—विशेषतः
अग्र कर्तृक ग्रथित वाक्प्रबन्धेर वक्ता—निज चित्ते
ये भावेर उद्भव हैले वाक्यावलीर उच्चारण
करेन, छन्दः सेहै भावके परिणत करिया श्रोतृ
चित्ते स्फुरित करे ।

वक्ता छन्दोरहितवाक्य प्रयोग करिले तद्द्वारा
ताहार अन्तःकरणगत भावेर उद्भेक ना होयाय
श्रोतृचित्ते सेहै भावेर उदय हैते पारे ना ।
वक्ता ये भाव वा क्रियाविशेष हैया वाक्ये प्रवृत्त
है, सेहै क्रिया वा भाव वाक्क्रियार सहित मिलित
हैलेहै छन्देर उद्भव है । अतएव श्रोतार मने
सेहै भावेर आविर्भाव है ।

वाक्य ये स्फुरणील क्रिया ताहा सकलेहै
विदित आछेन । उहा “क्रिया” पदार्थ ना हैले

अन्यत्र भी ताह्य अभिरतिके कारण किसीपर
अप्रसन्न नहीं रहते हैं । शेष आगे ।

आर्य शास्त्र-विज्ञान ।

(पूर्व प्रकाशिते आगे)

“दर्शन” श्रणीके ग्रन्थ छोड़कर संस्कृत भाषाके
समस्त ग्रन्थ ही छन्दबन्ध करके लिखित हैं । किन्तु
अधुनिक काव्य आदि ग्रन्थों में अधिकांश ही
छन्द छन्दः देख पड़ते हैं, केवल वेदहीके सर्वाङ्ग
में गायत्री आदि अछन्द छन्दः दृष्ट होता है ।
इससे सूचित होता है ओ वेद सङ्कलनके अनन्तर
केवल वैदिक छन्दःके बोधार्थ प्राचीन छन्दः
शास्त्र की अवतारणा छे । अतएव छन्दः
शास्त्रको वेदका अङ्ग करके मानना । वास्तव में
उससे अन्यान्य छन्दः युक्त ग्रन्थोंका भी उपकार
होता है ।

अब हमको यह आलोचना करना चाहिये
ओ, छन्दका प्रयोजन क्या है ? ओ यह स्वभावसिद्ध
कोइ वैज्ञानिक विषय है या नहीं । छन्द ओ
विज्ञानमूलक ओ स्वभावसिद्ध है, इतना प्रमाण
होनेसे इसकी वेदाङ्गता भी प्रमाण हो सकेगी ।

भावोद्भासन या भावका पूर्ण रीति प्रकाश
करना छन्दका प्रथम प्रयोजन है । छन्द करके
वक्ताके अन्तःकरणस्थ भावका उद्भासन वा पूर्ण-
प्रकाश होता है ओ ओताके मन में वही भाव
सञ्चारित होकर प्रकृतार्थ बोधका उद्भासन करता
है । वक्ता—विशेषतः ओ वक्ता इसरा किसीका
बनाओ छे कथाप्रबन्ध को बध्ते है, निज मन में
जिस भावका उद्भव होने पर कथाका सञ्चारण
किये करते है, छन्द उसी भावको परिणत करके
ओताके चित्त में सञ्चार करता है ।

वक्ता छन्द हीन वाक्योंको प्रयोग करनेसे
उनके अन्तःकरणके भावका प्रकाश नहीं होता,
अतएव ओताके चित्त में वह भाव कभी नहीं उठ
सक्ता है । वक्ताने जिस भाव वा क्रियायुक्त
होकर कधने में प्रवृत्त होता है वही भावका क्रिया,
वाक्-क्रियासे मिलने ही पर छन्दका उद्भव होता
है । अतएव ओताके मन में उस भावका आविर्भाव
होता है । वाक्य ओ सञ्चारणील क्रिया है, सो
सर्वत्र विदित है । वह यदि “कार्य” पदार्थ ना
होता तो किसीका वाक्य किसीके कान में ना

काहारण वाक्य काहारण कर्णगोचर रहित ना । अधिक कि “वाक् प्रसारण” (Phonogram) विषये याहार बोध आछे तनि एविषय अनायासेई विश्वास करिवेन । वाक् क्रिया प्रसारित रहैया कर्णकूहर द्वारा स्नायुपथे आरोहण पूर्वक मस्तिष्के आघातानन्तर अन्तःकरणके आघात करिले अन्तःकरण वाक्याकारे परिणत हय । तखन वाक्येर अनुभव रहैया থাকे । ऐइफण चिन्ता करिया देखन वाक्य क्रिया यदि वक्तार भाव सहित मिलित हय तवे सेई भाव श्रोतार अन्तःश्रु केन ना रहैवे ।

छन्दः प्रथमतः विविध । एक स्वभावतन्त्र, द्वितीय उभयतन्त्र । ये छन्दः वक्तार ईच्छाके अपेक्षा ना करिया तत्तद्भाव प्रकाश करिते रहैले स्वभावतः ई प्रादुर्भूत हय ताहाके “स्वभावतन्त्र,” आर याहा “छन्दोयोग करिया बलिब” इत्याकार वक्तार ईच्छा एवं स्वभाव एतदुभय द्वारा समुद्भूत हय ताहाके “उभय तन्त्र” छन्दः बला याय । एतदुभय विध छन्दोमध्ये उभयतन्त्र छन्दः एक प्रकार थाकिया ओ बहुप्रकार भावेर उद्भासक रहैते पारे । छन्दोविशेषे प्रकारभेदे ओ भिन्नविध भावेर समुद्भासन हय । स्वभावतन्त्र छन्दः ईदृश नहे, ईहार प्रकार भेदेई भिन्न प्रकार भावेर उद्भेद हय । एक प्रकार स्वभावतन्त्र छन्दोद्वारा द्विविध भावेर उद्भासन हय ना । स्वभावतन्त्र छन्देर आर ओ विशेष ऐई ये तत्तद्वाक्ये तत्तच्छन्द व्यतिरेके वक्तृ मनोगत भाव कियदर्श ओ कोन प्रकारे अभिव्यक्त हय ना । उभयतन्त्र छन्देर रीति तद्रूप नहे । एतद्व्यतिरिक्त ओ वक्तृभाव कथंकि परिब्यक्त रहैते पारे । एवं स्वभावतन्त्र केवल वक्तृ मनोगत भावेर सहित मिलित वाक्यक्रियार विभक्ति मात्र, उभयतन्त्रेर किंकि विशेष आछे । वाक्य समूह निष्पादन करिते ये उदात्त (उदात्त) अनुदात्त (मुदात्त) स्वरित (तारा) ऐई त्रिविध आमेर एकतर आमेर मङ्ग (वा) धाव (धा) गान्धार (गा) मध्यम (मा) पञ्चम (पा) धैवत (धा) निषाद (नि) ऐई सप्तविध स्वर उथित हय, ताहार प्रत्येकेर परस्पर योग, अथवा मध्यवर्ति एकतमेर वा द्वितीयेर वर्द्धनपूर्वक अवशिष्टेर यथा नियत योग, किन्ना व्यत्यय योग विशिष्ट वक्तृभावेर सहित मिलित-वाक्य क्रियार विभक्तिके उभय तन्त्र छन्दः बला याय । क्रमशः ।

पैठता । अधिक क्या कहा जाय, “वाक्प्रसारण” (Phonogram) जो विदित है, वे इसको अनायास विश्वास करेङ्गे । वाक्क्रिया प्रसारित होकर कर्ण विवरसे स्नायु पथ में आरोहणपूर्वक मस्तिष्क में आघातानन्तर अन्तःकरणके आघात करनेसे अन्तःकरण वाक्याकार प्राप्त होता है, उसी समय वाक्यका अनुभव ऊँचा करता है । अब विचार कर देखलेना जो वाक्क्रिया यदि वक्ताके भावसे मिले तो वह भाव श्रोताके अन्तःकरण में क्यों न पैठेगा ।

छन्दः दो प्रकारके हैं । १म, स्वभाव-तन्त्र, २य, उभयतन्त्र जो छन्दः वक्ता की इच्छा की अपेक्षा न करके तत्तद्भावके प्रकाश काल में स्वयमेव प्रादुर्भूत होता है, उसको स्वभावतन्त्र औ जो “छन्द मिलाकर कज्झा” इस भांति वक्ता की इच्छा औ स्वभाव इन दोनोंसे समुद्भूत होता है उसीके “उभयतन्त्र” छन्द कहा जाता है । ये दो प्रकार छन्दके मध्य में “उभयतन्त्र छन्द” एक प्रकारका रह कर भी नाना भांति भावका उद्भासक हो सक्ता है । किसी किसी छन्द में विधिभेद करके भिन्न भिन्न भावका समुद्भासन होता है । स्वभावतन्त्र छन्द इस रीतिका नहीं, इसके प्रकारभेद हीसे भिन्नविध भावका उद्भेद होता है । एक प्रकारको स्वभाव-तन्त्र छन्दके द्वारा द्विविध भावका उद्भासन नहीं होता है । स्वभाव-तन्त्र छन्दका यह भी एक विशेषता है जो तत्तद्वाक्य तत्तच्छन्द छोड़के वक्ताके मनका भाव कुछ भी किसी तरहसे प्रकाश नहीं होता है । उभयतन्त्र छन्द की रीति उस भांति की नहीं । इसको छोड़के भी वक्ताका भाव थोड़ा वक्तव्य व्यक्त हो सक्ता है । स्वभाव-तन्त्र केवल वक्ताके मनके भावसे मिलीऊँड़ वाक्यक्रिया की विभक्तिमान है । उभयतन्त्र की कुछ विशेषता है । वाक्यसमूहके निष्पादन करने में जो उदात्त (उदात्त), अनुदात्त (मुदात्त) स्वरित (तारा) इन त्रिविध ग्रामके किसी ग्राम में षड्ज (वा) ऋषभ (ऋ) गान्धार (गा) मध्यम (मा) पञ्चम (पा) धैवत (धा) निषाद (नि) ये सात तरहके स्वर उठते हैं, उस में ढरेकका परस्पर मेल अथवा बीचके एक या दुसरेको छोड़कर अवशिष्टका यथा नियत योग वा व्यत्यय योगविशिष्ट वक्ताके भावके सहित मिलीऊँड़ वाक्यक्रिया की विभक्तिको उभयतन्त्र छन्द कहा जाता है । शेष आगे ।

(प्राप्ति)

अतिनव ब्राह्मधर्म है कि भारतमें विचार्य हैवे !!!

ब्राह्मदिगैर वक्तृता, प्रार्थना ओ सङ्गीतादि पाठ करिने, देखिते पाँवया याय ये ब्राह्मेरा आशा करेन ताँहादेर कथित ब्राह्म धर्म एक समये भारतमें समस्त नरनारीर हृदय अधिकार करिया, भारतमें एक अति विचित्र स्वर्गराज्य आनयन करिबे। भारतवर्षे बहूकाल हैवेते ईदृश ब्राह्मधर्मैर गाय शत शत धर्म उदय हैया, महा आश्चालने ओ वीर-दर्पे गगनमण्डल भेद करतः, ब्राह्मसमाजैर गाय कतई आशा ओ कतई भरोसार ईन्द्रजाल विस्तार पूर्वक भारतवासिर सरल मनके मूर्च्छ करियाछिल, किन्तु हाय ! कालेन विचित्र लीला के बूबिबे ? देखिते देखिते सकलेई एक एकटी संकीर्ण सम्प्रदाये विभक्त हैया निज निज धर्म प्रवर्तकेर मत पोषण करत, जीवनातिपात करिते लागिन। ऐहैरूप धर्म विप्लवराशि ये भारतमें कोमलाङ्ग कतई क्षत विकृत करियाछिल ताहार ईयना करा सुकठिन ; किन्तु कि आश्चर्या, ब्राह्मदिगैर आचारित ओ प्रवर्तित सनातन आर्यधर्मके केहई स्थान भ्रष्ट करिते पारिल ना। यगन ईशा आसिरा थण्डेर पश्चिम विभागे प्रथम धर्मप्रचार करिते आरम्भ करेन, तखन के मने करियाछिल ये ताँहार प्रचारित “एकमेवाद्वितीय” मत कालेते त्रिध्वाने परिणत हैया संकीर्ण त्रिध्वाने नामे आख्यात हैवे। महम्मदीय धर्मैर अवस्था ओ सेहैरूप हैयाछे। महम्मद यখন एकेस्वरवाद प्रचार करेन तखन के मने करियाछिल ये ताँहार निर्दिष्ट कठिन नियम समूह भेद करिया नानाप्रकार सम्प्रदायेर उद्भव हैवे ओ तन्मयो पौडलिकता प्रवेश करिबे। यखन कोन महान्ना जन्म ग्रहण करेन, ताँहार मानसिक प्रकृति साधारण लोकैर मानसिक प्रकृति अपेक्षा स्वतन्त्र रूप धारण करिया থাকे ; ताँहार गगनस्पर्शी उच्च चिन्ता समूह साधारण लोकैर धारणार अतीत। समुद्र कुलहित कुल निर्देश सूचक आलोक स्वरूप हैया तनि मनुष्य रूप अर्णवयान समूहके शान्ति धाम देखाईया देन। एकरूप महात्मादिगैर प्रचारित धर्म विकृत भावधारण करिबे, ईहा अति आश्चर्यैर विषय। किन्तु

(प्राप्त)

नवीन ब्राह्मधर्म हो क्या भारतवर्षका भविष्यधर्म बनेगा !!!

ब्राह्मसौर्गों की वक्तृता, प्रार्थना औ सङ्गीतादिके पठनसे सूचित होता है कि उन्हें यह आशा रखती है जो ब्राह्मधर्म एक समय में भारतवर्षके समस्त नर नारीके हृदय अधिकारकर भारतभूमि पर एक अति विचित्र स्वर्गधाम बनावेगा। कितनेसे धर्म भारतवर्ष में वज्रत दिनसे इस ब्राह्मधर्मके न्याय उदय होकर बड़ा भारि तड़पन औ वीरदर्पसे गगनमण्डल भेद करके ब्राह्म समाजके समान कितनी आशा औ कितनी भरोसाके इन्द्रजाल पसारके भारत-निवासियोंका सरल हृदयको सुग्ध कियेथे, किन्तु हाय ! काल की विचित्र लीला को समझे ? आंखके पलक गिराते ही सबकोई एक एक सङ्कीर्ण सम्प्रदाय बनकर निज निज धर्मप्रवर्तकके मत पोषण करते छुए दिन बिताने लगे। इस भान्ति धर्मविप्लव राशि जो भारतके कोमलाङ्गको कितना ही क्षत विक्षत कियेथे, उसकी सोमा करना ही सुकठिन है ; किन्तु क्या आश्चर्य ! ऋषियोंके आचारित औ प्रवर्तित सनातन आर्यधर्मको स्थानभ्रष्ट करना किसीसे नहीं बन सका। जब ईशामणीने आस्था खण्डके पश्चिमांश में पहले पहले धर्मका प्रचार प्रारम्भ कियाथा, उस समय की अनुमान कियाथा जो उनका प्रचारित “एकमेवाद्वितीय” यह मत काल पाकर तित्ववाद (पिता, पुत्र औ पवित्रात्मा) में परिणतहोके सङ्कीर्ण “ईशाद धर्म” इस नामसे प्रसिद्ध होगी। महम्मदी धर्म भी उस दशाको प्राप्त हो चुकी। महम्मद जब एकेस्वरवाद प्रचार कियेथे उस समयकी अनुमान कियाथा जो उनके निर्देश औ नियमोंको तोड़कर नाना भान्तिके सम्प्रदाय बनेगा औ उन में मूर्ति पूजा की रोती आ जायगी। जब किसी महात्माने जन्म लेता है, उनकी मानसिक प्रकृति साधारण सौर्गोंकी प्रकृतिसे कुछ और ही रूप धारण करलेती है ; उनकी गगनस्थरी उंची चिन्ता समूह साधारण सौर्गों की धारणा शक्तिका बाहर है। कुम्बविद्यापक दीपक जैसा आकाशोंके कल्याणार्थ समुद्र की किनारे पर रहता है, उस भाँति ये मनुष्यरूप समुद्रपोतीकी भान्तिधाम देखना देते हैं। यह बड़ा आश्चर्यका विषय है, जो ऐसे ऐसे महात्माओं का फैलाया हुआ धर्म ईशको प्राप्त होनेवाला

प्रकृतिर विचित्र लीला के बूझिये । सामान्य क्षुद्र प्रकृति मनुष्य कि कथन समुच्च शैल शिखरें वानोपयोगी हईते पावै । तथाकार प्रबल वायुर आघाते जर्जरित हईया ताहाके निश्चयई निम्न-भूमि आश्रय ग्रहण करिते हईवे । उन्नत साधु महात्मादिगेर धर्मभाव कि साधारण मनुष्य धारण करिते पावै, ना ताहादिगेर प्रदर्शित पश्चा अवलम्बन करिया एकेवारे ताहादेर उन्नत प्रकृतिर सङ्गे मिलित हईते पावै ? ये साधन समाधि अवस्थाय ताहारा भगवानेर प्रफुल्ल आनन दर्शन करिते थाकेन, एवं ताहार विमल वाणि श्रवण करिया जगते ताहार वन घोर गङ्गीर अग्नि हेर समुच्चार घोषणा करिते थाकेन, बल देथि, से अवस्था कि तोमार आमार भाग्ये घटिया थाके ? साधु महात्मागण जैश्वर्ये प्रेरित । जैश्वर्ये सङ्गे ताहादेर सत्यभाव, तूमि कि साहसे हे क्षुद्र मनुष्य ! अवलम्बन ओ साधन भिन्न ताहार स्थान अधिकार करिते चाओ ? भारतवर्षे ब्राह्मणमाज एखन वामन हईया चन्द्रधारणे उद्यत, अनधिकार चर्चा करिया भारते महा अकल्याण आनयन करिते छैन । ताहादेर प्रचारेर फल ये कि हईवे ताहा बोध हय बुद्धिमान मात्रेई बूझिते पारिते-छैन ।

ब्राह्मण समाजेर प्रतिष्ठाता राजा राममोहन राय बङ्गदेशेर रत्न स्वरूप हईया जन्मग्रहण करिया-छिलेन । तनि बहु भाषाविद् छिलेन । बलिते कि छुई तिन शताब्दीर मध्ये बङ्गदेशे राममोहन रायेर तुल्य बुद्धिमान ओ विचक्षण व्यक्ति केहई जन्मग्रहण करेन नाई । तनि एकजन विद्या-विशारद छिलेन, किन्तु आमरा ताहाके एकजन परम ब्रह्म परायण धार्मिकेर मध्ये गण्य करिते पारि ना । ताहाके आमरा रामानुज स्वामी, शङ्कराचार्य, नानक प्रभृति धर्मसंस्कारकेर श्रेणीते स्थान दिते पारि ना । तनि तात्कालिक आर्य-धर्मावलम्बीदिगेर आभासुरिक दुर्बलता ओ दूरवस्था दर्शने व्यथित हईयाछिलेन, सन्देह नाई, किन्तु एकेधरवाद प्रचारेर जन्म ब्राह्मणमाज प्रतिष्ठा ताहार प्रकृत धर्म संस्कारेर परिचायक हय नाई । तनि ये प्रचलित आर्यधर्मेर विरुद्धे दण्डमान हईया स्वतन्त्रता अवलम्बन करियाछिलेन ईहाते

है ; किन्तु प्रकृति की विचित्र लीला की समझे । सामान्य क्षुद्र प्रकृतिका मनुष्य क्या कभी समुच्च शैल-शिखर पर बसनेका योग्य बन सक्ता है, वहाँके प्रबल वायुके आघातसे जर्जरित होकर, उनको निश्चय ही निम्न भूमिका आश्रय लेना पड़ेगा । उन्नत साधु महात्माका धर्मभाव क्या साधारण मनुष्य कभी धारण कर सक्ता है, अथवा उनका देखाया ऊँचा मार्गको अवलम्बन कर एकवार भी उन्हींको उन्नत प्रकृतिसे मिल सक्ता है ? जिस साधन-समाधिकी अवस्था में वे भगवानका प्रफुल्ल मुखारविन्दको दर्शन करते रहते हैं औ उनकी विमल वाणी श्रवण कर जगत में उनके घनघोर गम्भीर अस्तित्वका सुसमाचार प्रचार किये करते हैं, कहोतो भला, वह अवस्था क्या तुम्हारे या मेरे भाग्य में प्रकाश पाती है ? साधु महात्मागण ईश्वरके प्रेरित पुरुष हैं । ईश्वरसे उन्हींकी मिलता है, तुम किस साहमसे, हे क्षुद्र मानव ! बिना अवलम्बन औ बिना साधन किये उनका स्थान अधिकार करने चाहो ! वामनकी चेष्टा चन्द्रमा धारण करने की न्याय अब भारतवर्ष में ब्राह्मण-समाजका उद्यम है, ब्राह्मणका अनधिकारचर्चा करके भारतवर्ष में महान् अनर्थ लाने चाहते हैं । उन सबके धर्मप्रचारका किस भान्ति फल मिलेगा, सो बोध होता है किसी बुद्धिमानका समझनेकी वांको न रही ।

ब्राह्मण समाजके प्रतिष्ठाता राजा राममोहन रायने बङ्गदेशका एक महारत्न स्वरूप था । वे बङ्गत भाषाभिन्न थे ; फलतः दो तीससौ वर्षके बीच में राजा राममोहन रायके समान कोई बुद्धिमान औ विचक्षण पुरुष बङ्गदेश में जन्म नहीं लिया । वे एक विद्याविशारद पुरुष थे, ता में सन्देह नहीं ; किन्तु हम उनको एक परम ब्रह्म परायण धर्मात्माके मध्य में नहीं गौन सक्ते हैं । उनको हम रामानुज स्वामी, शङ्कराचार्य, नानक आदि धर्मसंस्कारकों की श्रेणी में नहीं ले सक्ते हैं । वे उस समयके आर्यधर्मावलम्बीयों की आभ्यन्तरिक दुर्बलता औ दुर्दशा देखकर निःसन्देह ही व्यथित हुएथे, किन्तु एकेधरवाद प्रचारार्थ ब्राह्मण-समाजका निर्माण करना उनके लिये प्रकृत धर्म-संस्कारकोंका परिचायक न ऊँचा । इससे इतना ही सुचित होता है जो वे स्वतन्त्रता अवलम्बन

ताहाई प्रतिपन्न हईतेछे । समाज्जेर मनःपौड़ा
दिया धर्मसंस्कार करा आज तिन छारि शताब्दी
हईते धर्मसंस्कारकदिगेर एकटी रोग हईया
ढाँड़ाईयाछे । ईहार परिणाम एई हय ये प्रकाण्ड
समाज हईते कतकगुलि उद्धत ओ चङ्कल प्रकृतिर
लोक स्वतन्त्र हईया एकटि सङ्कीर्ण सम्प्रदायेर सृष्टि
करे । एईरूप भारते ये कतई सम्प्रदायेर
सृष्टि हईयाछे ताहार गणना करा याय ना । एई
रूपे हिन्दू समाजके संस्कार करिवार अभिप्राये
राजा राममोहन राय कलिकता महानगरीते
एकटि ब्राह्म समाज स्थापन करिलेन । आज अर्द्ध
शताब्दी हईल ब्राह्मसमाज्जेर वेदि हईते ब्राह्म
धर्मप्रचार हईतेछे सत्य, किन्तु राजा राममोहन
रायेर उद्देश्य कतदूर सिद्ध हईल ? कयजन
व्यक्ति ताहार प्रदर्शित पन्था अवलम्बन करिल ?
आगरा एखन ताहार प्रकृत गणना करिया बलिते
पारि ना, तबे एई पर्याप्त बलिते पारि ये
प्रत्येक व्यक्ति पाँच मुहूर्तकाल निज निज अङ्गुलि
द्वारा गणना करिलेई बोध हय शेष करिते पारि-
बेन । प्रकाण्ड हिन्दूसमाज्जेर निकट ब्राह्मसमाज
एकटि जलबुद्बुद बलिलेओ बोध हय अत्युक्ति हय
ना । आगरा महात्मा श्रीमदाबु देवेन्द्रनाथ ठाकुर
के राजा राममोहन रायेर एकजन प्रधान शिष्य
बलिलेओ बलिते पारि । तनि एकजन प्रकृत
धर्म परायण बलिया अनेकेर निकट परिचित एवं
आमराओ ताहा स्वीकार करि, किन्तु राजा राममोहन
रायेर उद्देश्य सिद्धि पक्षे तनि किछुई करिया
उठिते पारितेछेन ना । “पौडलिकतार मूले
कुठाराघात करिया ऐकेश्वरवाद प्रचार करा राजा
राममोहन रायेर एकटि प्रधान उद्देश्य छिल ; बाबू
देवेन्द्रनाथ ठाकुर ताहार प्रधान शिष्य, तनि
से लक्ष्य सिद्धिर पक्षे एखन हताश हईया देशे
देशे नगरे नगरे पर्वते ओ कानने परिभ्रमण
करत अन्हिर हईया बेड़ाईतेछेन । बाबू देवेन्द्र
नाथ ठाकुरेर प्रधान शिष्य बाबू केशवचन्द्र सेन
वर्तमान सभ्य जगते बड़ई सद्गता ओ धर्मपरायण
बलिया परिचित । तनि ये एकजन सूक्ष्म, सवि-
द्वान् एवं सद्गता आमराओ ईहा मूक्तकण्ठे स्वीकार
करि, ब्राह्म धर्मके तनि बड़ई डाल बासेन एवं
ताहार प्रचारेर जगति तनि यथोचित त्याग स्वीकार

पूर्वक प्रचलित आर्यधर्मका विरोधी बनेथे ; लोक-
समाजके मन दुःखाकर धर्मसंस्कार करना आज
कोइ तीन चार सौ वर्षसे संस्कारको की एक
तरहकी पीड़ा होगयी है, अन्तफल इसका यही
होता है जो एक दृढत समाजसे थोड़े बद्धत उद्धत
औ चञ्चल प्रकृतिके मनुष्य निकसकर एक सङ्कीर्ण
सम्प्रदाय बना डालते हैं । इस रीतिसे भारत-
वर्ष में जो कितना ही सम्प्रदाय बन चुका उसकी
सोमा न कीजा सक्ति है । इस रीतिसे हिन्दू
समाजके संस्कारार्थ राजा राममोहन राय महा-
नगरी कलकत्ता में एक ब्राह्मसमाज निर्माणा
किये । कोइ ५० वर्ष ऊँए ब्राह्मसमाजके वेदीपरसे
ब्राह्मधर्म प्रचार हो रहा है सही, किन्तु राजा
राममोहन रायका अभिप्राय कहांतक सिद्ध ऊँया ?
कितना पुरुष उनके प्रदर्शित राहपर चलने लगे ?
हम अब ही उस को प्रकृत संख्या नहीं दे सक्ते,
किन्तु हां यहांतक कह सक्ते है जो हरेक व्यक्ति
पाँच मुहूर्तकाल में निज निज उंगलीसे यदि गिने
तो उसका अन्त पा सक्ता है । दृढत हिन्दू समा-
जके सामने ब्राह्मसमाज एक जलबुद्बुदके समान,
दूतना कहनेसे भी कुछ अत्युक्ति सूचित नहीं होती
है । हम महात्मा श्रीमदाबु देवेन्द्रनाथ ठाकुरको
राजा राममोहन रायके एक प्रधान शिष्य कहे तो
कह सक्ते हैं । वे एक परम धर्मात्मा करके सबके
निकट परिचित हैं औ हम भी इस बातको अङ्गी-
कार करते हैं, किन्तु राजा राममोहन रायके
उद्देश्य साधनार्थ वे कुछ भी न कर सकें । मूर्ति-
पूजाको निर्मूल कर ऐकेश्वरवादका प्रचार करना
राजा राममोहन रायका एक प्रधान उद्देश्य था ;
बाबू देवेन्द्रनाथठाकुर उनका शिष्य हैं, वे उस उद्देश्य
सिद्धिकी आशा छोड़ छाड़ कर अस्थिर चिन्ततासे
देश देशान्तर में नगर नगर में पर्वत कानन में
घुमते फिरते रहते हैं । बाबू केशवचन्द्र सेन,
जो कि महात्मा देवेन्द्र नाथ ठाकुरका एक प्रधान
शिष्य हैं, आज कलके सभ्य जगत में एक प्रधान
सद्गता औ धर्मपरायण करके प्रसिद्ध हैं । वे जो
एक बड़े सुचतुर, विद्यावान् औ सद्गता हैं, यह हम
भी सुक्तकण्ठसे स्वीकार करते हैं ; ब्राह्मधर्मको
वे बद्धत ही चाहते है और उस धर्मके प्रचा-
रार्थ वे यथोचित त्याग भी सङ्गिये, अधिक क्या

करियाहैन, बलिते कि तौहारइ जग्य तौहार कथित ब्राह्म धर्म एखनओ भारतवर्षे जीवित रहि-
याह। तौहार कयेक जन शिष्य देश देशान्तरे
याहिया प्रचार करिया थाकेन। तौहाराओ अति
सबल उन्हाही एवं निर्भौक। बाबु केशवचन्द्र
ब्राह्म धर्मके सर्वदाई नूतन वेशे साधारणेर
सम्मुखे उपस्थित करिया लोकेर हृदय मन आक-
र्षण करिते ईच्छा करेन। परिवर्तनइ तौहार एक
मात्र धर्मोन्नतिर परिचायक। तनि ईहाओ आशा
करेन ये भारतवर्ष हईते एकेवारे “पौड-
लिकता” विदूरित हईक एवं जातिभेद उठिया
गिया समस्त पृथिवीर लोक एक जातिते परि-
गणित हईक। ए आशा किछू नूतन आशा नय,
आमराओ झुद्ध प्राणि हईया मध्ये मध्ये तौहार
आशा मरीचिकाके सत्य मने करिया थाकि, किन्तु
परफणें वातूलैर प्रलापवत् प्रतीत हय। किछू
दिन हईते बाबु केशवचन्द्र सेन एकटि नूतन
मतैर आविष्कार करियाहैन से मतटीर नाम
“आदेश।” यदिओ ए मतटी आगादेर निकट
नूतन नहे, किन्तु तौहार पक्षे सम्पूर्ण नूतन, केन
ना तनि ए मतटीके तौहार “नवविधान” रूप नव-
रचित ईच्छाजालैर गूँन करिया साधारणेर निकट
प्रचार करितेहैन। केशव बाबु बलेन, ये तनि
मध्ये मध्ये ईश्वरैर निकट हईते आदेश पाहिया
थाकेन, एवं सेई सकन आदेशइ तनि उपदेश
ओ वक्तृतादिर द्वारा साधारणेर निकट प्रकाश
करिया थाकेन। आमरा आर्य धर्मावलम्बी श्रुतरां
आमराओ आदेशवाद (दैववाणि) मानिया थाकि,
किन्तु आमरा एई उनविंश शताब्दीर घोर नास्तिक-
ता ओ कपटतार मध्ये बाबु केशवचन्द्र सेनके
विषय विलासे आगस्त देखियाओ तनि ये ईश्वरानु-
प्राणित हईया थाकेन एकथा आमरा कथनइ
विश्वास करिते पारि ना। ईश्वरादिक्ते हउया बड़
कठिन कथा। तौहार साधन श्रुतत्रु। ब्राह्म समाजैर
आदिक्ते साधन प्रणाली अवलम्बन करिले ईश्वरादेश
कथनइ श्रवण करा याय ना। यदि केह यथार्थ
रूपे ईश्वरादेश श्रवण करिते चाहैन तवे
तौहाके आर्य शास्त्रोक्त साधन पद्धति अवलम्बन
करा उचित। बाबु केशवचन्द्र सेन कि जनक
राज्जार गाय ग्रहर्षि हईते चाहैन? जनक राजा

उन्हीके यत्नसे मानो उनके कथित ब्राह्मधर्म अव-
तक भी भारतवर्ष में जीवित रहा है। उनके कैक
शिष्य देश देशान्तर जा जाकर धर्मका प्रचार
किये करते हैं। वे भी सहता, उत्साही औ निर्भीक
चित्त हैं। बाबु केशवचन्द्र चाहते हैं कि ब्राह्म-
धर्मका सदा ही नवीन नवीन वेश बना बना कर
सबके सामने देखावें औ लोगोंके हृदय मनको
मोहावें। परिवर्तन ही उनकी धर्मावृत्तिका
परिचायक है। वे यह भी आशा रखते हैं कि
मूर्तिपूजा भारतवर्षसे एकवार गी दूर होजाय औ
वर्णभेद विचार उठ जाकर पृथ्वीके समस्त लोग
मिलके एकजाति बनें। यह आशा कुछ नवीन
आशा नहीं, हम सब सुदृढ़ जीव होकर भी बीच
बीच में उनकी आशारूप मृगतृष्णाको सत्य सम-
झते हैं, किन्तु क्षणभर में उत्पन्न की प्रलापनिके
भ्रान्ति प्रतीति होती है। थोड़े दिनोंसे बाबु
केशवचन्द्र सेनने एक नवीन मत प्रकाश किया है,
जिसका नाम है “आदेश”। यदि यह मत हमारे
सामने नवीन नहीं, किन्तु उनके लिये सम्पूर्ण
नवीन हैं, क्यों कि इस मतको वे अपने नव रचित
नवविधानरूप इन्द्रजालके जड़ करके साधारणके
सामने प्रगट करते हैं। केशव बाबु कहते हैं, जो
बीच बीच में उनको ईश्वरसे आदेश मिलता
है, औ वही आदेश वे उपदेशादिका व्याख्यान
करके सर्वसाधारणके निकट प्रचार करते हैं।
हम सब आर्यधर्मावलम्बी, सुतरां हम भी आदेश
वाद (दैववाणी) को मानते हैं, किन्तु हम इस
जमीन शताब्दी की घोर नास्तिकता औ कपटताके
मध्य में बाबु केशवचन्द्र सेनको विषय विश्वास में
आसक्त देखकर भी, उनसे जो ईश्वरवाणी सुनी
जाती है, यह कभी विश्वास नहीं कर सकता है।
ईश्वरादिष्ट होना बड़ी कठिन बात है, उसके लिये
साधना कुछ धीर ही है, ब्राह्मसमाजके आदेशानु-
सार साधनकी रीतिपर चलनेसे ईश्वरवाणी कभी
नहीं सुनीजा सक्ति है। यदि कोई यथार्थ रीति
ईश्वरवाणी सुनने चाहे तो उनको आर्यशास्त्रोक्त
साधनविधिकी अवलम्बन करना चाहिये। बाबु
केशवचन्द्र सेन क्या जनक राजाके न्याय मन्त्रि
बनने चाहते हैं? जनक राजा मन्त्रियों में एक
मन्त्रिय पद ही नहीं, किन्तु वह भी स्वरूप रखना

एकजन त्रान्निष्ठ गृहस्थ हिलेन मत्ता, किन्तु से
त्रेतायुगेर कथा, तथनो पृथिवीते त्रिपाद
धर्मेर आविर्भाव हिल, “कलियुगेर जनक राजार”
आविर्भावे विविध रहस्यजनक व्यापार अभिनीत
हईतेछे । एई नव विधानास्तुर्गत आदेश बादई
बाबु केशवचन्द्र सेनके साधारणेर निकट हास्या-
स्पद करितेछे एवं ताँहार उद्देश्य सिद्धि पक्षे
विशेष व्याघात जन्माईतेछे । एई सकल रहस्य-
जनक व्यापार देखिया आमादेर एथन आशा हई-
तेछे ये, भारते अभिनव ब्राह्मधर्म लक्षप्रतिष्ठ
हईते पारिवे ना । ब्राह्मेरा “पौंडलिकताके”
गुरुतर पाप बलिया विश्वास करिया থাকेन, एवं
हिन्दुदिगके पौंडलिक मने करिया, ताँहादेर
भुक्तिर जन्म अश्रुपातेर सहित ईश्वरेर निकट
प्रार्थनादि करिया থাকेन । आमरा समस्त आर्या-
जातिर प्रतिनिधि स्वरूप हईया ताँहादिगेर ए
प्रकार मङ्गल कामनार जन्म विशेष कृतज्ञ हई-
तेछि, किन्तु एकटा कथा ना बलिया, फास्तु थाकिते
पारितेछि ना ; आमरा जानि ब्राह्मेरा विश्वास
करिया থাকेन ये, ईश्वर सर्वव्यापी, त्रिनि ओत
प्रोतभावे समस्त जगते विराज करितेछेन,
त्रिनि एई प्रस्तुर निर्मित मूर्तितेओ विराज करिया
थाकेन ; एक अविश्वासी ब्राह्मेर निकट सेटी प्रस्तुर
निर्मित मूर्ति व्यातात आर किछुई उपलब्धि हईल
ना, किन्तु एकजन यथार्थ भगवद्भक्त आर्या भक्तिर
गुणे (ईश्वरेर गुणे नहे) सेई प्रस्तुर निर्मित
मूर्तिर मध्ये ईश्वरके जाङ्गल्य रूपे प्रकटित
करिया, ताँहार प्रफुल्ल आनन दर्शने परितृप्त हईया
थाकेन । निरवलम्ब उपासना बड़ई कठिन साधन ।
तत्त्वज्ञानेर स्फूर्तिर सङ्गे सङ्गे ताँहार स्पर्हा रुद्धि
पाईते থাকे । ब्राह्मेरा स्वावलम्बी उपासनार प्रति
बुद्धि पोषण करिया, आपनादेर धर्मोन्नति पक्षे
विशेष व्याघात जन्माईतेछेन । ताँहारा कि मने
करियाछेन ये, ताँहारा ताँहादिगेर अभिनव ब्राह्म
धर्म प्रचार द्वारा भारतवर्ष हईते ताँहादेर कथित
“पौंडलिकताके” विदूरित करिते पारिवेन ।
एरूप यदि कथन आशा करिया থাকेन, ताँहा
हईले ताँहारा निश्चय जानिवेन येताँहादेर आशा
फलवती हईवार नहे । मनुष्य प्रकृतिर यत दिन
तारतम्य अवस्था থাকिवे, तत दिन धर्म साधन

आदिवे जो वे लेता युग में आविर्भूत हुए थे जो
उस समय धर्म भी त्रिपादयुक्त विद्यमान था । अब
“कलीयुगके जनकराजा” नाना भान्तिकी व्यापारे
जो कि रहस्यसे पूर्ण है, अभिनीत होते जाते हैं ।
इस “नवविधान” की “आदेशवाद” ही केशव
बाबुकी सबके सामने हास्यास्पद बना रही है जो
उनकी सङ्कल्पसिद्धि में भी हानी पड़ जाती है । ये
सब रहस्यजनक व्यापार देखकर हम सबकी अब
आशा होती है जो नवीन ब्राह्मधर्म भारतवर्ष में
लक्ष्यप्रतिष्ठ नहीं करेगा । ब्राह्मलोग मूर्तिपूजाकी
बड़ा भारि पाप समझते है, आर्यधर्मीयोंको मूर्ति-
पूजनेद्वारे मानकर उन्हींकी मुक्तिके अर्थ आसु
गिरातेहुए ईश्वरके निकट प्रार्थनादि भी किये
करते हैं । हम समस्त आर्य जातिके प्रतिनिधि
बनकर उन्हींकी इस भान्ति कल्याण कामनाके
निमित्त विशेषरूप कृतज्ञता मानते हैं, किन्तु एक
बात हमसे बिन कहे नहीं रहे बनते हैं ; हम
जानते हैं जो ब्राह्मलोग इतना मानते हैं, कि
ईश्वर सर्वव्यापी है, वे श्रोतप्रोत करके समस्त
जगत में विराजकर रहे हैं, वे इस पत्थरसे बना
हुआ मूर्ति में भी प्रगट हैं ; एक अविश्वासी
ब्राह्मके आसने बह पत्थरसे बनायाहुआ मूर्ति
छोड़के दुसरा कुछ भी भाषित न होगा, किन्तु एक
प्रकृत भगवद्भक्त आर्यने भक्तिके गुणसे (ईश्वरके
गुणसे नहीं) उस पत्थर को मूर्ति में ईश्वरको
उत्तमस्वरूपसे प्रगटकर उनके प्रफुल्ल सुखारविन्द
दर्शनपूर्वक परितृप्त होते रहते हैं । निरवलम्ब
उपासना अत्यन्त कठिन साधना है । तत्त्वज्ञान की
स्फूर्तिके सङ्ग ही सङ्ग उसकी स्पृहा दृष्टि होती
रहती है । ब्राह्मलोग स्वावलम्बी उपासना की
रीतिपर आरुढ़ रहकर अपनी अपनी धर्मोन्नति
का विशेष ध्यान पड़वाते हैं । वे क्या सोचते हैं
कि अभिनव ब्राह्मधर्मके प्रचारसे उन्हींके कथित
“मूर्तिपूजा” की रीति भारतवर्षसे उठ जायगी ?
इस भान्ति आशा यदि कभी किये होती वे स्थिर
रहें जो उन्हींकी आशा कभी फलवती होनेवाली
नहीं । जबतक संसार में मनुष्यों की उन्नति
अवस्था बनी रहेगी तबतक धर्मसाधन की रीति
जुही जुही अवश्य ही रह जायगी । सैकड़ों धर्म
संस्कारक यदि ईश्वर की आदेशविधि (परवाना)

प्रणालीर विभिन्न अवधार अस्तित्व থাকिवे, शत शत धर्मसंस्कारक जेखर आदेशलिपि प्रदर्शन करिया, एकेखर बाद प्रचार करिलेও मनुष्य प्रकृतिर सामञ्जस्य स्थापन करিতে পারिवेन না।

आज काल आर्याधर्म समाजेर दूरवस्था देखिया चारिदिक हईते नाना प्रकृतिर धर्म संस्कारकदेर आविर्भाव हईतेछे। ईहारा सकलेई भारतेर दुःख देखिया अश्रुवर्षण करितेछेन, एवं ईहार परित्राणेर जग्य व्यतिव्यस्त हईया पड़िया छेन। किन्तु भारतवासी आर्या सन्तानेरा तौहा-दिगके चिनिते पारिया, तौहादेर अभिसन्धि बुझिते पारियाछेन। तौहारा एखन निद्रित नई, जाग्रत हईयाछेन एवं तौहादेर प्राचीन पवित्र आर्य धर्मेर पुनरुद्धार करिते प्रयत्न हईयाछेन। ये आर्य धर्म प्राचीन आर्याकुलके पृथिवीर शीर्ष स्थानीय करियाछिल, आज ताहार प्रतिभा मलिन करे काहार साध्य, भगवान् आर्य धर्मेर मङ्गल साधन करुन এই आगादेर प्रार्थना। यदि भविष्यत् भारतेर धर्म पिपाना अफुल्ल ओ बलवती থাকे, यदि आध्यात्मिक विज्ञान मनुष्येर तृतीय चक्षुर स्वरूप बलिया भारत ताहार उन्मीलने बल करे, यदि प्रकृत ब्रह्म जिज्ञासा भारतेर मनके उद्भोजित करिया देय तबे निश्चयई अमरा बलिते पारि वे आर्य धर्मई पुनरुज्ज्वल ओ सूर्यावन्त उद्भासित हईया उठिबे। दिवागमे नक्षत्र, खद्योत, दीपादिर ज्योतिर न्याय आज कालेर अन्तान् क्षुद्र धर्म मलिन ओ निर्वापित हईया बाईबे।

भारतवर्षीय आर्यधर्म प्रचारिणी सभार उद्देश्य।

१। भगवद्वाणी वेदादि बोधित सनातन आर्य धर्मेर पुनरुद्दीपन एवं आश्रमोचित धर्मोपदेशादि द्वारा सर्वसाधारणके मुक्तिमार्गे अवर्धित करिते हईबे।

२। धर्मभाव सूत्रे भारतीय आर्य धर्मावलम्बिदिगेर मध्ये वासस्थान, भाषा, परिच्छद ओ वर्ण निर्विशेषे मित्रता ओ एकता दृढ करिते एवं अन्त्या धर्मावलम्बिदिगेर सहित बाहाते कोनरूप विरोध उपस्थित ना हय, वरन् एकदेशे वसि जग्य सहानुभूति प्रदर्शन करिते हईबे।

देखाकर एकेखरबाद प्रचार करते रहे, तौभी मनुष्य प्रकृतिका सामञ्जस्य कभी नहीं बना सकेछे।

आजकाल आर्यधर्म समाज की दुईया देखकर चारों ओरसे नाना भान्तिके धर्मसंस्कारकोंका आविर्भाव हो रहा है। ये लोग सबकोई भारतके दुःख देखकर आंसु गिरा रहे हैं औ इफ्फका परि-
ताणार्थ व्यतिव्यस्त हो उठे हैं। किन्तु भारत-
निवासी आर्यवंशीगण उन्हें पहचान औ उन्हींकी अभिसन्धि समझ लिये हैं। अब वे लोग सोएछए नहीं, जाग चुके हैं औ उन्हींके प्राचीन पवित्र आर्य धर्मका पुनरुद्धार करने में प्रयत्न छए हैं। जो आर्य धर्मने पुराने आर्य लोगोंको पृथिवीके शीर्षस्थानीय किया था, अब किसका सामर्थ्य है जो उसकी प्रतिभाको मलिन करे। भगवान् आर्य धर्मका मङ्गल साधन करें यही हमारी प्रार्थना है। यदि भविष्यत भारत की धर्मदृष्टि अटुट औ प्रबल रहे, यदि आध्यात्मिक विज्ञानको तिसरे नेत्र मानकर भारत उसको खुलनेका यत्न करे, यदि प्रकृत ब्रह्म जिज्ञासा भारतको उत्तेजित कर दे, तो हम निश्चय कह सके हैं जो आर्य धर्म ही पुनरुज्ज्वल औ सूर्यके न्याय उद्भासित हो उठेगा। दिवागम से नक्षत्र, भगयोगिनी, दीप आदिके ज्योतिके समान आज कलके और और क्षुद्र धर्म सब मलिन औ निर्वापित हो जांगे।

भारतवर्षीय आर्यधर्मप्रचारिणी सभाका उद्देश्य।

१। भगवद्वाणी वेदादि बोधित सनातन आर्य धर्म की पुनरुद्दीपना औ आश्रमोचित धर्मोपदेशादि करके सब जनको मुक्तिमार्ग में प्रवृत्ति देना।

२। वासभूमि, भाषा, परिच्छद औ वर्णभेद पर ध्यान दिये बिना धर्मभावसे भारतवर्षीय आर्य धर्मावलम्बियोंके मध्य में परस्पर मिलता औ एकताको दृढ करना औ अन्यान्य धर्मावलम्बियोंके किसी रीति विरोध ना हो, वरन् एकदेश में निवास निवन्धन परस्पर सहानुभूति प्रकाश कीजाय तदर्थ यत्न करना।

३। भारतवर्षे आर्य वा संस्कृत भाषाए प्रति साधारणेर अनुरागाकर्षण एवं तदनुशीलनेर उन्नति साधन करिते हईवे।

४। भाव ओ कवित्वेर अवगुणने इतिहास, पुराण, तन्त्रादिते ये वैदिक उज्ज्वल ज्ञानोपदेश, दार्शनिक ओ वैज्ञानिक निगूढ तत्व समूह लुकारित रहियाछे, तत्ताव उन्मोचन करिया, सरल भावे साधारणके समर्थ पथ प्रदर्शन करिते हईवे।

सभार नियमावली।

१। “भारतवर्षीय आर्यधर्म प्रचारिणी सभा” सम्मिलित भारतीय सभा बनिया जानिते हईवे, ईहा कोन स्थानीय वा साम्प्रदायिक सभा नहे।

२। भारते आर्य धर्मेर पुनः प्रचारिणि द्वारा एतत् सभार गुरुतर उद्देश्य साधनादि जग्य अन्यान एकलक्ष मुद्रा संग्रह करिते हईवे। এই मूल धनेर उपसह्य हईते कतिपय सुयोग्य “धर्माचार्य” भारते चिरदिन धर्मोपदेश दाने निबुद्ध থাকिवेन एवं आर्य शास्त्र समूह संगृहीत ओ आर्य-शास्त्रेर अनुवाददि (भारतीय विविध भाषा) पुस्तक ओ पत्रिकाकारे प्रचारित हईवे। मूल धन हईते कोन रूप व्यय निर्वहित हईवे ना।

३। सभार मूल धन संग्रह काले, एककालीन दानई ग्रहीत हईवे, केवल स्थानीय सभासमूह मासिक वृत्ति दिते अस्वीकार करिले, ताहा प्रत्याख्यान करा हईवे ना।

४। एतत् सभा “भूमेर आर्य धर्म प्रचारिणी सभा” अथवा भारतेर जग्य कोन स्थानीय सभार अधीन থাকिवे ना। ईहा स्वतन्त्र भावे समस्त आर्यधर्म सभार कल्याण कुशल रक्षा करिवेन।

५। ये समस्त आर्य धर्म सभा (ये कोन नामेई हउक) भारतेर प्रकृत कल्याणेर जग्य प्रतिष्ठित हईयाछे, तन्मध्ये ये ये सभा एतत् सभार सहित सम्मिलित हईया एतत् सभार प्रवक्तानुसारे कार्य करिते থাকिवेन, तत् सभाके “सहयोगिनी सभा” बनिया आदर पूर्वक ग्रहण करा याईवे ओ परस्पर परस्परके निज निजोचित सहाय्यता सह्यता करिते থাকिवेन।

६। आर्य वा संस्कृत भाषाके ओर भारत-वासियोंके अनुराग बढ़ावना ओ इस भाषा की उन्नति करना।

७। भाव ओ कवित्वरूप परदे में ठके हुए पुराण ओ तन्त्रादिके मध्य में जो वैदिक उज्ज्वल ज्ञानोपदेश, दार्शनिक ओ वैज्ञानिक निगूढ तत्व-समूह छिप रहे हैं, उन सबको प्रगटकर सरल रीतिसे सर्वसाधारणको धर्ममार्ग देखाय देना।

सभाकी नियमावली।

१। “भारतवर्षीय आर्यधर्म प्रचारिणी सभा” को सम्मिलित भारतीय सभा करके जानना, यह सभा किसी एक स्थान अथवा किसी एक सम्प्रदाय के लिये नहीं बनी है।

२। भारतवर्ष में आर्यधर्मका पुनः प्रचारादिके द्वारा इस सभाके गुरुतर उद्देश्य साधनार्थ अन्यून लक्ष रुपये संग्रह होना चाहिये। इस मूल धनके लाभसे कतिपय सुयोग्य धर्मोपदेश (इन्होंके नाम “धर्माचार्य” है) नियत हुए भारत खण्ड में बराबर धर्मोपदेश करते रहेंगे, आर्य-शास्त्रसमूह संग्रह कियेजांगे, ओ आर्य शास्त्रोंकी उल्लेख (भारतीय विविध भाषा में) पुस्तक ओ पत्रिकाकी रीति सुदृढ होती ओ निकलती रहेगी। किसी प्रबन्ध में मूल धन व्यय न किया जायगा।

३। सभाका मूलधन एकट्ठे करने में दाताओंसे एक बारभी दान लिया जायगा, केवल देश-देशान्तर की सभासमूह यदि मासिक वृत्ति देने चाहें तो उसको अस्वीकार न किया जायगा।

४। यह सभा “भूमिेर आर्यधर्म प्रचारिणि” अथवा भारतीय अन्य किसी स्थान की सभाके अधीन न रहेगी, यह स्वतन्त्र रीतिसे सारे आर्य धर्म सभाका कल्याण कुशल रक्षा करती रहेगी।

५। जितनी आर्यधर्म सभा (जिस किसी नामसे प्रसिद्ध हो) भारतके प्रकृत कल्याणके अर्थ बनी है, उन मेंसे जो जो सभा इस सभासे मिलकर इस सभाके प्रवक्तानुसार कार्य करती रहेगी, उन सभाओंको “सहयोगिनी सभा” मानकर आदर पूर्वक ग्रहण की जागी ओ परस्परको निज निजोचित सहाय्यता सह्यता करती रहेगी।

७। सम्पादक सह साकल्य विंशति जन सयोग्य आर्याधर्मोऽसाहि पुरुष “व्यवस्थापक सभार” सभा थाकिया सभार कार्य कुशल रक्षा करिवेन।

९। এই “व्यवस्थापक सभा” एक स्थानीय महाअगणेर द्वारा रचित हईवेन। भारतेर दिग्-दिगन्त हईते सभा निर्वाचित हईवेन।

८। व्यवस्थापक सभार सभागण समये समये परिवर्तित हईते पारिवेन। भगवत् प्रेरणापर-तन्त्रता जन्तु ओ धर्मप्रचार कार्येर उद्भाविनी सभार सर्वसम्पत्तिक्रमे केवल एतत् सभार संस्थापक ओ सम्पादकेर पद ताँहार ईछानुरूप अविचलित थाकिवे, तनि आवश्यक बोध करिले उपयुक्त पात्रे निज भार ग्रस्त करितेओ पारिवेन।

९। विचारपूर्वक “धर्माचार्य” नियोग, सं-ग्रहीत अर्थेर रक्षणवैक्षण ओ पुष्टि साधन एवं तत्तावद्वावहारेर सहाय्य करई “व्यवस्थापक” सभार विशेष कार्य।

१०। व्यवस्थापकगणेर मध्ये ४ जन मात्र सम-वेत हईलेओ सभार कार्य सम्पन्न हईते पारिवे।

११। एतत् सभार कार्यसम्पत्तीय पत्र व्यव-हारादि तावत् लिपिकार्य, धनागम ओ व्यय सम्पत्तीय विवरण रक्षा एवं आन्तर पूर्वक धनादि ग्रहण ओ प्रदान भार सम्पादकेर हस्ते ग्रस्त थाकिवे। प्रति वर्षेर वैशाख मासे सम्पादक धनेर समागम ओ व्यय विवरण व्यवस्थापक सभार जन्तु प्रदान करिवेन।

धर्माचार्य सम्पत्तीय नियमावली।

१। सत्तरित, शान्तप्रकृति, सहृदयसाहि, आर्या-शास्त्र निपुण, संस्कृत, बाङ्गाली अथवा संस्कृत, हिन्दी आदि भारतीय भाषाविद्, त्यागशील, वाक्-पटु, बिजकुलोद्भूत महाअगणई “धर्माचार्य” पदे व्रत हईवेन।

२। शास्त्र व्याख्यान वा वक्तृताकाले शास्त्र, वैशेषादि कौन सम्प्रदायके कौन अवैध आक्रमण करिते पारिवेन ना, वरन् समस्त साम्प्रदायिक मतेर समन्वय करिया दिवेन।

३। देश विदेशे गमन पूर्वक वाचनिक वक्तृता वा शास्त्र व्याख्यानादि द्वारा लोकमण्डलीके धर्म-भावे मत्त करिते थाकिवेन, सर्वत्र आर्याधर्म सभा

४। सम्पादक वा लेखाध्यक्षको लेकर विंशति जनमात्र सुयोग्य आर्यधर्मासाही महात्मा “व्यव-स्थापकसभा” के सभासद बनकर सभाका कार्य-कुशल रक्षा करेङ्गे।

७। यह “व्यवस्थापक सभा” किसी एक स्थान के महात्माओंको लेकर न रही जागी। भारतके दिग्दिगन्त मेंसे सभासदोंको निर्वाचन किया जायगा।

८। समय समय में व्यवस्थापक सभाके सभा-सद सज्जन लोग बदल भी जा सकेङ्गे। भगवत की प्रेरणा परतन्त्रता और धर्मप्रचार कार्य की उद्भा-विनी सभा की सर्वसम्पत्तिसे केवलमात्र इस सभाके संस्थापक और सम्पादक की पदवी उनका जीवित काल विन बदले स्थिर रहेगी। यदि आवश्यक होतो वे स्वयं योग्यपात्र पर कार्यका भार भी दे सकेङ्गे।

९। “व्यवस्थापक सभा” विचारपूर्वक “धर्मा-चार्य” को नियत, संग्रह कियाऊँचा धनको रक्षा और उससे व्यापारों की व्यवस्था करती रहेगी।

१०। व्यवस्थापकों मेंसे अधिक नहो, चार-सभासद मात्र इकट्ठे होने हीसे सभाका कार्य निर्व्वाह हो सकेगा।

११। एतद् सभासम्बन्धी पत्र व्यवहार आदि समस्त लिपिकार्य, धनागम और व्ययसम्बन्धी विव-रण की रक्षा और खासकर पूर्वक धनादि संग्रह वा ग्रहणसम्पादक भी करते रहेङ्गे। वनका आगम और निर्गमका कुलविवरण सम्पादक भी वार्षिक सभा में प्रगट करेङ्गे।

धर्माचार्यसम्बन्धी नियमावली।

१। बिजकुलके उन महात्माओं होनेसे धर्मा-चार्य निर्वाचन किया जायगा जो कि सुचरित, शान्तप्रकृति, उल्लाही आर्यशास्त्रनिपुण, संस्कृत, बाङ्गाली अथवा संस्कृत और आर्य साधारण (हिन्दी) आदि भारतीय भाषाविद्, त्यागी, वाक्-पटु हों।

२। शास्त्रका व्याख्यान वा वक्तृताके, समस्त शास्त्र वैशेष आदि सम्प्रदायको अवैध रीतिसे आक्रमण न कर सकेङ्गे, वरं सब सम्प्रदायके मतका सामन्वय कर देङ्गे।

३। इस दिशान्तर में जानाकर वक्तृता वा शान्तभाषादिद्वारा सब जनोको धर्मभाषी मन

७ संस्कृत विद्यालय स्थापन करिते बह्वान हईवेन
एवं अवकाशक्रमे संस्कृत मूल ग्रन्थानुवाद करिवेन ।

८ । भोजन सामग्री वा वस्त्रादि भिन्न केह
मुद्रादि दान करिले,तिनि ताहा स्वयं ग्रहण करिते
पाईवेन ना, उहा सभार मूलधने मिलित हईवे ।

९ । कोन अवैध आचार वा दुश्चरित्रादि दोस
पुके हईले ताहाके कार्य हईते अवसर दान करा
हईवे ।

वर्तमान व्यवस्थापक सभा ।

श्रीयुक्त राजा तारेयचन्द्र पाण्डे	पाकुड़, सभाधिनायक
„ बाबू कालीप्रसाद चौधुरी	मुजफ्फर, उपाधिनायक
„ कुमार श्रीकृष्णप्रसाद सेन (धः, प्रः, मः) ए	कार्यसम्पादक
„ बाबू कमलेश्वरी प्रसाद (दुश्चामी) ए	सभासद
„ बाबू देवीप्रसाद, डिपुटी कलेक्टर	ए
„ बाबू शामलदास चक्रवर्ती, वि.ए, वि.ए.ए, ए	ए
„ बाबू उगवती चरण घोष	ए
„ बाबू बहेल्लनाथ घोष	ए
„ बाबू तोताराम बन्ना (‘‘डा.बकु’’ सम्पादक) आंगीगड़	ए
„ बाबू महेश्वरनाथ घोषाल	कानपुर ए
„ बाबू दीननाथ गङ्गोपाध्याय	सैरदपुर ए
„ बाबू दरबारी लाल	मतिहारी ए
„ बाबू हरिश्चन्द्र	काशीधाम ए
„ पण्डित गोपीनाथ (मित्रविलास-सम्पादक) लाहौर	ए

प्राप्त पुस्तकेर समालोचना ।

१ । श्रीश्रीमन्नारायण पूजापद्धतिः । मुजफ्फर आर्या-
धर्म प्रचारिणी सभार अन्यातर मुख्या सभासद मातृवर श्रीमदाबू
कालीप्रसाद चौधुरी महोदय कर्तृक प्रकाशित । विना मूल्यो
वितरणीय । ८ शालग्राम पूजा ७ विष्णु पूजा विधि बाबू
हृषिकेश एहि पुस्तक धानि निताउ अमुकूग । विविध शास्त्रीय
प्रमाण संग्रहे ७ एतावतेर तावाधुवादे प्रकाशक अतीव यत्न
७ परिश्रम श्रीकार एवं यथोचित अर्थ बाय पुरस्क पुस्तकाकारे
प्रकाश करिवा उगवदरुणाप्रिय आर्गसन्धान मातृवर परमो-
पकार साधन करिराछेन । ब्रह्मेश्वर ७ ब्रह्मेश्वर श्रीवृद्धि सम्पा-
दनतत्परता अज उक्त महोदय आनामिगेर निताउ
धन्यवादार्ह ।

२ । प्रेम मन्दाकिनी । मातृवर पण्डित श्रीमान्
शारदाप्रसाद विद्याविनोद विरचित । मूला ॥० आठ आना
मात्र । कलिकाता संस्कृत कलेज डिपजिटरी, कानिङ लाइ-
ब्रेरि आदिमे प्राप्य । जनकनन्दिनी पाताल प्रवेश पुरस्क
गोलोक धामे गमन करिले सूर्या कुलतिलक श्रीरामचन्द्र
बनिता-विमोह विधुरता, ताहार धराधाम त्याग, वैकुण्ठे गमन,
कमला सह सखिलन आदि अवलम्बन करिवा प्रेम मन्दाकिनी

करते रहेह्ये । सर्वत्र आर्यधर्म सभा श्री संस्था
विद्यालय स्थापनार्थ यत्न किया करेह्ये ।

४ । भोजनसामग्री वा वस्त्रादि जोड़ यदि
कोई धर्माचार्य के हात मुद्रादि दान करे तो वह
उनको नहीं मिलेगा । सभाके मूलधन में जमाकर
लिया जायगा ।

५ । कोई अवैध आचार वा दुश्चरित्रतादि
दोष उन्हीं में देख पड़नेसे उनको सभाका वाच्य में
से अवसर दिया जायगा ।

वर्तमान व्यवस्थापक सभा ।

श्रीयुक्त राजा तारेयचन्द्र पाण्डे, पाकुड़	सभाधिनायक
बाबू कालीप्रसाद चौधुरी, मुजफ्फर	उपाधिनायक
„ कुमार श्रीकृष्णप्रसाद सेन, मुजफ्फर	
(संस्थाप्रचारकसम्पादक)	कार्यसम्पादक
„ बाबू कमलेश्वरीप्रसाद, (दुश्चामी) मुजफ्फर	सभासद
„ „ देवीप्रसाद, (डिपुटी कलेक्टर) मुजफ्फर	„
„ „ शामलदास चक्रवर्ती, वि.ए. वि.ए.ए. मुजफ्फर	„
„ „ भगवतीचरण घोष,	„
„ „ महेश्वरनाथ घोष,	„
„ „ तोतारामबन्ना (भारतवन्द्य सम्पादक) आंगीगड़	„
„ „ महेश्वरनाथ घोषाल	कानपुर
„ „ दीननाथ गङ्गोपाध्याय	सैरदपुर
„ „ दरबारी लाल,	मतिहारी
„ „ हरिश्चन्द्र,	काशीधाम
„ पण्डित गोपीनाथ, (मित्रविलाससम्पादक) लाहौर	„

प्राप्तपुस्तकोंकी समालोचना ।

१ । श्रीश्रीमन्नारायण पूजापद्धतिः (बङ्गाल में) ।
मान्यवर श्रीमान् बाबू कालीप्रसाद चौधुरी आर्यधर्म प्रचा-
रिणी सभा मुजफ्फरके एक सूर्य सभासदने प्रकाशकर विन
मूल्य छिने दान कर रहा है । शास्त्रालय जीकी पूजा श्री विष्णु
पूजाकी विधि व्यवस्था गिन्तार्थ यह पुस्तक परम उपकारी है ।
भक्ति भातिके शास्त्रप्रमाण संपन्न श्री इन सबकी उद्घाटन
ने प्रकाशक जीने अतीव यत्न श्री परिश्रम श्रीकार श्री यथो-
चित धनव्यय पुरस्क पुस्तकाकार ने प्रकाश करके भगवदुत्तमा-
प्रिय करके आर्य सन्तानका परमोपकार किया । निज देश
औ निज धर्मकी श्रीदृष्टि करने ने तत्पर देखकर हम उक्त
महात्माको परम धन्यवादयोग्य मानते हैं ।

२ । प्रेममन्दाकिनी (बङ्ग भाषा में) । मान्यवर
पण्डित श्रीमान् शारदाप्रसाद विद्याविनोद जीकी यनाई छत्र
है । मूल्य ॥० आना मात्र । जनकनन्दिनी सीता पाताल
प्रवेशपुरस्क मोक्षक धामको सिधरते पर श्रीरामचन्द्रकी बनिता
वियोग-विधुरता, उनका मूढाव परिहान, वैकुण्ठकी सिध
रना, कमला सहित मित्रता आदि प्रसन्न अवलम्बन करके
‘‘प्रेममन्दाकिनी’’ नाटक की रीतिसे रची गयी है । उक्त
की किसी किसी स्थली रचना श्री भावनाधुरीके सुखी पाठ

নাট্যকাব্যে রচিত হইয়াছে। লেখকের কোন কোন স্থানের রচনা ও ভাব মাধুরীর গুণে পাঠকের অগ্রদ্বারা বেগবতী হইয়া প্রেম সন্ধাকিনীতে মিশ্রিত হয়। ঐদৃশ সত্তাবপূর্ণ নাটক গুলি নাট্যাগার অভিনীত হইলে নরকমণ্ডলী আখ্যাত্যাব ভাণ্ডারের অনেক বিচিত্র পবিয় চরিত্রের উপাধান সংগ্রহ করিতে পারেন। রচনা সর্বদা স্নন্দর না হউক, প্রশংসনীয় হইয়াছে।

৩। দি এন্টি ক্রিস্টিয়ান। (The Anti Christian) এখানি ইংরাজি ভাষায় লিখিত মাসিক পত্র—মাত্রবর খ্রীষ্টক বাবু কালীপ্রসন্ন কাব্যবিশারদ মহোদয় কর্তৃক সম্পাদিত। খ্রীষ্টধর্মের মতবিরোধ, বাইবেলের লিপিবৈষম্য, ভ্রম প্রবাদ, অসারত্ব আদি প্রতিপন্ন করিয়া বর্তমান ভ্রমংক সচেতন ও সাবধান করাই সম্পাদকের প্রধান উদ্দেশ্য। অধুনাতন ধর্ম বিপ্লব কালে ঐদৃশ এক খানি সাময়িক পত্রের অভাব আমরা অনেক দিন হইতে অনুভব করিতেছিলাম। বিশারদ মহাশয় এই মহৎ কার্যে ব্রতী হইয়া আমাদের পক্ষবাদী হইয়াছেন। সম্পাদকের লিপিনৈপুণ্য, রচন-রচনা-চতুর্তা, সংকল্প সাধনোচিত যত্নশ্রুতি অতীব প্রশংসনীয়। যাহারা আখ্যাশাস্ত্রসন্দর্ভ পাঠে উপেক্ষা প্রদর্শন পূর্বক পাদব্রী-নিগের মোহমগ্নে মোহিত হইয়া বাইবেলকে সারগ্রন্থ বলিয়া জ্ঞানেন, তাহারা চক্ষুশ্রীলন পূর্বক একবার এন্টি ক্রিস্টিয়ান পাঠ করুন। আমরা আশা করি এন্টি ক্রিস্টিয়ান শিক্ষিত সমাজের নিকট হইতে যথোচিত সহায়ত্ব ও সাঠায়া লাভ করিয়া ধর্মজগতের আবর্জনা রক্ষা মার্জনা করিতে থাকিবেন। এতৎ পত্রের দীর্ঘ জীবন একান্ত প্রার্থনীয়।

বিশেষ বিজ্ঞাপন।

কর্মখালি।

অনেক গুলি গণিত শাস্ত্রাধ্যাপকের (ক) পদ শূন্য রহিয়াছে। বেতন—“যাহা” চাহিবেন “তাহাই” পাইবেন। যিনি বিশ্ব-বিদ্যালয়ের (খ) বিষয় পরীক্ষায় (গ) যথাবিধি (ঘ) উত্তীর্ণ হইয়াছেন, তিনি ভিন্ন আর কাহারও আবেদন করিবার প্রয়োজন নাই। যিনি এক (ঙ) ভিন্ন আর কোন গণনা করিতে পারেন না, এবং একের মধ্যে যিনি সকল রাশির সমাবেশ (চ) করিতে শিখিয়াছেন, তিনিই আবেদন করিবার স্বেযোগ্য অধিকারী। প্রতিষ্ঠা বা প্রশংসা পত্র (ছ) সহ আবেদন করিলে তাহা অগ্রাহ হইবে। ইতি

শ্রী শ্রী শ্রী সচিদানন্দ হরি ও
সম্পাদক।

মায়াপুর বিদ্যামন্দির।

(ভারত-কার্যালয়।)

- (ক) সমদর্শী মহাত্মা। (খ) সংসারের।
(গ) বিশ্বভোগ বাসনা। (ঘ) বেদান্তবোধিত নিয়মাসুসারে।
(ঙ) এক পরমাত্মা।
(চ) সচরাচর জগৎ পরমাত্মার সংস্থিত, এইরূপ বর্ণন।
(ছ) নিজ প্রতিষ্ঠা বা শোভালাভ তৃষ্ণা।
(জ) মায়ার বিবর্তিত সংসারে আত্মত্ব ভিত্তিবর্ষই কার্যকর হইয়া থাকে প্রসঙ্গ।

কই আঁকই অঁকই ধারা তেজ বহুতী জ্বর মৌলস্বাক্ষরীনে জেঁ
জা মিলতী হৈ। রহু মালি ভলন মাধুর্ষ নাটকী যদি নাহু-
যালা জেঁ অভিনীত জ্ঞান করে' নো আর্জ' মাধু মাধুতারকী
অনেক বিচিত্র পবিয় বরিলকা তথাধান দর্শকমণ্ডলী ধংস
কর যন্তে হৈ'। রচনা স্বাক্ষরসুন্দর ন হৌ কিন্তু প্রযো-
যোগ্য জ্ঞর হৈ।

২। দি এন্টি ক্রিস্টিয়ান। (The Anti Christian) যত্নমূলক পত্র অংরেজী ভাষা জেঁ লিখিত। মান-
নীয় শ্রীমান বাবু কালীপ্রসন্ন কাব্য-বিশারদ জেঁকা সম্পাদিত
হৈ। ইহারি ধর্মকা মতবিরোধ, বাইবেলকা সিদ্ধিভেদ্য,
ভ্রম প্রবাদ, অসারত্ব আদি প্রমাণ কর আজ কলকৌ অনুয্যীকৌ
সচেতন জৌ সাবধান করনা সম্পাদকজৌকা প্রধান অভিপ্রায় হৈ।
বর্তমান ধর্মবিপ্লবকৌ সময় রহু মালি এক সাময়িক পত্রকা
অভাব হুস অনেক দিনকৌ অনুভব করতী আস্তী হৈ'। বিশারদ
জৌ রহু মনুত কাব্যভার তঠাকর হুস স্বকৌ পন্থাধাড়া জ্ঞান
হৈ। সম্পাদক জৌ লিপিনৈপুণ্য, রচন-রচনা আতুরী যত্ন-
সাধনযোগ্য সুজ্ঞানজি অতীব প্রশংসনীয় হৈ। জৌ যোগ আর্জ
যাঙ্গবন্দর্ভ পটনকৌ ভবেদা করকৌ পাদব্রীকৌ মোহনলুপ্ত
মোহিত হৌকর বৈবলকৌ বার পন্থ জ্ঞান মানতী হৈ', যে আঁক
হুজকৌ একবার এন্টি ক্রিস্টিয়ান পড়কৌ'। হুস আশা করতী হৈ
কি "এন্টি ক্রিস্টিয়ান" গণিত সমাজকৌ সমীপ যথোচিত
সহায়ত্বমতি হৌ সহায়না পাচর ধর্মজগতকৌ মালিন্য রায়
মিটাতী রহুজৌ। যহু বিবর্তিত রহু অকৌ ইন্দ্রকৌ প্রার্থনা হৈ।

বিশেষ সূচনা।

পদশূন্য হৈ।

বজ্রতেরে গণিত শাস্ত্রাধ্যাপকৌকৌ (ক) পদ শূন্য
পড়ে জুই হৈ'। বেতন "জৌ কুজ" প্রার্থনা করকৌ "সৌ"
হৌ মিলেগা। জৌ বিশ্ববিদ্যালয় (খ) জৌ বিষয়
পরীক্ষা (গ) জেঁ যথাবিধি (ঘ) উত্তীর্ণ জুই হৈ',
বিনা বে জৌর কৌ আবেদন করকৌ। জৌ "এক" (ঙ)
জৌকৌ দুসরা কুজ জৌ গিল নহৌ সন্তে হৈ', জৌ এক
জেঁ জৌ সমস্ত বায়িকা সমাবেশ (চ) করন কৌ
রীতি শিখে হৈ', যে জৌ আবেদন করনেকা যোগ্য
অধিকারী হৈ'। প্রতিষ্ঠা বা প্রশংসাপত্র (ছ) সহিত
আবেদন করকৌ তা প্রার্থনা অগ্রাহ হৌগী।

মায়াপুর বিদ্যামন্দির } শ্রী শ্রী শ্রী সচিদানন্দ
(জ) হরি ও
ভারত কার্যালয়। } সম্পাদক।

- (ক) সমদর্শী মহাত্মা। (খ) সংসার।
(গ) বিশ্বভোগ বাসনা।
(ঘ) বেদান্তবোধিত নিয়মাসুসারে।
(ঙ) এক পরমাত্মা।
(চ) সচরাচর জগৎ পরমাত্মার সংস্থিত, এইরূপ বর্ণন।
(ছ) নিজ প্রতিষ্ঠা বা শোভালাভ তৃষ্ণা।
(জ) মায়ার বিবর্তিত সংসারে আত্মত্ব ভিত্তিবর্ষই কার্যকর হইয়া থাকে প্রসঙ্গ।

সূচনা।

শ্রীপঞ্চমী হইতে প্রতি মাসে “ভারতেন্দু” নামক একখানি মাসিক পত্র (হিন্দীভাষায়) প্রকাশিত হইবে। ইহাতে কাব্য, নাটক, রসায়ন, নীতি, শিল্প, কৃষি, ধর্মশাস্ত্র আদি পুস্তকাকারে লিখিত হইবে। বার্ষিক অগ্রিম মূল্য ৩, টাকা মাত্র। গ্রহণেচ্ছুকগণ নিম্ন লিখিত ব্যক্তিকে পত্র লিখিলে বিশেষ বিবরণ বিদিত হইতে পারিবেন।

শ্রীপণ্ডিত জ্ঞানদত্ত গোস্বামী,
রইস্ মধুসূদন লেন, লাহোর।

কৃতজ্ঞতা সহকারে চতুর্থ বর্ষের মূল্য

প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত রাধা গোবিন্দ রাধ সাহেব বাহাডর দিনাজপুর	৩১/০
শ্রীমদ্রাঘ দয়াল নাথ ভট্টাচার্য্য	কলিকাতা ৩১/০
,, রামদাস সেন	বহরমপুর ৩১/০
,, শ্রীমাদচরণ ভট্টাচার্য্য	ঐ ৩১/০
,, গৌরচন্দ্র রায়	ভগলপুর ৩১/০
,, উমেশচন্দ্র রায়	ঐ ৩১/০
,, কালীনাথ চট্টোপাধ্যায়	লক্ষ্মী ৩১/০
,, কুমারনাথ ভট্টাচার্য্য	গজা ৩১/০
,, গোলোক চন্দ্র ধর	শ্রীহট্ট ৩১/০
,, রাধাগোবিন্দ পাল	ঐ ৩১/০
,, রাজকিশোর লাল (ডি: মা:) গয়া	৩১/০
,, শ্রীমদ্রাঘ দাস চক্রবর্তী বিএ বিএল মুন্সের	৩১/০
,, কালীপ্রসন্ন মুখোপাধ্যায়	বাঁকীপুর ৩১/০
,, চরণ দাস	নরসিংপুর (মধ্যপ্রদেশ) ৩১/০
শ্রীপণ্ডিত রামনাথ বিদ্যাবূষণ	কানসাই ৩১/০
শ্রীমদ্রাঘ কৈলাশ চন্দ্র সিংহ	মনিরামপুর ৩১/০
,, দীনবন্ধু গঙ্গোপাধ্যায়	বাঁকীপুর ৩১/০
,, রমানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ ৩১/০
,, কালীকিশোর সিং	ঐ ৩১/০
,, কালীনাথ শর্মা	হুমুচেরা (কাছাড়) ৩১/০
,, সিন্ধুচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়	শ্রীমঙ্গল ৩১/০
,, গোবিন্দ চন্দ্র মুখোপাধ্যায়	মুন্সের ৩১/০
,, রাখাল দাস সেন	ঐ ৩১/০
,, শরচ্চন্দ্র রায়	ঐ ৩১/০
,, পার্শ্ব চীচরণ গুপ্ত	ঐ ৩১/০
,, বঙ্কুবিকারী চট্টোপাধ্যায়	ঐ ৩১/০
,, জানকীনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ ৩১/০
,, দীননাথ চৌধুরী	ঐ ৩১/০
,, দুর্গানারায়ণ মজুমদার	ঐ ৩১/০
,, সাধুলাল রায়	ঐ ৩১/০
,, উমেশচন্দ্র সান্যাল	ঐ ৩১/০
,, রাখাল দাস চট্টোপাধ্যায়	জামালপুর ৩১/০
,, হরিচরণ বসু	ঐ ৩১/০
,, রাধাকান্ত দাস	ঐ ৩১/০
,, রাধিকাপ্রসাদ বসু	ঐ ৩১/০

প্রতিষ্ঠাপন।

ভারতেন্দু।

জিস মেন কাব্য, নাটক, রসায়ন, নীতি, শিল্প, কবী, ধর্মশাস্ত্র ইত্যাদি বিষয় পুস্তকাকারে মেন প্রকাশিত হুয়া করেনে, প্রকাশারক বসন্তপঞ্চ-মীষে। বার্ষিক অগ্রিম মূল্য ২) হোগী। জিসকো পুস্তক পত্রকা গ্রাহক হোনা হোতো নিম্ন লিখিত ব্যক্তিকে লিখেন।

পং জ্ঞানদত্ত গোস্বামী।

রইস, মধুসূদন লেন, লাহোর।

জাতপ্ৰত্যক্ষ ৪র্থ বর্ষকা মূল্যপ্রাপ্তিস্বীকার।

শ্রীযুক্ত রাধা গোবিন্দ রাধ সাহেব বাহাডর দিনাজপুর	৩১/০
শ্রীমদ্রাঘ দয়াল নাথ ভট্টাচার্য্য	কলিকাতা ৩১/০
,, রামদাস সেন	বহরমপুর ৩১/০
,, শ্রীমাদচরণ ভট্টাচার্য্য	ঐ ৩১/০
,, গৌরচন্দ্র রায়	ভগলপুর ৩১/০
,, উমেশচন্দ্র রায়	ঐ ৩১/০
,, কালীনাথ চট্টোপাধ্যায়	লক্ষ্মী ৩১/০
,, কুমারনাথ ভট্টাচার্য্য	গজা ৩১/০
,, গোলোক চন্দ্র ধর	শ্রীহট্ট ৩১/০
,, রাধাগোবিন্দ পাল	ঐ ৩১/০
,, রাজকিশোর লাল (ডি: মা:) গয়া	৩১/০
,, শ্রীমদ্রাঘ দাস চক্রবর্তী বিএ বিএল মুন্সের	৩১/০
,, কালীপ্রসন্ন মুখোপাধ্যায়	বাঁকীপুর ৩১/০
,, চরণ দাস	নরসিংপুর (মধ্যপ্রদেশ) ৩১/০
শ্রীপণ্ডিত রামনাথ বিদ্যাবূষণ	কানসাই ৩১/০
শ্রীমদ্রাঘ কৈলাশ চন্দ্র সিংহ	মনিরামপুর ৩১/০
,, দীনবন্ধু গঙ্গোপাধ্যায়	বাঁকীপুর ৩১/০
,, রমানাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ ৩১/০
,, কালীকিশোর সিং	ঐ ৩১/০
,, কালীনাথ শর্মা	হুমুচেরা (কাছাড়) ৩১/০
,, সিন্ধুচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়	শ্রীমঙ্গল ৩১/০
,, গোবিন্দ চন্দ্র মুখোপাধ্যায়	মুন্সের ৩১/০
,, রাখাল দাস সেন	ঐ ৩১/০
,, শরচ্চন্দ্র রায়	ঐ ৩১/০
,, পার্শ্ব চীচরণ গুপ্ত	ঐ ৩১/০
,, বঙ্কুবিকারী চট্টোপাধ্যায়	ঐ ৩১/০
,, জানকীনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ ৩১/০
,, দীননাথ চৌধুরী	ঐ ৩১/০
,, দুর্গানারায়ণ মজুমদার	ঐ ৩১/০
,, সাধুলাল রায়	ঐ ৩১/০
,, উমেশচন্দ্র সান্যাল	ঐ ৩১/০
,, রাখাল দাস চট্টোপাধ্যায়	জামালপুর ৩১/০
,, হরিচরণ বসু	ঐ ৩১/০
,, রাধাকান্ত দাস	ঐ ৩১/০
,, রাধিকাপ্রসাদ বসু	ঐ ৩১/০

শ্রীমদ্রাবু কৈলাশ চন্দ্র হানদার	জামালপুর	১)
.. নিবারণ চন্দ্র ঘোষ	ঐ	১)
.. গোপীনাথ রায়	ঐ	১)
.. নীলাধর চট্টোপাধ্যায়	ঐ	১)
.. দিগম্বর চট্টোপাধ্যায়	ঐ	১)
.. বিষ্ণুচন্দ্র ভট্টাচার্য্য	ঐ	১)
.. রমণচন্দ্র দত্ত	ঐ	১)
.. কালীপদ মজুমদার	ঐ	১)
.. অধরচন্দ্র বসু	ঐ	১)
.. অন্নদাপ্রসাদ চট্টোপাধ্যায়	ঐ	১)
.. কৈলাশ চন্দ্র চক্রবর্তী	ঐ	১)
.. শরদাপ্রসাদ সিংহ	ঐ	১)
.. রাজকৃষ্ণ গুপ্ত	ঐ	১)
.. নবীন চন্দ্র দত্ত	ঐ	১)

তৃতীয় বর্ষের বক্সী মূল্য প্রাপ্তি স্বীকার ।

শ্রীমদ্রাবু কৈলাশ চন্দ্র হানদার	জামালপুর	১)
.. পঞ্চানন বরাট	ঐ	১)
.. বিহারীলাল বন্দ্যোপাধ্যায়	ঐ	১)
.. নিবারণ চন্দ্র ভট্টাচার্য্য	ঐ	১)
.. চন্দ্রভট্ট চন্দ্র মজুমদার	ঐ	১)
.. রাসবিহারি ভট্টাচার্য্য	মুন্সের	১)
.. ভগবতীচরণ ঘোষ	ঐ	১)
.. দয়ালকৃষ্ণ নিরোগী	ঐ	১)
.. ভোলানাথ দে (২য় ও ৩য় বর্ষ)	ঐ	১)

বিদেশীয় এজেন্টগণের নাম ।

শ্রীমদ্রাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	বাঁকীপুর ।
.. .. শ্যামবন্দ্য বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী ।
.. .. জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর ।
.. .. পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট ।
.. .. ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্তী এম্. এ. বিএল,	গয়া ।
.. .. বিহারীলাল রায়,	জামালপুর ।
.. .. রমেশচন্দ্র সেন,	ঐ
.. .. উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	ঐ
.. .. রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিকাতা ।

উপরে ক্রম এজেন্ট মহোদয়গণকে শুভস্বাস্থ্যের গ্রাহক মহাশয়
গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব ।

মুন্সের, আর্থিক- } শ্রী শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন ।
প্রচারিণী সভা } সম্পাদক ।

এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুন্সের আর্থিক প্রচারিণী
সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে ।

শ্রীমদ্রাবু কৈলাশ চন্দ্র হানদার,	জামালপুর	১)
.. নিবারণচন্দ্র ঘোষ,	..	১)
.. গোপীনাথ রায়,	..	১)
.. নীলাধর চট্টোপাধ্যায়,	..	১)
.. দিগম্বর চট্টোপাধ্যায়,	..	১)
.. বিষ্ণুচন্দ্র ভট্টাচার্য্য,	..	১)
.. রমণচন্দ্র দত্ত,	..	১)
.. কালীপদ মজুমদার,	..	১)
.. অধরচন্দ্র বসু,	..	১)
.. অন্নদাপ্রসাদ চট্টোপাধ্যায়,	..	১)
.. কৈলাশচন্দ্র চক্রবর্তী,	..	১)
.. শরদাপ্রসাদ সিংহ,	..	১)
.. রাজকৃষ্ণ গুপ্ত,	..	১)
.. নবীনচন্দ্র দত্ত,	..	১)

২য় বর্ষকা বক্সী মূল্যপ্রাপ্তি স্বীকার ।

শ্রীমদ্রাবু কৈলাশ চন্দ্র হানদার,	জামালপুর	১)
.. পঞ্চানন বরাট,	..	১)
.. বিহারীলাল বন্দ্যোপাধ্যায়,	..	১)
.. নিবারণচন্দ্র ভট্টাচার্য্য,	..	১)
.. উর্জ্জ্বলচন্দ্র মজুমদার,	..	১)
.. রাসবিহারি ভট্টাচার্য্য,	মুন্সের	১)
.. ভগবতীচরণ ঘোষ,	..	১)
.. দয়ালকৃষ্ণ নিরোগী,	..	১)
.. ভোলানাথ দে, (২য় বর্ষ)	..	১)

বিদেশী এজেন্ট সকল নাম ।

শ্রীমদ্রাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়,	বাঁকীপুর ।
.. .. শ্যামবন্দ্য বন্দ্যোপাধ্যায়,	মতিহারী ।
.. .. জগদ্বন্ধু সেন,	লাহোর ।
.. .. পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়,	রামপুরহাট ।
.. .. ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্তী, এম্. এ. বিএল	গয়া ।
.. .. বিহারীলাল রায়,	জামালপুর ।
.. .. রমেশচন্দ্র সেন,	জামালপুর ।
.. .. উপেন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায়,	জামালপুর ।
.. .. রাধিকানাথ গোস্বামী,	কলিকাতা ।

উপরে উক্ত এজেন্ট মহোদয়গণের পাঠ তদন্ত স্বাক্ষর
প্রাপ্তক মন্তব্যসমূহ মূল্যাদি দে' তো মে' প্রাপ্ত ।

মুন্সের, আর্থিক- } শ্রী শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন
প্রচারিণী সভা । } সম্পাদক ।

এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে মুন্সের আর্থিক প্রচারিণী
সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে ।



एक एव “सुहृद्दर्शो निघनेऽप्यमुयाति यः
शरीरेण समन्नाशं सर्वमन्यन्तु गच्छति ॥”

“एक एव सुहृद्दर्शो निघनेऽप्यमुयाति यः ।
शरीरेण समन्नाशं सर्वमन्यन्तु गच्छति ॥”

४४ भाग ।	शकाब्दः १८०३ ।	४४ भाग ।	शकाब्दः १८०३ ।
४९ हईते ५४ संख्या ।	कार्तिकसे चैत्र-पूर्णिमा ।	४९ से ५४ संख्या ।	कार्तिकसे चैत्र-पूर्णिमा ।

परमार्थ सार ।

(पूर्व प्रकाशिते पर ।)

सर्वाकारो भगवानुपास्यते येन येन भावेन ।
तं तं भावं भूत्वा चिन्तामणिवत् समभ्येति ॥ ७१ ॥

भगवान् सर्वरूपमय, मानव তাঁহাকে যে ভাবে
চিন্তা ও উপাসনা করেন, তিনি চিন্তামণি প্রস্তরের
আয় সেইরূপ ধারণ করিয়াই উপাসকের মনোবাঞ্ছা
পূর্ণ করিয়া থাকেন ।

ছিন্নভ চিন্তামণি প্রস্তরের এইরূপ স্বাভাবিক
গুণ আছে, যে দর্শক তাহাকে একদৃষ্টিতে লক্ষ্য
করিয়া যাদৃশ আকার মনোমধ্যে চিন্তা করিবে,
সংকল্পসূত্রে চক্ষুর্যোতি সহযোগে চিন্তামণিতে
সংযুক্ত হইবামাত্র মণি দ্রষ্টার সংকল্পিতাকার ধারণ
করিয়া থাকে । জগতে যত কিছু পদার্থ দৃষ্ট হয়,
সমস্তই ভগবৎ সত্ত্বাময়, তাঁহার অন্তিহ শূন্য হইলে
কোন বস্তুই বিদ্যমানতা থাকিতে পারে না,
অতরাং তিনিই বিবিধরূপে বিদ্যমান থাকিয়া
বিশ্বের বিচিত্রতা সম্পাদন করিতেছেন । জগৎবীর-

परमार्थ सार ।

(पूर्व प्रकाशितके आगे)

सर्वाकारो भगवानुपास्यते येन येन भावेन ।

तं तं भावं भूत्वा चिन्तामणिवत् समभ्येति ॥ ७१ ॥

भगवान् सर्वरूपमय हैं । मनुष्य उनको जिस
किसी भावसे चिन्ता औ उपासना क्यों न करे, वे
चिन्तामणि पत्थरके समान उसीरूप धारण कर
उपासक की मनस्कामना पूर्ण किये करते हैं ।

इर्लभ चिन्तामणि पत्थरका ऐसा एक स्वाभा-
विक गुण है, जो देखनेहाराने उसको दत्तचित्त
होकर देखते समय जिस भाविके आकार मन में
चिन्ता करेगी, सङ्कल्प स्वरु आंशके ज्योति कुरके
चिन्तामणि में मिलते ही मण्डिने संकल्पानुरूप
रूप धर लेता है । जगत में जो कुछ देख पड़ता
है, समस्त ही भगवत् की सत्त्वासे पूर्ण है । उनके
रहे बिना किसी वस्तु की विद्यमानता ठहर नहीं
सकती है । सुतरां वेही विविधरूपसे भासित होकर
विश्वकी विचित्रता सम्पादन कर रहे है । जगत्वी-

जल येमन मनुष्य कर्तृक कुष्ठे प्रविष्ट हईया कुष्ठाकार धारण पूर्वक पानकर्तार नीतनता ओ पवित्रता विधान करे, भगवान् ओ साधकगणेर भावरूप कुष्ठेर सार्द्ध आणु हईया उपोसकके परिहृष्ट, पवित्र ओ चरितार्थ करिया धाकेन। प्रेम ओ निर्मल भावपूर्ण निगूढ चिन्ताई भगवत् पदलाभेर हेतु।

नारायणमात्मानं ज्ञात्वा सर्गस्थितिं प्रलयहेतुम्।

सर्वज्ञः सर्वभूतः सर्वः सर्वेश्वरो भवति ॥ ७८ ॥

जीव सृष्टि, स्थिति ओ प्रलयकर्ता नारायणके आत्म स्वरूप विदित हईया तन्मय हईया गेले तौहार सर्वज्ञता ओ सर्वभूत स्वरूप बुद्धिर उदय হয় एवं তিনি सर्वेश्वर हईया विराज करিতে থাকेन।

ईदृश तन्मय भाव आणु हईले जीवेर जीवस्य संज्ञा विदूरित हईया अमर कीट सदृश जेश्वरत्व प्राप्ति हईया धाके।

आत्मज्ञसुखं शृणु यन्माहिम्नविभेति कुतश्चित्।

स्वतोरपि मरणभयं भवत्यन्यत् कुतश्चित् ॥ ७९ ॥

याँहाके देखिले जीवेर कोन भयेर संकार হয় ना, সেই আत्मज्ञ विद्वान महापुरुष कখনও শোচনীয়াবস্থা গ্রস্ত হয়েন না, এমন কি তিনি महाबीजसमृद्धि मूढाकेও ভয় করেন না।

आत्मा अतयस्वरूप, यिनि निरन्तर तौहार ध्यान निरत, तिनिओ अतय भाव लाभ करेन, सुतरां तौहार पवित्र प्रकृतिते भय भाव अवधान करिते पाऐरे ना, एही छगुई ईदृश महा साधुके देखिया काहारओ भयेर संकार হয় ना। याँहाके देखिलेई भद्रतार स्मरण হয়, तिनिई भद्र, याँहाके देखिलेई असंकार्येय भावोदय হয় तिनिई असाधु, याँहाके देखिलेई भगवानेर प्रति भक्ति হয় ओ तत्पद स्मृतिपथे आरुढ হয় तिनिई भक्त ओ साधु। एहीरूप याँहाके देखिलेई जीवेर भयोद्वेक হয় तिनि निश्चयई समये भय आणु हईवेन।

अयमस्मिन् वक्रघातक वन्दनमोक्षैर्विचर्जितं नित्यम्।

परमार्थ तद्वैक्यं ह्येनोद्वेकदन्तं सर्वम् ॥ ८० ॥

ये परमार्थ तद्वैक्य ओ उदय रहित, वक्र ओ घातक शून्य एवं वन्दन ओ वृत्ति विवर्जित अर्थात् नित्य एक रस वर्तमान ताहाई एकमात्र सत्य अपर समस्तई मिथ्या।

के जल यदि कोई कुष्ममें धर रखे तो वह जल उस कुष्मके आकार धारण कर पीनेवालाको शीतल औ पवित्र कर देता है, भगवान भी साधकोंके भावरूप कुष्मके सादृश्य पाकर उपासकको परितप्त, पवित्र औ चरितार्थ किये करते हैं। प्रेम औ निर्मल भावसे पूर्ण निगूढ चिन्तन ही भगवानके चरणलाभका हेतु है।

नारायणमात्मानं ज्ञात्वा सर्गस्थितिं प्रलयहेतुम्।

सर्वज्ञः सर्वभूतः सर्वः सर्वेश्वरो भवति ॥ ७८ ॥

जब जीव अपनेको सृष्टि, स्थिति, संहार करने वाले जो नारायण, तन्मय कर जानलेते तब उस में सर्वज्ञता शक्ति, औ मैं सर्वभूतके स्वरूप ऊँ, इस भान्ति बुद्धि उदय होती है औ वे सर्वेश्वर बनकर विराज करते रहते हैं।

इस भान्ति तन्मय भाव मिलनेपर जीवको “जीव” इस संज्ञाके बदले अमर कीड़ाके सदृश ईश्वरत्व मिल जाता है।

आत्मज्ञसुखं शृणु यन्माहिम्नविभेति कुतश्चित्।

स्वतोरपि मरणभयं भवत्यन्यत् कुतश्चित् ॥ ७९ ॥

जिनको देखने पर जीवका भय नहीं होता, वह आत्मज्ञ महापुरुष कभी शोक दुर्दशाको नहीं प्राप्त होते हैं, अधिक क्या, वे महावीर्यवान् मूर्ति मृत्युको भी नहीं डरते हैं।

आत्मा अभयस्वरूप हैं, जो निरन्तर उनके ध्यान में लगे रहते हैं, वे भी अभयपद लाभ करते, सुतरां उनकी पवित्र प्रकृति में भयका भाव ठहर नहीं सकता है, इसी लिये ऐसे महा साधुको देख कर किसीका भय नहीं होता है। जिनको देखते ही भद्रताका स्मरण होता है, वही भद्र हैं, जिनको देखते ही दुष्कर्मका भाव आजाय, वही असाधु, जिनको देखते ही भगवत् पर भक्ति बढ़े औ उनके चरण स्मरण होते रहे वही भक्त औ साधु हैं, उसी रीति जिनको देखते ही जीवका भय ही उनने निश्चय ही किसी समय में महा भयको प्राप्त होके।

अयमस्मिन् वक्रघातक वन्दनमोक्षैर्विचर्जितं नित्यम्।

परमार्थतत्त्वमेकं ह्यतोऽन्यत्तदन्तं सर्वम् ॥ ८० ॥

जिसके अय औ उदय नहीं, वन्दन औ मोक्ष नहीं, वक्र औ घातक नहीं अर्थात् नित्य एक रस वर्तमान परमार्थ तत्त्व ही परम सत्य है, इतर समस्त ही मिथ्या है।

एवंप्रकृति पुरुषविजाय निरस्त कलना जालः ।

आत्मारामः प्रथमः समाहितः केवलो भवति ॥१॥

এই প্রকারে মায়া ও জৈশ্বরকে বিদিত হইলে কলনাজাল বিদূরিত হইয়া যায় এবং জীব আত্মারাম স্বরূপ হইয়া শান্তি লাভ পূর্বক কৈবলাবস্থা প্রাপ্ত হয় ।

क्रमशः ।

धर्मप्रचारकेर अनुग्राहक ग्राहक महोदयमण्लीर निकट सम्पादकेर निवेदन ।

सनातन धर्मरक्षक भगवानेर कृपाय धर्मप्रचारक आपनादिगेर साधु सहायतार नीतल छायाय परिवर्द्धित हईया ओ सुस्थ शरीरेर जीवित থাকिया चारि बंसर काल भारतेर दिग्दिगन्ते विचरणपूर्वक निज कर्तव्य साधने यथामाथा यत्न करियाछैन । आपनारा शिष्यवेषधारी श्रुतिर “धर्मप्रचारक” के ये यथोचित समादर ओ स्नेह दृष्टि करिया ताँहार सहानुभूति ओ कल्याण कामना करिया आसियाछैन, एज्जन्त आमरा आपनादिगेर निकट नितान्त कृतज्ञ आछि । आपनादिगेर सकलैर सहित आमादिगेर चाक्य माका नै थाकिले ओ, आपनादिगेर साधु भाव, सहृदयता, धर्मानुराग आदिर अनुरोधे आपनारा आमादिगेर कार्यक्षेत्रे अतीव सुपरिचित । आमरा एक्के आपनादिगेर परमाश्रयी मने करिया थाकि । भगवान् आमादिगेर आपनादिगेर अनुकम्पा सूत्रे भारतेर सेवाय चिर दिन आवद्ध राखुन ।

विविध हेतु निबन्धन बहू दिन हईते धर्मप्रचारकेर नियमित प्रकाशे किछू अतिरिक्त विलम्ब हईया आसिते छ । वास्तविक ओ आश्विन मासेर पत्र फाल्गुन मासे प्रकाशित हईले प्रकाशक, पाठक, ओ ग्राहक आदि सकलैरई मने धर्मप्रचारकके नितान्त अलस ओ अवसन्न बलिगा बोध होय । এই क्लोपोपशमेर जन्तु आमरा अनन्योपाय हईया पक्षम वर्षे प्रारम्भ कार्तिक हईते फाल्गुन पर्यन्तेर पत्र विविधकारे प्रकाश करिनाम ना । संस्था पूर्णार्थ এই छैज्ज मासेर पत्रई एतन्मासवटेकेर पत्र बलिगा परिकल्पित हईल । एवं एवार हईते

एवमप्रकृतिपुरुषविजाय निरस्त कल्पनाजालः ।

आत्मारामः प्रथमः समाहितः केवलो भवति ॥१॥

इस रीतिसे माया ईश्वरकी विदित होजाने पर कल्पनाजाल छुट जाते हैं औ जीव आत्मारामरूप बनकर शान्तिलाभ पूर्वक कैवल्य गतिकी प्राप्त होता है ।

येष आगे ।

धर्मप्रचारकेर अनुग्राहकग्राहक महोदयोंके निकट सम्पादकका निवेदन ।

सनातन धर्मरक्षक श्रीभगवानकी कृपासे धर्मप्रचारक आपलोगों की साधु सहायता की सुशीतल छाया में परिवर्द्धित होकर औ आनन्दयुक्त शरीर में जीवित रहकर चार वर्ष भारतवर्ष की दिग्दिगन्त में विचरते फिरते ऊँ निज कर्तव्य साधन में साध्यानुसार यत्न किये । आपलोग बालकके भेष लियेऊँ दृष्ट धर्मप्रचारकको जो यथोचित समादर औ स्नेहदृष्टि कर उनकी सहानुभूति औ कल्याण कामना कर आये, एतदर्थ हम आप सबके निकट नितान्त जतन रहे हैं । यदि आप लोंके सबसे हमारा चाक्षुष साक्षात् नहीं, तथापि आप सबके साधुभाव, सहृदयता, धर्मानुराग आदिके अनुरोधसे आप सब हमारे कार्यक्षेत्र में अतीव सुपरिचित हैं । अब हम आपलोगोंको परमाश्रयी कर मानते हैं । भगवान भारतके सेवार्थ आप लोंकी कृपाकृत में हमें चिरदिन आवद्ध रखें ।

विविध हेतु करके अनेक दिनसे धर्मप्रचारकेर नियम पूर्वक प्रकाश होने में थोड़ा वज्रत विलम्ब होता आया । वास्तव में यदि आश्विन मासका पत्र फाल्गुन मास में प्रकाश ऊँ तो प्रकाशक, पाठक और ग्राहक आदि सब किसीके मनमें यही भाषित होता है जो धर्मप्रचारक निपट अलस और अवसन्न हो रहा है । इस लोभ की शान्तिके लिये अनन्योपाय होकर पञ्चम वर्षके मारश्चकाल कार्तिकसे लेकर फाल्गुन पर्यन्तका पत्र भिन्न भिन्न करके प्रकाश नहीं किया गया । संख्या पुरी करनेके अर्थ इस चैत्र मासके पत्रहीकी इन छः मास के पत्र करके कल्पना करी गई और इस बेरसे

नियमित समये यथाक्रमे पत्र प्रकाशित रहैते থাকिबे। ग्राहक ईच्छा करिले पक्षम वर्षेर मूल्य प्रेरण काले पाँच संख्याय मूल्य नून पाठा-इते पारिबेन (अर्थात् विदेशीय १म श्रेणीय ग्राहकगण १५/१०, २य श्रेणीय १०/१०, ३ तय श्रेणीय ५/० एवं स्थानीय १म श्रेणीय १५०, २य श्रेणीय १०/०३ तय श्रेणीय ॥/१० मात्र पाठाईलैइ हईबे, एवं ये सकल महादय महान्ना धर्मप्रचार-केर साहाय्य विवेचनाय पूर्ण मूल्य प्रेरण करिबेन, आगरा अतीव कृतज्ञता सह तद्वाच्य ग्रहण करिया ताँहादिगके धन्यवाद प्रदान करिब ३ चिर-दिन अरण राखिब।

अनुग्राहक ग्राहकगण धर्मप्रचारकेर पक्षम वर्षीय अग्रिम मूल्यादि शीघ्र प्रेरण पूर्वक धर्म-प्रचार कार्येर सहायता करिया आमादिगके कृत-ज्ञता वक्ष करुन।

आर्याशास्त्र विज्ञान।

(पूर्व प्रकाशितेय पर।)

एतच्छब्दविषय छन्देर उदाहरण यथा—

मानवादि ये स्वाभाविक वाक्य प्रयोग करे ताहाई स्वाभाविक छन्देर उदाहरण हल। मने कर, कोन व्यक्ति “राम” एही शब्द करिल। ए व्यक्तिर पुत्रेर नाम राम, स्वयं० रामभक्त, काहार० मृगार उदय रहैले ये “राम,—नारायण” प्रकृति शब्देर उच्चारण करिया থাকे, ताहा० सकले ज्ञात आछेन। एहीरूप श्रोता उल्लिखित “राम” शब्देर छन्दोवातिरेके कोन तात्पर्य ग्रहण करिबे? वक्ता कि आह्वान करिल, किन्ना भक्ति प्रकाश करिल, ना स्वाभाविक राम शब्दइ करिल? वक्ता ताहार पुत्रके यथन सम्बोधन करे तथन० रामशब्देर येरूप आकृति, भगवद्-भावे यथन भगवान्के डाके तथन० तज्जप, आवाय मृगाकालीन० सेई शब्द, शोक प्रकाश कालीन० तज्जप, स्वाभाविक उच्चारणे० ताहाई। एहीरूप केवल मात्र छन्देर इतर विशेषेई श्रोतार भाव एह रहैया থাকे, नतुवा आर उपाय नाई। वक्तार० उद्बुद्धाव प्रकाश करिते ईच्छा रहैले तत्तच्छन्देर आपन रहैतेई आविर्भाव

पत्र नियमित समय पर वञ्चाक्रम प्रकाशित होता रहेगा पक्षम वर्षका मूल्य भेजनेके समय ग्राहक महोदय चाहे तो पाँच संख्याकी मूल्य न्यूनकर भेज सकते है (अर्थात् विदेशी १म श्रेणीके ग्राहक-गण १।॥३॥, २य श्रेणीके १।॥२॥ और ३य श्रेणीके ॥॥ और स्थानीय प्रथम श्रेणीके १॥॥ २य श्रेणीके १॥॥ और ३य श्रेणीके ॥॥ भेजे) औ जो सर्वसङ्गृह्य महात्मा धर्म प्रचारकके साहाय्य की रीति पर पूर्ण मौल भेजेने, हम अतीव कृतज्ञता सहित जतना द्रव्य लेकर उन्को धन्यवाद देंगे औ चिरदिन स्मरण राखेंगे।

अनुग्राहक ग्राहकगण ५म वर्षका अग्रिम मूल्य धर्म प्रचारकके शीघ्र भेजकर धर्मप्रचार कार्यकी सहायता कर हमको कृतज्ञतावद्ध करें।

आर्य शास्त्र-विज्ञान।

(पूर्व प्रकाशितके आगे)

इन दो प्रकार छन्दके उदाहरण जैसा,

मनुष्यगण जो स्वाभाविक कथन किये करते हैं, सो ही स्वाभाविक छन्दका उदाहरण स्थल हैं। मानिये कोई पुरुषने “राम” ऐसा शब्द किया। इसके पुत्रका नाम है “राम”, यह स्वयं भी राम भक्त है, किसी वस्तुपर किसीकी छयाका उद्भव होनेसे भी “राम” “नारायण” आदि शब्द का उच्चारण किया करता है यह भी अप्रमत्त नहीं। अब छन्द व्यतिरिक्त श्रोता ने उस राम शब्दका कौन सा तात्पर्य ग्रहण करेगा? वक्ता पुत्रको पुकारा वा भक्ति देखाया अथवा स्वाभाविक “राम” शब्दका उच्चारण किया? वक्ता जब अपने पुत्रको पुकरता है, तब “राम” शब्दका जिस भाविरूप है, भक्ति करके जब भगवानको सम्बोधन करता है, तब भी वैसा ही है; छया वा शोक प्रकाश काल में भी वैसा ही शब्द, स्वाभाविक उच्चारण काल में भी वैसा ही। इस समय केवल छन्दके इतर विशेष ही करके श्रोताने भावग्रह करता है, अन्यथा उपाय नहीं। वक्ताकी भी तत्तद्भाव प्रमत्त करने की इच्छा होनेपर तत्तच्छब्द आप ही आप आविर्भूत होते हैं। समस्त शब्दही

পড়ে। এই প্রকার সমস্ত শব্দেই জানি-
 ১। সর্বদা ব্যবহৃত বাক্যসমূহে যে এই স্বভাব-
 তন্ত্র ছন্দঃ অভিহিত হইল, ইহার যদিচ কাল বিপ-
 র্য্যবশতঃ ছন্দো বলিয়াই সহজে প্রতীতি হয় না
 এবং ছন্দঃ শাস্ত্র দ্বারাও প্রতিপাদন নাই, তথাপি
 এই ছন্দই আদি ও নিখিল ছন্দের বীজ স্বরূপ,
 ইহা হইতেই সমস্ত প্রকার ছন্দের উৎপত্তি হই-
 য়াছে, এবং ইহা ছন্দের লক্ষণকে অতিক্রম করে
 নাই। বক্তৃ মনোগত ভাবের সহিত মিলিত
 বাক্যের বিভক্তি বা বিভাগ বা ভঙ্গী ক্রমই ছন্দের
 প্রকৃত লক্ষণ, স্তরাং কোন বাক্যই তাহার বির-
 হিত হইতে পারে না। মানবাঙ্গী শরীর যেরূপ
 ভঙ্গীক্রম উল্লঙ্ঘন করিয়া সভাবান্ হইতে পারে
 না, স্রীয় অবয়ব সংস্থানের ভঙ্গীক্রম বিশিষ্টই হইয়া
 থাকে, বাক্যও তাদৃশ। বাক্যও স্রীয় অবয়বের
 ভঙ্গীক্রম বিশিষ্টই হইয়া থাকে। ইহাতে আর
 সন্দেহ নাই। অতএব স্বভাবতন্ত্র ছন্দঃ আদৌ
 ব্যাখ্যাত হইল।

উক্তবিধ বাক্য ভঙ্গীক্রম নানাবিধ, স্তরাং
 ছন্দঃও নানাবিধ। বক্তৃ মনোগত ভাবের আবার
 নানারূপস্থ নিবন্ধন ভঙ্গীক্রমের নানা ভাব।
 তাহাতে সাধারণতঃ স্বভাবতন্ত্র ছন্দঃ দ্বিবিধ।
 অল্পুত সংজ্ঞী, ২য় প্লুত সংজ্ঞী। সাধারণ বাক্যে যে
 ছন্দঃ উৎপন্ন হয় তাহাকে অল্পুত সংজ্ঞী, আর
 ক্রন্দনাদিতে যে ছন্দঃ উদ্ভূত হয় তাহাকে প্লুত
 সংজ্ঞী বলা যায়।

ক্রমশঃ

সনাতন আৰ্য্যধর্ম্মের পুনরুজ্জনা।

বিশ্ববিখ্যাত আৰ্য্য মহাত্মাদিগের পরম পবিত্র
 তীর্থ গয়াক্ষেত্রে সনাতন আৰ্য্যধর্ম্মের পুনঃ প্রচারার্থ
 ও গয়া নিবাসী আৰ্য্য সম্ভানগণের হৃদয়ে আৰ্য্য
 ভাবের পুনরুজ্জনা করিবার নিমিত্ত ভারতবর্ষীয়
 আৰ্য্যধর্ম্মপ্রচারিণী সভার সম্পাদক ও আৰ্য্য ধর্ম্ম
 প্রচারক শ্রীমান্ কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহা-
 শয় সম্প্রতি গয়াধামে শুভাগমন করিয়াছিলেন।
 উক্ত মহাত্মার শুভাগমন সংবাদ ইতিপূর্বেই
 প্রচারিত হইয়াছিল। ১৮ই পৌষ রবিবার, দিবা
 ১০ ঘটিকার সময় তিনি অত্র রেলওয়ে স্টেশনে

সেঁ যত্নী রীতি জাননা। সর্বদা ব্যবহৃত কখন
 সমূহ মেন্ জো স্বভাবতন্ত্র ছন্দ আরোপ ক্রিয়াগয়া,
 যহ যদিচ কাল বিপর্য্য করকে সহজ মেন্ ছন্দ
 হোকারকে নহী প্রতীতি হোতী হৈ, স্রী ছন্দ শাস্ত্র
 করকে মী প্রমাণীমূত নহী, তথাপি যত্নী ছন্দ
 আদি স্রী নিখিল ছন্দকা মূল হৈ। ইসীসে সব
 মান্তি ছন্দকী উত্পত্তি হৈ স্রী ছন্দকা জো লক্ষণ
 হৈ, তসকী মী যহ অতিক্রম ন ক্রিয়া। বক্তাকে
 মনোগত ভাবকে সহিত মিলীজুই বচনকী বিমুক্তি
 বা বিভাগ বা ভঙ্গীক্রম স্রী ছন্দকা প্রকৃত লক্ষণ
 হৈ। স্তরাং কীই বাক্য স্রী তসসে রহিত নহী
 সক্তা হৈ। মানব আদি শরীর জৈসা ভঙ্গীক্রমকী
 লঙ্ঘন করকে নহী ঠহর সক্তা হৈ, নিজ অবয়ব
 সংস্থানকে ভঙ্গীক্রমযুক্ত স্রী হোতা হৈ, বাক্য মী
 তস রীতিকী হৈ। বাক্য মী নিজ অবয়বকে ভঙ্গী-
 ক্রমকে অনুসার স্রী হোতী হৈ। ইস মেন্ কুছ সন্দেহ
 নহী। অতএব স্বভাবতন্ত্র ছন্দকী ইস রীতি
 জাননা।

ইস মান্তি বাক্যকী ভঙ্গী নানাবিধ হৈ স্তরাং
 ছন্দ মী নানা মান্তি কে বক্তাকে মনোগত ভাব মী
 নানারূপ হৈ, তদর্থ ভঙ্গীক্রম মী নানা ভাবযুক্ত হৈ।
 তসসে সাধারণতন্ত্র ছন্দ দ্বিবিধ হৈ। ১ম, অল্পুত
 সংজ্ঞী। ২য়, প্লুত সংজ্ঞী। সাধারণ বাক্য করকে
 জো ছন্দ উত্পন্ন হোতা, তসকী অল্পুত সংজ্ঞী স্রী
 রোদন আদি মেন্ জো ছন্দ উত্পন্ন হোতা হৈ তসকী
 প্লুত সংজ্ঞী কহতা হৈ।

শেষ আগে।

সনাতন আৰ্য্যধর্ম্মকী পুনরুজ্জনা।

জগত্ প্রসিদ্ধ আৰ্য্য মহাত্মাশ্রীকে পরম পবিত্র
 তীর্থ গয়াক্ষেত্রে মেন্ ভারতবর্ষীয় আৰ্য্য ধর্ম্মসমাজকে
 কার্য্যসম্পাদক স্রী আৰ্য্যধর্ম্ম প্রচারক শ্রীমান্
 কুমার শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন জীনে খোড়ৈ দিন অতীত
 জুয়ে, গয়াধাম মেন্ সনাতন আৰ্য্যধর্ম্মকী পুনর্বার
 প্রচারার্থ স্রী গয়াবাসী আৰ্য্য সম্ভানকী হৃদয়ে মেন্
 আৰ্য্য ভাবকী ক্ষির উল্লানেকেলিয়ে শুভাগমন
 ক্রিয়া হা। তক্ত মহাত্মাকী শুভাগমনকে সমাচার
 পবিত্রে স্রী বহা প্রসিদ্ধ জুই স্রী। পৌষসুদী
 ১৮শী রবিবার বেলা ১০ বজেকে সময় গয়াকী রেলবে

उपस्थित होयें। केशन हईते तौहाके अत्य-
र्थना पूर्वक आनयनार्थ अत्रह उदारचेता सद्गुणशी
मदरआला श्रीमदाबू मातादीन, सद्गुणशील ओ
कार्याकुशल डेपुटी माजिस्ट्रेट श्रीमदाबू रामानु-
एह नारायण, साधुहृदय ओ सत्यानुसङ्गिण गवर्न-
मेन्ट उकील श्रीमदाबू डूपसेन सिं, शास्त्रप्रकृति
ओ आर्याधर्मानुरागी श्रीमदाबू इन्द्रनारायण चक्रवर्ती
एम, ए, बिएल, स्वदेशहितैषी सहृदय गयाल
श्रीमदाबू दादूलाल कुटी, पवित्रचित्त श्रीमदाबू
अघोरनाथ पाल महाशय एवं अग्रगण्य अनेक गुलि
स्थानीय सज्जान्त महात्मा एकत्रित हईया अग्रैह
तथाय प्रसन्न छिलेन। तिन शकट हईते अव-
तरण करिले एतन्महात्मागुली द्वारा सम्मान सह
गृहीत ओ समादर पूर्वक बासा बाटीते आनीत
हईलेन। स्थानीय भद्रगणेर सहित सद्दालाप,
धर्मसम्बन्धीय आलोचना आदि करिते करिते से
दिन अतिवाहित हईया गेल।

सोमवार ।

अपराह्न बेला ओ टार समय अत्रह राजकीय
विद्यालये बाग्यी महोदय “प्रकृत उन्नति साधन”
विषयिणी एकटी सुदीर्घ वाचनिक वक्तृता करेन।
सभास्थले अनूत ३०० शिक्षित भद्र लोक
उपस्थित छिलेन। आर्यादिगणेर असाधारण सर्वाङ्गी
सुन्दर उन्नति एवं आमादिगणेर वर्तमान यत्नपरो-
नास्ति अवनति ओ हर्षगति विशदरूपे विवृत हईल।
किरूपे शारीरिक, मानसिक ओ आध्यात्मिक उन्नति
परस्पर अविरोधे सम्पन्न हईते पावे, एवं
तत्तावत् द्वारा कि प्रकारे ईहलौकिक ओ पार-
लौकिक कल्याण संसाधित हय आर्याशास्त्रीय प्रमाण
सह अभिनव वैज्ञानिक ओ दार्शनिक पद्धतिते
सम्पन्न व्यक्त हईल। प्रातःस्नान, पूजाचयन,
अस्तुर्जलि, आदि व्यवस्था गुलिरओ अत्यावश्यकता
अकाट्य प्रमाण द्वारा प्रतिपन्न हईल। आर्या
अभिगण समस्त कार्या, समस्त नियम, एमन कि स्व
जीवनओ धर्मनय करियाछिलेन, सुतरां तौहादेर
एह सकल, उपदेश सकल धर्माश्रितेज्योमयी
प्रतिभाय परिपूर्ण। तौहारा याश बलितेन, याश
करितेन, धर्मइ सकल विषयेर एकमात्र लक्ष्य
छिल। तौहारा धर्मपरायण अग्रता धर्मानुरागित

धीयन पर उतरे। ऐयन परसे उनको सम्मान
पूर्वक लानेके लिये यहाँके उद्धारचिन्त उत्साह
युक्त सदरआला श्रीमान् बाबू मातादीन, साधु-
हृदय और सत्यके खोजनेहार गवर्नमेन्ट वकील
श्रीमान् बाबू भूपसेन सिंह, परम उद्योगशाली औ
कार्यकुशल डिपुटी मजिस्ट्रेट श्रीमान् बाबू रामा-
नुग्रह नारायण, शान्तप्रकृति आर्य धर्मानुरागी
श्रीमान् बाबू इन्द्रनारायण चक्रवर्ती एम, ए,
बिएल, स्वदेशहितैषी सहृदय गयावाल श्रीमान्
बाबू दादूलाल कुटी, पवित्रचित्त श्रीमान् बाबू
अघोरनाथ पाल जी औ अन्यान्य वक्तृतेरे मान्य
महात्मा लोग एकट्टे होकर पहिली हीसे यहाँ प्रस्तुत
ये। वे गाड़ी परसे उतरतेही इन महात्मा लोगोंने
उनको सम्मान सहित ग्रहणकिये औ समादर
पूर्वक उनके अर्थ निरूपित डेरे में लाये, स्थानीय
भद्र जनोंने सद्दालाप औ धर्मसम्बन्धी चर्चा आदि
करते करते वह दिन व्यतीत हुआ।

सोमवार ।

होपहरके उपरान्त यहाँके राजकीय विद्या-
लय में बाग्यी महोदयने “प्रकृत उन्नति साधन”
इस आशयपर एक सुदीर्घ वाचनिक वक्तृता करी।
सभा में अन्तर् ३०० सुशिक्षित भद्र महात्मा उप-
स्थित थे। आर्य लोगोंने असाधारण सर्वाङ्ग-
सुन्दर उन्नति और हम सबकी अत्यरोगिक
अवनति और दुर्दशा विस्तार रूपसे विवृत करके,
शारीरिक, मानसिक औ आध्यात्मिक उन्नति विन
परस्पर विरोध किये, किस रीतिसे सुसम्पन्न हो
सकती है और उन सबसे किस भाँति इस लोक
औ परलोकका कल्याण सिद्ध होता है सो सब
आर्य शास्त्रके परमान सहित नवीन वैज्ञानिक औ
दार्शनिकरीतिसे स्पष्टरूप समझा दिया गया। प्रातः
काल में स्नान करना, पूजाके लिये फूल तोड़ना
मरण काल में अन्तर्जली करना आदि व्यवस्थाओं
की भी अत्यन्त आवश्यकता परम प्रबल प्रमाण
करके प्रतिपादन करी गई। आर्य अधिगण
समस्त कार्य, समस्त नियम, अधिक क्या निज निज
जीवन भी धर्ममय किये थे, सुतरां उन्हींके प्रत्य-
सम्बन्ध, उपदेश समस्त धर्मरूप अग्निके तेजयुक्त
प्रतिभासे परिपूर्ण थे। वे जो कुछ बोलते थे, जो
कुछ करते थे, सब विषयका एकमात्र लक्ष्य धर्म
होता। वे जो धर्मपरायण थे, सुतरां बिना

ना हैले किछुई तौहादेर ভাল लागित ना ।
 प्रकृतिहै आर्याधर्मैर आधार भूमि, सुतरां प्राकृ-
 तिक विज्ञानैर विनाशुमोदने तौहारा कोन
 व्यवस्थाहै विधिवत् करितेन ना । तौहारा सत्य
 स्वरूपैर आश्रित, सत्यहै तौहादेर जीवनावलम्बन
 छिल, तौहारा सत्यव्रत धाकिया सर्वदा परम सत्य
 परमात्मसम्पन्नहै उपलब्धि करितेन ; ताहातेहै
 तौहारा “प्रकृत उन्नतिर” शिखरदेशे आरोहण
 करिते पारियाछिलेन, ताहातेहै तौहादेर नाम
 ओ प्रतिभा चिरस्मरणीय ओ विश्व विख्यात हईया
 रहियाछे । सत्य हईते कथन तौहारा विद्युत
 हईतेन ना, अथवा जगतके एक सत्यमय देखितेन,
 आमरा यदि भ्रातृक्रमेओ तौहादेर उपदेश ओ
 विधि समूहके असत्य ओ भ्रमसंकूल मने करि,
 ताहा आमादेर घोरतर ओ भयानक पाप बलिया
 गण्य हईवे । पूजापाद आर्यादिगैर उपदेशानुसारे
 ना चलिले, सनातन आर्याधर्मैर आश्रय ना लईले,
 आर्याभावे हृदय असंगठित ना करिले भारतेर
 “प्रकृत उन्नति” हईवे ना, अधोगति घुटिबे ना ।
 श्रीकृष्णप्रसन्न और वक्तृताय एतावत् अति विस्तृत
 रूपे अति विशुद्धरूपे प्रकाश करियाछिलेन ।
 वक्तृता शेष हईले, श्रोतृगण वक्ताके आनन्द-
 पूर्ण हृदये अशेष साधुवाद दान ओ श्रुत विषय
 परमादरे हृदयकलके अक्षित करिया स्व स्व गृहे
 गमन करिलेन, दिवा अवसान हईले ।

मङ्गलवार ।

सकाय पर गयाधामैर सुप्रसिद्ध “विष्णुपाद”
 मन्दिर प्रभु विनिर्मित नाट मन्दिर “१ हईते
 २॥० पर्याप्त” “भारतेर ऐतद् मोचन” विषयिणी
 वक्तृता हय । नाटमन्दिरटी आलोकमालादि द्वारा
 अतीव सुसज्जित हईयाछिल । गयार अधिकांश
 सज्जान्त, उच्चपदस्थ ओ मान्य महात्मा ओ साधारण
 लोकैर समागमे नाटमन्दिर ओ गृह प्राङ्गण पर्याप्त
 जनाकीर्ण हईयाछिल । अन्यान १००।८०० लोक
 सौहार्दकचित्ते समवेत । वक्तार वक्तव्य विषयिणीओ
 श्रानोचित हईयाछिल । वक्ता प्रथमतः भक्तिपूर्ण-
 हृदये विष्णुपादे प्रणाम ओ स्पर्श करिले धर्मोत्त-
 माही गयाल श्रीयुक्त बाबू विशारिलाल बारिक ओ
 श्रीयुक्त बाबू माहलाल कूटी आदि साधुधर्मगण

धर्मसे रक्षा छया, कुहमी उनका सुखदायी नहीं
 बूझ पड़ता था, प्रकृति ही आर्य धर्म की आधार-
 भूमिहै सुतरां प्राकृतिक विज्ञानकी सम्यक् विना
 वे लोग किस ही व्यवस्थाको विधिवत् नहीं करते
 थे । वे लोग सत्यस्वरूपके आश्रित थे, सत्य ही उन
 सबका जीवनावलम्बन था, वे सत्य व्रत रचकर
 सर्वदा परम सत्य परमात्मा की सत्ता अनुभव किये
 करते थे ; उसीसे वे लोग प्रकृति उत्पत्तिके शिखर-
 देशमें आरुढ़ हो सके थे, उसीसे उन सबके नाम
 और प्रतिभा चिरस्मरणीय और सारे संसार में
 प्रगट हो रहे हैं । सत्यमार्गसे वे लोग कभी भ्रुत
 नहीं होते थे, अखण्ड जगतके एक सत्यमय देखा
 करते थे, यदि भूलसे भी हम उन्हींके उपदेश और
 विधिसमूहको ऐसा समझे कि वे असत्य और भ्रम-
 पूर्ण हैं तो हमारा घोरतर और भयङ्कर पाप करके
 गिना जायगा । पूज्यभाजन आर्य लोगोके उप-
 देश अनुसार चले बिना, सनातन आर्य धर्मका
 आश्रय लिये बिना, आर्य भावसे हृदयको सुन्दर
 बनाये बिना, भारतको “प्रकृत” उत्पत्ति न होगी ।
 अधोगति न मिलेगी । श्रीकृष्णप्रसन्न जीने वक्तृ-
 ताके द्वारा अति विस्तारपूर्वक अति विशुद्ध रीतिसे
 प्रगट कियेथे । वक्तृताका शेष छया, श्रोतागण
 आनन्दपूर्ण हृदयसे वक्ताको अशेष साधुवाद दान
 और सुनीछई बातोंको हृदय में परमादरसे
 अक्षित कर निज निज गृह में चले, स्वर्ण भी
 असा गये ।

मङ्गलवार ।

गया धामके सुप्रसिद्ध विष्णुपादके सामने पट-
 रसे बनाया छया । नाटमन्दिर में सम्यक्के
 उपरान्त ७ बजेसे १॥ बजे तक “भारतका प्रेतल
 मोचन” इस आयय पर एक वक्तृता छई । भान्ति
 भान्तिके दीपकोंसे नाटमन्दिर सुन्दररूप सजाये
 गयेथे गयाके अधिकांश प्रधान प्रधान उच्च पदवीके
 और मान्यमहात्मा और साधारणलोगोंके समागमसे
 मन्दिर और गृहके अङ्गन स्थान परिपूर्ण हो गये
 थे । कमसे कम सात आठसौ लोग उत्सुकचित्ततासे
 एकत्र छएथे । वक्तृताका आयय भी उसस्थानके
 योग्य छयाथा । वक्ता पहिले भक्ति पूर्ण हृदयसे
 विष्णुपादको प्रणाम और स्पर्श करनेपर साधुहृदय
 श्रीमान् बाबू विशारिलाल बारिक वो श्रीमान् बाबू
 दादूबाबू कुटी आदि धर्मोत्तमाही गयावासीने

कुमार श्रीकृष्णर गलदेशे हरति कुम्भराजि रचित आपादविलम्बित वनमाला पराईया दिलेन। वक्ता उद्देशपूर्ण हृदये दण्डायमान हईया भगवत् स्तोत्र पाठ पूर्वक वक्तव्य विषयैर चमत्कार सूचना ओ व्याख्या करिलेन। वक्तृताटी प्रत्येक श्रोतार हृदयग्राही हईयाछिल। प्रथमतः आर्यदिगेर निर्मल जातीय प्रकृति, धर्म भाव ओ सामाजिक उत्तमोत्तम रीति नीति परिवर्णित एवम् ईहाओ विशदरूपे प्रदर्शित हईले ये आर्यदिगेर राज्या हानिर सन्ने सन्ने यावनिक ओ स्नेह भावरूप प्रेत भारतके आश्रय करियाछे। यदि कोन पुं प्रेत कोन स्त्रीके आश्रय करे तवे सेई स्त्री मुख हईते पुरुषोचित भाषा निर्गलित हय। प्रेतप्रसु “कमला”के नाम जिज्ञासा करिले से प्रेतैर नामानुसारे बलिबे ये आमार नाम “रामचंद” ताहार रीति प्रकृतिओ पुरुषैर आय हईया याईबे, अर्थात् से पुरुषवत् निर्लज्ज भावादि युक्त हईया पड़िबे, केन ना एक्के से प्रेतप्रकृतियुक्त। आज काल आमादिगेर मध्ये अनेक महत्ता यवन ओ स्नेहानुकरणे परिच्छद परिवर्तन करियाछेन; भोजन, भाषा, रीति नीति आदि बहतर विषय स्नेहानु विजातीयभावरूपे प्रेतैर रीतानुसारे परिवर्तित हईयाछे। एमन कि सन्तानैर नाम रक्षा काले “जय सिंह” ना राधिया “कृतेसिंह” राधिया থাকेन। धर्मानुशीलनओ प्रेतभावापन्न हईया गियाछे। आमादिगेर धर्मशास्त्रसिद्ध विश्वास एई ये एतद्विष्णु पादे श्रद्धापूर्वक पिओ प्रदान करिले पितृगणैर प्रेतसु विमोचन हय, एजन्त अद्य आमरा विष्णुपादे सकले समवेत हईयाछि। आलस्य, उदास्य, उपेक्षा, शास्त्रानभिज्ञता, पराधीनता, तीरता, व्यभिचार, विजातीय व्यवहार, हुरासेवन आदि प्रचु प्रेतमणुली आसिया भारतके आश्रय करियाछे, एतावत् प्रेतापसारण जन्तु आमादिगके विष्णु पादेर शरण ग्रहण करिते हईबे। धर्मबल लाभ करिते ना पारिले आमादिगेर हृदयैर तेज रुक्ति हईबे ना। विष्णुई एकमात्र रक्षक, आर्य धर्म भावोन्नेजना द्वारा आमादिगके महान् अनर्थजाल हईते रक्षा करुन। विष्णु पादाश्रयई जीवैर समस्त बलैर सूचना करिया छिरे। श्रोतृवर्ग वक्तृता आम्होपास निरुक्त

कुमार श्री कृष्णके गले में सुगंधकुसुमराजि रचित आपाद विलम्बित वनमाला पहिराय दिये। वक्ताने उद्देशपूर्ण हृदयसे दण्डायमान होकर भगवत् स्तोत्रके पठन पूर्वक वक्तव्य विषय की चमत्कार सूचना ओ व्याख्या किये वक्तृता हर एक श्रोताके मनो हरणी हुई थी। आर्य सज्जनोंकी निर्मल जातीय प्रकृति, धर्मभाव और उत्तम उत्तम सामाजिक रीति, नीति पहिले वर्णन की गई और यहभी विस्तारपूर्वक देखाया गया ओ आर्य लोगोंके राज्यनाशके सङ्ग ही सङ्ग यावनिक और स्नेहभावरूपोपेत भारतको आश्रय किये। यदि कोई पुरुष प्रेत किसी स्त्रीको आश्रय करे तो स्त्रीकी भाषा पुरुषोचित हो जाती है। प्रेतग्रस्त “कमला” को यदि नाम पूछा जाय तो वह प्रेतको नामानुसार कहेगी जो मेरा नाम “रामचंद” उसकी रीति प्रकृतिभी पुरुषकी नाई हो जायगी अर्थात् वह पुरुषके समान निर्लज्ज भाव आदिसे युक्त होगी क्योंकि वह अब प्रेतकी प्रकृतियुक्त हुई। आज कल हमारे मध्य में से वज्रतेरे महाराजा यवन ओ स्नेहकी रीतिसे वस्त्रादि पहिरने लगे हैं; भोजन, भाषा, रीति, नीति आदि वज्रतेरे विषय स्नेह आदि विजातीय भावरूप प्रेत की रीतिसे बदल गए। ऐसा की पुत्रके नाम रखनेके समय “जयसि” के बदले “कृतेसि” रख देते हैं, धर्मवर्द्धा भी प्रेतभावापन्न होगई। हमारे धर्म शास्त्र करके यह सिद्ध है ओ इस विष्णुपाद में श्रद्धापूर्वक पिण्ड प्रदान करने पर पितरोंका प्रेतत्व छूट जाता है इसलिये आज हमसब विष्णुपाद में एकट्टे हुए हैं। आलस्य, उदास्य, उपेक्षा, शास्त्रविमूढ़ता, प्राचीनता, भीरता, व्यभिचार, विजातीय व्यवहार, सुरासेवन आदि प्रचण्ड प्रेतमण्डली आकर भारतको आश्रय किये। इतने प्रेतोंको छोड़ानेके अर्थ हम सबको विष्णुपादके शरण लेना चाहिये। निज धर्मबल लाभ किये हम सबके हृदयका तेज न बढेना। विष्णु ही एकमात्र रक्षक हैं। आर्य धर्म भावको उसका हर ईम सबको महानर्थ आशसे रक्षा करें। विष्णुपाद आश्रय की करने पर जीवके समस्त बल की सूचना होगी। श्रोतासमूहकी वक्तृताके अधोपास निरुक्त आश्रय किये से केवल हमारी

ভাবে অবগণ করিয়াছিলেন, কেবল বক্তার বর্ণন ছটার সঙ্গে সঙ্গে আনন্দ জনিত করতালি ধ্বনিত মন্দির উচ্চৈঃ প্রতিধ্বনিত হইতেছিল। সভা ভঙ্গ হইলে প্রোক্ত বিহারী বাবু ও দাদুলাল বাবু বক্তাকে সম্মানপূর্বক জয় মালা ও প্রচুর মিষ্টান্ন প্রসাদ দান করিলেন।

বুধবার ।

উক্তর মানসের নিকট হীনাবস্থাগ্রস্ত স্থানীয় ধর্ম সভামণ্ডপে সন্ধ্যার পর মুন্সের, আ, ধ, প্র, সভার প্রধান পণ্ডিত শ্রীমদম্বিকাদত্ত মিশ্র মহাশয় প্রথমতঃ শ্রীমদভগবদ্গীতা ব্যাখ্যা করেন। ব্যাখ্যাতার পাণ্ডিত্য প্রশংসনীয়। এতদ্ব্যখ্যাবসানে আমাদিগের বাগ্মীবর কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন বহুজনা-কীর্ণ সভার অনুরোধানুসারে “ভারতীয় ধর্মের চূর্দশা শাস্তি” বিষয়িণী একটি অনতিদীর্ঘ বক্তৃতা করেন। প্রথমে আর্য্য ধর্ম বর্তমান নিষ্প্রভাবস্থা-গ্রস্ত হইবার বিবিধ কারণ প্রদর্শিত হইল। তৎপরে সংস্কৃত ভাষার বহুল চর্চা, ভারতবর্ষীয় আ, ধ, প্র, সভার নিয়মানুসারে ধর্ম্যাচার্য্য মণ্ডলী নিয়োগ পূর্বক দেশ দেশান্তরে সর্বসাধারণের নিকট সনাতন ধর্মশাস্ত্রের তাৎপর্য্য ব্যাখ্যা ও উপদেশ দান আদির আবশ্যকতা প্রকৃষ্ট রূপে ব্যাখ্যাত হইল। তদনন্তর সভাভঙ্গ হইলে, অশেষ ধন্যবাদ দান পূর্বক শ্রোতৃগণ আনন্দোৎসাহপূর্ণ হৃদয়ে নিজ নিজ গৃহে গমন করিলেন।

বৃহস্পতিবার ।

গয়ার প্রসিদ্ধ জমীদার মান্যবর শ্রীযুক্ত রায় শ্যামলাল মিত্র মহোদয়ের সুবিস্তীর্ণ ভবনে বঙ্গ-ভাষায় (অপর বক্তৃতাগুলি হিন্দী ভাষায়) “ধর্ম সাধন” বিষয়িণী বক্তৃতা হইয়াছিল। জড়ের সহিত চৈতন্যের সম্বন্ধ, প্রাকৃতিক জগত আমাদিগের শরীর, মন ইন্দ্রিয়াদির উপর কিরূপ আধিপত্য করে, দেশ কালাদিভেদে মনের উৎকর্ষ ও স্থিরতা সম্পাদনার্থ কি কি রূপ প্রাকৃতিক উপাদানের সহায়তা গ্রহণ করিতে হয়, বালক, যুবা, বৃদ্ধ, স্ত্রী, পুরুষাদির অবস্থা, জাতি ও প্রকৃতি ভেদে ধর্মসাধন প্রণালীর ভিন্ন ভিন্ন পদ্ধতিবল্বন করা যে প্রাকৃতিক নিয়মানুসারিত, এতাবৎ বক্তা মহো-

দর্শনশাস্ত্রীকে সঙ্গ দ্বী সঙ্গ আনন্দজনিত কর-
মুঠধনীষে মন্দির অত্যন্ত প্রতিধ্বনিত হইত।
সভা বিসর্জন হইলে পর প্রোক্ত বিহারী বাবু স্বীকৃত
দাদুলাল বাবুনে বক্তাকে সম্মানপূর্বক জয়মালা
স্বীকৃত প্রচুর মিষ্টান্ন প্রসাদ দিই।

বুধবার ।

সন্ধ্যাকে উপরান্ত উত্তর মানসকে নিকট
স্থানীয় ধর্ম সভামণ্ডপে মণ্ডলী আ, ধ, প্র, সভাকে প্রধান পণ্ডিত
জীনে পণ্ডিত শ্রীমদভগবদ্গীতা কী ব্যাখ্যা করী।
ব্যাখ্যাতাকার পাণ্ডিত্য প্রশংসনীয় হৈ। ইহা ব্যাখ্যা-
নকে অনন্তর ইমারে বাগ্মীবর কুমার শ্রীকৃষ্ণ
প্রসন্ন জীনে বক্তা জনাকীর্ণ সভাকে অনুরোধ
অনুসারে “ভারতীয় ধর্মকী চূর্দশা শাস্তি” ইহা
আশয় পর এক অনতিদীর্ঘ বক্তৃতা করী, পণ্ডিত
বিবিধ কারণ দেখায়েগয়ে কী কী বর্তমান আর্থ-
ধর্ম প্রভাষে রহিত অবস্থায়গ্রস্ত জগত। তদনন্তর
সংস্কৃত ভাষাকী বক্তা বক্তা, ধর্ম্যাচার্য্যমণ্ডলীকী
নিযুক্ত করকে, দেশ দেশান্তর মণ্ডলী সর্বসাধারণকে
নিকট সনাতন ধর্মশাস্ত্রকী অভিপ্রায় ব্যাখ্যা
স্বীকৃত উপদেশ দান আদি কী আবশ্যকতা জৈসা কী
ভারতবর্ষীয় আ, ধ, প্র, সভাকে নিয়মানুসারে হৈ,
মণ্ডলী মান্তি ব্যাখ্যা কী গর্হ। তদনন্তর সভা
বিসর্জন জর্হ। শ্রোতৃগণ আনন্দোৎসাহপূর্ণ
হৃদয়ে ধন্যবাদ দেইজ্ঞে নিজ নিজ গৃহকী গর্হ।

গুরুবার ।

মান্যবর শ্রীযুক্ত রায় শ্যামলাল মিত্র, গয়ারকে
প্রসিদ্ধ জমীদার মহোদয়ের সুবিস্তীর্ণ ভবনে মণ্ডলী
“ধর্ম সাধন” ইহা আশয় পর এক বক্তা বক্তৃতা
জর্হ থী। জর্হকে সাথ চৈতন্যকী সম্বন্ধ, প্রাকৃতিক
জগত ইমারে শরীর, মন, ইন্দ্রিয়াদিকে
উপর কৈসা আধিপত্য করতী হৈ, দেশ, কাল আদি
ভেদ করকে মন কী উৎকর্ষ স্বী স্থিরতাকী লিয়ে
কিস কিস মান্তি প্রাকৃতিক উপাদান কী সহায়তা
লৈসা স্বীকৃত, বালক, যুবা, বৃদ্ধ, স্ত্রী, পুরুষাদি
কী অবস্থা, জাতি স্বীকৃত প্রকৃতিভেদ করকে ধর্ম-
সাধন রীতী কী ভিন্ন ভিন্ন পদ্ধতি অবলম্বন করনা
জী প্রাকৃতিক নিয়মানুসারে হৈ, বক্তানে ইতনা অতীব

द्वय अतीव दुष्टेय वैज्ञानिक (आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक, प्रमाण और युक्ति जाल विस्तार पूर्वक परमात्मा जीवात्मा समाधान है सकल कार्येय वा धर्म साधनेय शेष लक्ष्य बलिया प्रतिपादन करिलेन । प्रसङ्गक्रमे स्त्री स्वाधीनता और वर्णभेद विचारों पर यथोचित समालोचना है। स्त्री प्रकृति ये स्वभावसिद्ध पराधीन और स्त्रीदिगके स्वाधीनता दिले स्त्रीभाव विनष्ट होकर धीरे धीरे पुरुषभाव उन्होंने को आश्रय करता है और यावत् परार्थन्त जीव आत्म समाधि करके पूर्णसिद्धि लाभ न करे तावत् काल भिन्न वर्णका वा तम रज गुण आदिसे दूषित नीच वर्णका लुब्धा ज्ञाया वा दोषा ज्ञाया सामग्री भोजन करने पर साधन काल में जो विविध विघ्न हो सके हैं सो सब वैज्ञानिक युक्ति करके जिस में साधारण लोगों की बुद्धि न पैठती, प्रमाणीकृत ज्ञाया । यह भी यहां अवश्य कहना चाहिये जो स्वयं सिद्ध कितना दृष्टा ज्ञाना भीमानी व्यक्ति छोड़के वक्तृताकी स्तब्ध दृष्टि में गौर कर किसी सहृदय पुरुषसे वक्ता को यथोचित साधुवाद दिये बिना नहीं रहना गया । इस वक्तृता काल में अविश्वस्य वक्तृदेयी और प्रधान प्रधान विचारवासी, जो लोग वक्तृभषा समझ सकते हैं, उपस्थित थे ।

शुक्रवार ।

श्रोत सन्ध्या दिन दिन अधिक परिमाणे रुद्धि होइतेछे देखिया और सर्वसाधारणों के श्रवण सुगमार्थ अत्रि राजकीय विद्यालयों में प्रशस्त प्राप्ति अद्य-कार सभा होइल । श्रविशाल चन्द्रातपे और प्रशस्त आसुरण विस्तारे प्राप्ति समाच्छन्न होइयाछिल । अद्यकार सभाय गौरा मन्त्रांत, मान्त्र, उच्च पदस्थ, प्रसिद्ध भद्र कोन महाराज प्राय अनुपस्थित छिलेन ना । साधारण लोकों के तो कथाई नाई, अद्य लोकें लोकारण्य होइयाछिल । कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न आर्य धर्मार्थी और अग्रगण्य साधारण लोकों के संशयापनोदनार्थ अद्य पौडलिकता वा „मूर्ति पूजा“ विषयिणी एकटी सुदीर्घ वक्तृता करेन । तनि मधुर और उद्देशपूर्ण वक्तृता मध्ये ईहा प्रशस्त रूपे बूझाईया दिलेन, ये मूर्ति पूजक आर्यागण युक्तिका वा धातु दार्द्र्यादि पूजा करेन ना, तांहरा सूक्ष्म, कूट, वा अनु परमाणुते सर्वथाविधि परमात्माई पूजा करिया थाकेन । मूर्ति दर्शने

दुष्टेय वैज्ञानिक (आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक) प्रमाण और युक्ति जाल फैलाकर परमात्मा में जीवात्माका समाधान करना ही जो समस्त कार्य वा धर्म साधन का शेष लक्ष्य है सो प्रतिपादन किया । प्रसङ्गके अनुसार स्त्री स्वाधीनता और वर्णभेद विचार को भी यथोचित समालोचना हुई थी । स्त्रियों की प्रकृति जो स्वभावसिद्ध पराधीन है और स्त्रियोंको स्वाधीनता देनेपर किस रीतिसे स्त्रीभाव विनष्ट होकर धीरे धीरे पुरुषभाव उन्होंने को आश्रय करता है और यावत् परार्थन्त जीव आत्म समाधि करके पूर्णसिद्धि लाभ न करे तावत् काल भिन्न वर्णका वा तम रज गुण आदिसे दूषित नीच वर्णका लुब्धा ज्ञाया वा दोषा ज्ञाया सामग्री भोजन करने पर साधन काल में जो विविध विघ्न हो सके हैं सो सब वैज्ञानिक युक्ति करके जिस में साधारण लोगों की बुद्धि न पैठती, प्रमाणीकृत ज्ञाया । यह भी यहां अवश्य कहना चाहिये जो स्वयं सिद्ध कितना दृष्टा ज्ञाना भीमानी व्यक्ति छोड़के वक्तृताकी स्तब्ध दृष्टि में गौर कर किसी सहृदय पुरुषसे वक्ता को यथोचित साधुवाद दिये बिना नहीं रहना गया । इस वक्तृता काल में अविश्वस्य वक्तृदेयी और प्रधान प्रधान विचारवासी, जो लोग वक्तृभषा समझ सकते हैं, उपस्थित थे ।

शुक्रवार ।

श्रोताकी संख्या दिन पर दिन अधिक बढ़ती हुई देखकर और सर्वसाधारणों के श्रवण सुविधा के लिये यहांके राजकीय विद्यालयके सुविस्तृत अंगनेमें आजकी सभा लगी । वही भारी समिश्चाना टंगाकर और प्रसन्न विद्यावन विद्याकर अंगनाको सुसोभित की गई थी । आजकी सभा में गयाके रईस, मान्य, उच्चपदवीके प्रसिद्ध भद्र प्रायः कोई महात्मा ही अनुपस्थित न थे । साधारण लोगोंकी संख्या कुछ पुछिये मत्, आज बड़ा भारी भीर ज्ञाया था, कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न जीने आर्य-धर्मार्थी, और अन्यान्य साधारण लोगोंका संशय छोड़ानेके अर्थ आज “मूर्तिपूजा” इस आशय पर एक बड़ी दीर्घ वक्तृता करी । मधुर और उत्साहसे पूर्ण वक्तृता में उनमें विश्वास करके समझा दिया जो मूर्तिके पूजने चारे आर्यगण मिट्टी वा धातु वा दारु आदिकी पूजा नहीं करते । वे परमात्मा ही की, जो स्वरूप में, लुब्ध में वा अणुपरमाणु में सर्वथा अधिष्ठित है, पूजा किये करते हैं । मूर्तिको दर्शन और पूजन करने पर किस भांति धारा बहिक

वा अर्चनाय किरूपे धारावाहिक रीतिसे मन ब्रह्माज्ञा सोपाने अधिरोधन करे, ताहा सुस्पष्ट रूप प्रमानीकृत हईल । मूर्ति गुलिर आध्यात्मिक व्याख्या श्रवणे श्रोतामात्रेई अननभूतपूर्व आनन्द लाभ करियाछिलेन । परिशेषे अत्यन्त उन्मादपूर्ण वाक्ये वक्ता प्रत्येक हृदये आघात पूर्वक देखाईया दिलेन ये, ये पर्याप्त जीव भगवत् साधन द्वारा आत्माके प्राकृतिक शक्ति सीमा उल्लंघन करीते ना पारे, अर्थात् ये पर्याप्त मन, बुद्धि चित्तादिर साहाय्ये जीवके अंधरोपासना करिते हय, साधक श्रीकान्त हईन, मुसलमान हईन, बौद्ध हईन, जैन हईन, ज्ञान हईन, दयानन्दी हईन अथवा ने कोन धर्मावलम्बी हईन तावत्काल तिन मूर्ति उपासक समिया गय । केह रूप, केह गुण, केह शब्द, केह अवस्था, केह भाव, इत्यादि कोन ना कोन जेडेर आश्रय ग्रहण पूर्वक निज निज अर्थात् देवतार उपासना करिया थाकेन । केवल समाधिनिष्ठ पुरुषई निराकार, निर्विकार, निर्गुण ब्रह्मेण्ड उपासक । अद्याकार ब्रह्मताय वक्ता अन्त दिन अपेक्षा श्रोतृवर्गेर अधिकतर हृदयार्कषण करियाछिलेन । धन्य तँहार बाङ्गनैपुण्य ओ उद्देकना !!

शनिवार ।

अद्य आमादिगेर वक्ता वर वक्रवन्द सह वृद्ध गया दर्शनार्थ गमन करियाछिलेन, तथा हईते प्रत्यार्थ हईया धर्माज्ञागणेर सहित विविध धर्मार्थ वार्त्तालापे समय अतिवाहित करिलेन, कोन प्रकाश वक्ता करिवार अवकाश हय नाई ।

रविवार । प्रातःकाल ।

प्रातर्बेला ८ घटिकार समय टिकारीर अन्तर भूपति श्रीमदाज्ञारण बाहादुर सिं महोदयेर भवने एकटी सभा आहूत हय । सभाते तथाकार प्रतिष्ठित व्यक्ति मात्रेई उपस्थित हईयाछिलेन । रजत-मणित दण्ड शोभित अचरु चिकण चन्द्रातपेर शीतल छायाय वक्ता आसन सुसज्जित हईयाछिल । तथाय सोऽसाहसिष्ठ निर्भीक हृदय वक्ता “धर्म संस्थापन” विषयिणी एकटी अतीव सारगर्भ उपदेश पूर्ण वक्तृता करेन । व्यवहारिक ओ आध्यात्मिक

रीतिसे मन ब्रह्माज्ञा सोपान पर आहूत होता है सो सुस्पष्ट रूपसे प्रमानीकृत हुआ । मूर्ति सबका आध्यात्मिक भाव व्याख्या सुनकर श्रोता-मात्र ही अत्यन्त आनन्द प्राप्त किया, जैसा की पूर्व में कभी अनुभव न किया । अन्त में अत्यन्त उत्साह पूर्ण वाक्योंसे वक्ता हर एक हृदय में आघातकर देखा दिये जो यावत् काल जीव भगवत् साधनसे आत्माकी प्राकृतिक शक्तिकी सीमा न टपाय सके अर्थात् जवतक मन, बुद्धि, चित्त, आदि की सहायतासे जीवको ईश्वरोपासना करने पड़ता है, साधक चाहे इसाई हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे बौद्ध हो, चाहे जैन हो, चाहे ब्राह्म हो, चाहे दयानन्दी हो, अथवा और कोई धर्मावलम्बी हो, तावत् काल उनको मूर्ति पूजक कहा जागा । किसीने रूप, किसीने गुण, किसीने शब्द, किसीने अवस्था, किसीने भाव, आदि किसी न किसी जड़को आश्रयकर निज निज देवता की पूजा की करती है । केवल वही पुरुष निराकार, निर्विकार निर्गुण ब्रह्मका उपासक है जोने समाधीसे सिद्ध हुआ । आजकी वक्तृतासे वक्ताने श्रोताओंके हृदयको अन्यदीनसे अधिक आकर्षण किये थे । धन्य है उनकी वाक्पटुता और उत्तेजना !!

शनिवार ।

आज हमारे वक्ता महात्माने मित्रगण सहित बौद्ध गया दर्शनार्थ गये । वंहासे लौटकर धर्मात्मा सज्जनोंसे सहार्त्तालापकर समय व्यतीत किये । किसी प्रकाश स्थान में वक्तृता करनेका अवकाश न मिला ।

रविवार । प्रातःकाल ।

वेला ८ वाजे के समय टीकारीके अन्तर भूपति श्रीमान् राजा रणवाहादुर सिं महोदयके भवन में एक सभा हुई । सभामें वंहाके प्रतिष्ठित व्यक्तिमात्र ही सुशोभित थे । रजत मण्डित दण्डसे शोभायमान मनोहर चिकण सामियानाकी शीतल छाया में वक्ताका आसन सजा हुआ था । वंहा उत्साह पूर्ण चित्त औ निर्भीक हृदय वक्ताने “धर्मसंस्थापन” इस आशय पर एक अतीव सारगर्भ उपदेश पूर्ण वक्तृता करी । उनने धर्मको व्यवहारिक औ आध्यात्मिक इस रीति द्विधा

भेदे निम्न धर्मके विधा विभक्त करिया मनुष्य मात्र-
केही बाह्य व्यापारे सदाचारी ओ निर्मल चरित्र
ओ अन्तरे भगवत्तरणानुरक्त हईते उपदेश करि-
लेन । यँहारा मदपायी ओ वेश्यासक्त हईया बाहिर
हिन्दू ओ भितरे स्नेह, ठँहादिगके तिनि जन-
समाजके विशेष अनिकेकारी बलिया स्थिर करि-
लेन । यिनि बाह्याभ्यन्तरे धर्म साधन करिते
पारेन, तिनिई धर्मात्मा, यिनि लोक समाजके स
प्रकृतिश्च ओ आपनाके भगवन्निष्ठ करिते पारेन,
तिनि धर्म संस्थापने समर्थ । एतावद्विषय विस्तार
पूर्वक व्याख्या करिया, परिशेषे पवित्र गंगाधामे
संस्कृत शास्त्रके विधिमते आलोचना ओ धर्मार्थ चर्चा
क्रम एकटा “आर्याधर्मप्रचारिणी सभा,” तँसह
एकटा वैदिक विद्यालय ओ एकटा संस्कृत पुस्तकागार
प्रतिष्ठा आवश्कता प्रदर्शन पूर्वक प्रत्येक
साधुहृदयके यथोचित उत्तेजित करिया वक्तृत्तर
उपसंहार करिलेन । सेई सभामध्येई प्रधान
प्रधान महात्मागण तँसहणाँ एतँ साधु प्रस्ताव
कार्ये परिणत करिवार निमित्त प्रसन्न ओ अग्रसर
हईलेन । सभामण्डप निर्माणार्थ १००० टाका
अनुमति हईल । राजा रणवाहादुर महोदय
तन्मूर्तेई नगद १००० टाका दान करिलेन ।
अग्रणी महात्मागण दानाङ्गीकार पत्रे यथोचित
साहाय्यार्थ स्वीकार करिलेन । आनन्द ओ उँसाहपूर
हृदये सकले स्व स्व स्थाने प्रस्थान करिलेन ।

एई समये कौन कौन व्यक्ति मुखे प्रसिद्ध
बक्ता सुनिलेन ये ब्राह्मण ठँहार सुक्रवारके
वक्तृत्तर विपरीत वा विकृत व्याख्या करिया जन
साधारणके मने विविध संशय उँढावन करिया
दियाछेन । तिनिओ समर निपुण सतत प्रसन्न वीर-
पुरुषके न्याय बलिसेन, ये अद्वैत अपराह
प्रकाश वक्तृत्तर तँदावँ संशय निरसन करिवार
यत्न करिवेन ।

रविवार । अपराह ।

राजकीय विद्यालयके विस्तृत प्राङ्गणई वक्तृ-
तार्थ निरूपित हईल । विज्ञापन पत्र प्रचार
करिवार आर अवसर हईल ना । केवल लोक
मुखे एतँ समाचार विद्योषित हईया गेल । सभा-
स्थले अनूय ८००।९०० लोकके समागम हईया-

भाग कर यह उपदेश किया कि वाङ्मयार्थ में
हर किसी को सदाचारी और निर्मल चरित्र और
अन्तःकरण में भगवानके चरण में अनुरानी होना
चाहिये । उन सबको जन समाज के महान
अनर्थकारी कर मानलिया । गया जो सब मदपायी
औ वेश्यासक्तवने भीतर में स्नेह और बाहर हिन्दु
कहाते हैं । वही धर्मात्मा है जोने भीतर और
बाहर में धर्मसाधनकर सक्ते हैं, वही धर्मसंस्था-
पन करने में समर्थ हैं । जोने जनसमाजको
सत्प्रकृतिस्थ और अपनेको भगवन्निष्ठकर सके,
इतना आश्चर्य पर विस्तारपूर्वक व्याख्यान कर
अन्त में यह प्रस्ताव उठाया कि पवित्र गंगाधाम में
संस्कृत शास्त्रों की विधि पूर्वक आलोचना और
धर्मार्थ चर्चाके लिये एक आर्य धर्म प्रचारिणी
सभा और उसके साथ एक वैदिक विद्यालय, और
संस्कृत पुस्तकागार प्रतिष्ठा की जाय, इसकी
आवश्यकता देखाकर हरके साधुहृदयको यथायोग्य
उत्तेजित करके वक्तृताका उपसंहार किया । उसही
सभा में प्रधान प्रधान महात्मागण उसी क्षण में
इस साधु प्रस्तावको कार्य में परिणत करणार्थ
प्रसन्न और आशुचा हुए । सभामण्डप निर्माणार्थ
७०००, रुपये व्यय अनुमान किया गया । श्रीमान्
राजा रणवाहादुर सिंह महोदयने उसी मूर्च्छा में
नगद १०००, रुपये देदिये । अन्यत्र महात्मागण
यथायोग्य सहायताकी इच्छासे दानाङ्गीकार पत्र
पर स्वाक्षर किये । आनन्द वो उत्साहपूर्ण हृदयसे
सबकोई निज निज गृहको चले ।

इसी समय में किसी किसी व्यक्तिके सुखार-
विन्दसे प्रसिद्ध बक्ताको यह सुनने में आया कि
उनकी शुक्रवारकी वक्तृताका तात्पर्य ब्राह्मणलोग
सर्वसाधारण जनो को विपरीत और विवृत करके
समझाकर सबके मन में नानाभाति के संशय उठा
दिये हैं । वेभी, जैसा समर निपुण वीरपुरुष
तैयार रहते हैं, इस रीति से बोले कि आजही
अपराह काल में प्रकाश स्थान में एक वक्तृताकर
उन सब संशयोको मिटानेका यत्न करेंगे ।

रविवार-दोपहरके उपरांत ।

वक्तृका स्थान राजकीय विद्यालयकी अंगने में
स्थिर हुआ । विज्ञापन पत्र प्रकाश करनेका अव-
काश कुछभी न मिला । केवल मौखिक समाचार
प्रचार ही गयी । सभा में अन्वय ८०० । ९००
और सुशोभित थे । “अवतार और वाङ्मय पूजा”

हिल । “अवतार ও বাহুপূजा” সম্বন্ধে বক্তৃতা হইল । সূক্ষ্মতম শক্তি হইতে কিরূপে স্থূল পদার্থ উৎপন্ন হয়, পার্থিব জগতের উপকারার্থ কিরূপে ঐশী শক্তি উত্তেজিত ও স্থূল জগতের উপযোগী হইয়া অবশ্যস্তাবী স্থূল ভাব ধারণ করে, পৃথিবী পাপভারাক্রান্ত হইয়া, কিরূপে বিধাতার নিকট রোদন করিলে বিষ্ণু অবতীর্ণ হইয়া, পৃথিবীর ভার মোচন করেন, এতাবৎ বৈজ্ঞানিক যুক্তি ও শাস্ত্রীয় প্রমাণ দ্বারা প্রতিপন্ন করিয়া, বাহু ব্যাপার দ্বারা মনের সূক্ষ্মতা সাধনের উপায়, রীতি ও বিষয় বুদ্ধি-বিশিষ্ট ব্যক্তিবর্গের বাহু পূজার অবশ্যাবশ্যকতা ভৌতিক ও আধ্যাত্মিক বিজ্ঞানানুমোদিত যুক্তি দ্বারা বুঝাইয়া দিলেন । বক্তৃতা প্রবণে আর্য্য-ধর্ম্মানুরাগী মহাশ্রীগণের চিত্ত প্রেমানন্দে গদগদ হইয়া উঠিল । অপরাহ্ন ৩টার পর বক্তৃতারান্ত হইয়াছিল, লোকের সংশয় রাশি সঙ্গে লইয়া সূর্য্য-দেব অন্তাচল চূড়াবলম্বী হইলেন, বক্তৃতাও শেষ হইল ।

রবিবার । সন্ধ্যার পর ।

বর্তমান শিক্ষা বিভাগের অব্যবস্থা বশতঃ বিদ্যালয়েব পঠনপাঠ্যে আর্য্য বালকবর্গ আর্য্যদিগের নীতি ও ধর্ম্মভাব কিছুই শিখিবার অবকাশ পায় না । আর্য্য বালকগণ এই সময় হইতে নিজ নিজ চরিত্র ও আর্য্য প্রকৃতি সংগঠনের উপদেশাদি না পাইলে ভবিষ্যৎ ভারতীয় সমাজ বর্তমানাপেক্ষা আরও উচ্ছ্রাবল হইয়া যাইবে, এই আশঙ্কায় দূরদর্শী শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন কয়েক বৎসর হইল, মুঙ্গেরে বালক-বর্গের নীতি শিক্ষার্থ “সুনীতি সঞ্চারিণী সভা” সংস্থাপন করিয়াছেন । সেই উদ্দেশ্যে এখানেও তৎসভার নাম ও নিয়মানুসারে একটী সভা সংস্থাপন মানসে মানবর শ্রীযুক্ত রায় শ্যামলাল মিত্র মহোদয়ের ভবনে একটা সভা আহুত হইল । এখানে অধিকাংশ বালক ও কিয়দংশ প্রবীণ উপস্থিত ছিলেন । নীতি শিক্ষালাভে বালকদিগের কিরূপ হৃদয়ের প্রশস্ততা, উচ্চ মনস্কতা, ও মনুষ্যত্বের বিকাশ হয় ও তদভাবে কিদূরী হানি হয়, উত্তেজনা-পূর্ণবাক্যে সরলভাবে তত্তাবৎ প্রদর্শন করিয়া, বক্তা বালকবর্গের হৃদয় আকর্ষণ করিলেন; স্ববোধ ও উৎসাহিত চিত্ত বালকগণের সভা প্রতিষ্ঠিত

ইস আয়তন পর বক্তৃতা হইল । সূক্ষ্মতম শক্তিसे स्थूलपदार्थ किस रीति से उत्पन्न होता है, पार्थिव जगतके उपकारार्थ ईश्वरकी शक्ति किस रीतिसे उत्तेजित औ स्थूल जगतके उपयोगी बनकर स्थूल भाव, जोकि अवश्यस्मावी है, धारण करती है, पाप भारसे लीप्तहोकर धरती किसरीति विधाताके निकट रोनेपर विष्णु अवतार लेके पृथ्वीका भार भुक्त करदेते हैं, इन सबको वैज्ञानिक युक्ति औ शास्त्र के प्रमाण सहित प्रतिपादनकिये औ वाह्य व्यापार रीति से मनकी सूक्ष्मता साधनका उपाय औ रीति औ विषय-बुद्धि-विशिष्ट व्यक्तिवर्गके किये वाह्य पूजा की आवश्यकता, युक्तियोंके द्वारा, जोकि भौतिक औ आध्यात्मिक विज्ञानका अनुमोदित है, समझा दिये । आर्य्यधर्मावलम्बियोंके चित्त ब्रह्मता सुनकर गह्रद हो उठे । लोगोंके संशय राशिको साथ लेते हुए सूर्यदेव अस्ताचलको आश्रय किये, व्याख्यानका भी शेष हुआ ।

रविवार सन्ध्याके उपरान्त ।

वर्त्तमान शिक्षाविभाग की ऐसी बुरी व्यवस्था है, कि इससे विद्यालयके बालकों की इस भान्ति सुविधा न मिलती कि आर्य्य जनोंकी नीति वा धर्म भाव सिखें । दूरदर्शी श्रीकृष्णप्रसन्न जी इस आशङ्का करके मुङ्गेर में लड़कोंको नीति शिक्षार्थ एक “सुनीति संचारिणी सभा” स्थापित किये हैं, कि यदि इसी समयसे आर्य्य बालकवर्ग निज निज चरित्र औ आर्य्य प्रकृति संगठनार्थ उपदेशादि न पावे तो भविष्यत् भारतीय समाज वर्त्तमानसे भी अधिक पिण्ड जागी । उसी उद्देश्यसे यहाँभी उसी नाम औ उस सभाके नियमोंके अनुसार एक सभा स्थापनार्थ मान्यवर श्रीयुक्त राय श्यामलाल मित्त महोदयके भवन में एक सभा बुलाइ गयी । यहाँ ब्रह्मत लड़के औ थोड़ेसे युवा औ वृद्ध पुरुष उपस्थित थे । नीति शिक्षा लाभ करके बालकोंके किस भान्ति हृदय की प्रशस्तता, उच्च मनस्कता औ मनुष्यत्वका विकास होता है, औ बिना इन सबसे कैसी हानि पड़ती है सो सब बताने उन्ने जगामूर्ख बाल्य करके सरल भावसे देखाकर बालकोंके हृदय आकर्षण किये । सुबोध औ उत्साहितचित्त बालकों की सभा प्रतिष्ठित हुई । आर्य्यधर्मके परम अनु-

हैल । आर्याधर्मागुरागी उपयोग्य माण्डवर ए.बुल्लु बाबू इन्द्रनारायण चक्रवर्ती एम्, ए, बि.एल. महाशयेर हस्ते सभाध्यक्ष ओ उपदेष्टाको भार विन्यास हैल । एतदवसाने सर्व साधारणेर प्रति लक्ष्य करिया, भगवद्भक्तिताबोदोपनी एकटी समधुर उपदेश व्याख्यान करिया विश्राम लाभ करिलेन ।

*** एतद्वक्तृ महोदयेर वक्तृता येरूप सारवान ओ प्राञ्जल, तद्रूप हृदय ओ सुललित । तौहार वक्तृतार वथेके माधुर्य आछे । तिनि अनर्गल ४१२ घंटे वक्तृता करिया ओ विश्राम आकाङ्क्षा करेन ना, पिपासार अधीन हन ना । श्रीकृष्ण प्रसन्नैर वक्तृता केवल शान्ति रसोद्दीपक एमत नहे, तन्मध्ये अनेकटा वीर भाव ओ आछे । तौहार वक्तृता अवणे लोकेर चित्त येरूप भक्तिरसे आर्द्र हय, वैराग्येर पक्षपाती हय,—तद्रूप उन्माहे परिपूर्ण ओ उदयमे उन्मादित हैया उठे ।

* * * तौहार लोकचित्त आकर्षणेर क्षमता आछे । धनी, दरिद्र, मूर्ख, ज्ञानी, सकलेई तौहाके भाल वामिते ईच्छुक । तिनि बालक वृद्ध, युवा, त्रिविध लोकैरई प्रियपात्र वा समिकट वक्तृ । आर्याधर्म-विद्वेक्षेर्वर्ग ओ तौहार सहित आलाप करिया, तौहार वक्तृता सुनिया, हृदयेर सहित धन्यवाद दियाछेन ओ तौहार निकट खी थाका स्वीकार करियाछेन । धन्य श्रीकृष्णप्रसन्न ! आज तूमि आर्यावंशीयदिगेर हृदयस्य हूःपित हैया, धर्मोद्वेजनार जन्य, स्वदेशेर परम कल्याणसाधनेर जन्य, भारतेर देशे देशे पर्यटन करिते आरम्भ करिले । आज तूमि स्वधर्मैर निमित्त, लोकहितेर निमित्त, आत्मज्ञातिर निमित्त, एही भोग प्रधान उनविंश शताब्दीते कठोर चिरकौमार त्रत अवलम्बन करिले । तौहाके महत् महत् धन्यवाद । भगवान तौहाके दीर्घजीवी ओ कुशलै रक्षा करिया आमादिगेर कल्याण वृद्धि करुन ।

मनुष्येर हृथेर दिन चिरदिन थाके ना, गय्या-वासीर ओ अधिक दिन रहिल ना । गय्यार आनन्द राशि सप्ते लहैया हृदये वेदना दान करिया कुमार श्रीकृष्णप्रसन्न गय्याधाम परित्याग करिलेन । २७ ए पौष मास सोमवार सुप्तेर यात्रा करिलेन । नदर आला, डेपुटी माजिस्ट्रेट, उकील आदि कय्येक जन महान्ना रेलवे स्टेशन पर्यस्त तौहार प्रभु-

रागी सुखीय मान्यवर श्रीवृत्त बाबू इन्द्रनारायण चक्रवर्ती एम्, ए, बि.एल. महाशयके हातपर सभाध्यक्ष ओ उपदेष्टाका भार दिया गया । अन्त में सर्वसाधारणको लक्ष्य करके भगवत भावके उसकानेवाली एक उपदेश व्याख्यान कर विश्राम किये ।

*** इस वक्ता महोदयकी वक्तृता जैसी सारवान ओ सरल, तद्रूप हृदयग्राही ओ सुललित है । उनकी वक्तृता में यथेष्ट माधुरी देखपड़ती है । उनने मिरन्तर ४१२ घंटे तक वक्तृता करके भी विश्रामकी इच्छा न करती वा पिथासके अधीन न होता है । श्रीकृष्ण प्रसन्न जीकी वक्तृता जो केवल शान्तिरसोद्दीपक है, सो नहीं उस में वज्रत सा वीर भावभी मिलता है । उनकी वक्तृता श्रवण करके लोगोंके चित्त ज्यों ज्यों भक्तिरससे आर्द्र, वैराग्यका पक्षपाती होता है त्यों त्यों उन्माहसे परिपूर्ण ओ उदयसे उन्मादित हो उठता है । ** लोक चित्त आकर्षण करनेकी क्षमता उन में विद्यमान है । धनी वा दरिद्र मूर्ख वा ज्ञानी सबकोई उनको चाहते हैं । उनने बालक, युवा वो वृद्ध इन त्रिविध जनो की परम प्रियपात्र वो समिकट मिल हैं । आर्यधर्मके विरोधी वर्ग भी उनके संगमिल वो महान्नालाप करके, उनकी वक्तृता सुनको उनको हृदयसे धन्यवाद दिये वे । उनके निकट खानी रहना अंगीकार किये । धन्यहो श्रीकृष्णप्रसन्नजी ! आज आप आर्यवंशीयोंकी दुर्दशा से दुःखित हो, धर्मको उसकानेके लिये, निज देशके परम कल्याण साधनके अर्थ भरत खण्डके देश देशान्तर में पर्यटन करना आरम्भ किये । आज आपने स्वधर्मके निमित्त, लोक हितके अर्थ आत्मज्ञातिके हेतु इस भोगप्रधान जनवीस इसाई सन में कठोर चिरकौमारव्रत अवलम्बन किया । आपको सहस्र सहस्र वन्यवाद हैं । भगवान आपको चिरजीव ओ कुशल में रक्षाकर हम सबका कल्याण बढ़ावें ।

सुखका दिन मनुष्योंके नित्यकाल नहीं रहता है । गयानिवासियोंका भी अधिककाल न रहा । गयाके आनन्द राशि साथ लिये हुए, हरकिसीके चित्त में वेदना देते हुए कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्नजी गयाधामको छोड़े, सोमवारके दिन मुंगेरको चले । उनको सम्मान पूर्वक पङ्क्तानेके अर्थ रेलवे स्टेशन तक सदरआला साहब, डिपुटी माजिस्ट्रेट आदि-

लामन करिलेन । तौहार अवस्थानकाले पवित्र गयातीर्थ धर्मोत्सवे आमोदित ७ शान्तिर आश्रय स्थान हईयाछिल । आज तौहार विरह गरा व्यथित हृदय । श्रीकृष्णप्रसन्न गयाधाम छाड़िलेन सत्य, किन्तु तनि ये आर्यधर्मर विजय पताका एस्थाने प्रोथित करियागेलेन । ईहा शीघ्र याई-बार नहे । गयावासीर मानसक्रेत्रे बहुदिन विराज करिबे । इति

श्रीविहङ्गनाथ दास । गया ।

मुङ्गेर आर्यधर्मप्रचारिणी सभार ७ष्ठ वार्षिकोत्सव ।

(प्राप्त)

निम्नलिखित रीतानुसारे मुङ्गेर आ, ध, प्र, सभार ७ष्ठ वार्षिकोत्सव निर्विघ्ने सुसम्पन्न हईया गियाछे ।

१२ई माघ शः १९०७ । प्रातःकाले श्रीश्री-श्रीमन्नारायण श्रुति, श्रुति, दर्शन, पुराणादि सह ७ सरस्वती देवीमूर्तिर निधिविहित पूजा हईल, त०परे “सुनीतिसंस्कारिणी सभार” वस्त्रदेशी ७ बेहारवासी बालक सभ्यगण समस्वर से स्तोत्र पाठ-पूर्वक ७ सरस्वती मूर्तिर चरण कमले पुष्पाञ्जलि अर्पण करिल । मध्याह्नकाले आमंत्रित ब्राह्मण भोजन हईल । अपराह्न बेला तिनटा हईते भगवद्भक्त भद्रगण गृहस्थ, करताल ७ शृङ्गरेवे गगन-मण्डल निनादित ७ मधुर भावयुक्त भगवन्नाम कीर्तन करिते करिते नगरेर प्रधान प्रधान पथ परिभ्रमण पूर्वक पुरवासीपुङ्गेर कर्णपुट पवित्र करिया, सक्रा-काले प्रत्यावृत्त हईलेन । संकीर्तनकारीगणेर पुरोभागे सुनीतिसंस्कारिणी सभार सभ्य प्रसन्नवदन बालकबुद्ध “विद्या,” “धर्म” “दया” आदि विविधनीति बाको टिक्कित पताकावली बहनपूर्वक श्रेणीबद्ध भावे अग्रसर ह०याय एकटी अभिनव दृष्टेर अभि-नय हईयाछिल । बोध हईतेछिल येन “विद्या” “दया” “कृपा” “कल्याण” “व्रत” “संयम” आदि धर्मर सेनादल घड़ी, घण्टा, शृङ्ग निनादे अधर्मराज्य विजय करिया, गमन करितेछे । वास्तविक एही दृष्टी सज्जनगणेर अतीव मनोहर ७ उ०साहजनक बोध हईयाछिल । यदि० अनेक बेहारवासी बाङ्गाला संकीर्तन बुझिते पारितेछिलेन ना, तथाच अधर्मोत्सवे उ०साहित हईया, अनुगमन करिते ऊँटी करेन नाई । प्रत्यावर्तनान्तर सं-कीर्तनकारीगण भगव० प्रेमोन्मत्तचिते प्रतिभार समुद्धे अनेकक्षण नृत्य कुन्दन पूर्वक संकीर्तन करिलेन । अतःपर आरती शेष हईले, सभ्यगण विदाय लईलेन ।

कैक सहाय्य गये थे । उनकी स्थिति काल में पवित्र गयातीर्थ धर्मोत्सवसे प्रफुल्लित श्री शान्तिका आश्रयभूमि ऊँह थी । आज उनके विरहसे गयाका हृदय व्यथित ऊँचा । सत्य है जो श्रीकृष्ण प्रसन्न श्री गयाधाम छोड़े किन्तु वे जो आर्यधर्मकी विज-यपताका यहां गाढ़े गये वह श्रीमन्न उखड़नेवाली नहीं ! गयावासियोंके चित्तक्षेत्र में बहुरिदिन विरा-जता रहेगा ।

श्रीविहङ्गनाथ दास । गया

मुङ्गेर आर्यधर्म प्रचारिणी सभाका ६ष्ठ वार्षिकोत्सव ।

(प्राप्त)

नीचे लिखी ऊँह रीतिसे मुङ्गेर आ, ध, प्र, सभाका ६ष्ठ वार्षिकोत्सव निर्विघ्ने सुसम्पन्न हो गया ।

माघसुदी ५ मङ्गलवार प्रातःकाल श्री श्री श्रीमन्नारायण श्रुति, श्रुति, दर्शन, पुराणादि, के सहित श्री सरस्वती देवी की विधिपूर्वक पूजा ऊँह । तत्पश्चात् सुनीति सञ्चारिणी सभाके उभय विभागी (वंगदेशी और बिहारदेशीय) बालक सभ्यगण समस्वर से स्तोत्र पढ़ पढ़ श्री सरस्वति देवी के चरणारविन्द में पुष्पाञ्जलि दान किये । मध्याह्नकाल निमन्त्रित ब्राह्मणोंको भोजन कराया गया । अपराह्नकाल स्वर्णसे भगवद्भक्तभद्रगण, खड्ग, करताल वो शींघा ध्वनिसे गगनामण्डल निनादित वो मधुरभावयुक्त भगवत नाम संकीर्तन करके करते ऊँह नगर के प्रधान प्रधान मार्ग में अमणके पुरवासीयोंके कर्णपुट पवित्रकर सन्ध्याकाल में लौट आये । उस समय आगे आगे सुनीति सञ्चारिणी सभाके सभ्य बालक वृद्ध प्रसन्नवदनसे छोटे छोटे ध्वजा फहराये जाते थे, जब पताकों में मयनका झकोरा लगता था, तो किसी में विद्या, किसीमें धर्म, किसी में दया इत्यादि वृद्ध दृष्टि पड़ती थी, इससे बोध होता था कि, “विद्या” “दया” “कृपा” “कल्याण” “व्रत” “संयम” “तीर्थ” “धैर्य” इत्यादि धर्मराज की सेना घड़ी, घण्टा, आदि वाद्योंका ध्वनि करते, शींघा टेरते अधर्मराजका राजविजय किये जाते हैं । ये सुशोभित रचना सजनों के लिये अति ही मनोहर और उत्साह कारक ऊँह थी, यद्यपि अनेक बिहारवासी बङ्गभाषाका संकीर्तन नहीं समझ सकते थे, तथापि अधर्मोत्सव से उत्सा-हित हो अनुगमन किये थे । सन्ध्या काल सभ्यगण संकीर्तन करते करते प्रतिभाके समुद्धे आद्य संकीर्तन में उत्पन्न हो वृत्तक करने लगे, अन्त में आरती कर सभ्यगण विदाय किये ।

१७ई माघ, शः १८०७ । अपराह्नकाले सनीति-सञ्चारिणी सभाके उभयविभागी सभ्यगण कर्तृक मण्डलाकारे परिवेष्टित हईया, बादोदासमह ७ सरस्वती देवी-मूर्ति नगरेर प्रधान प्रधान पथ पर्यटन पूर्वक अव-शेषे जाहूबोजले विनष्टित हईनेन ।

१८ई माघ, ब्रह्मस्मृतिवार । अपराह्नकाले अनून ५०० दान परिश्रमे तथा माघ दान करा हईन ।

१९ई माघ, शुक्रवार । सञ्चार पर ७॥०८॥ हईते ८॥० पर्याप्त "सनीतिसञ्चारिणी सभाके वार्षिकविशेषण हईन । कार्यालयकाले धर्म ७ नीति सङ्गीत गाने सभा आनन्दपूर्ण हईया उठिन । तदनन्तर सभाके वस्त्र विभागेर कार्य सम्पादक श्रीमान् जगन्नाथ राय, ७ बेहार विभागेर सम्पादक श्रीमान् मनमोहन निज निज विभागेर वार्षिक कार्याविवरण पाठ करिनेन । सभाध्यक्षेक शिक्षा नैपुण्य ७ कार्य कुशलता सभा दिन दिन आशा-तीत उन्नतिलाभ करितेछे ७ बालकगण यथार्थीति संप्रकृति हईतेछे एतावत् कार्या विवरणे विशेषरूपे सूचित हईन । तन्परे सभा सभा धीरप्रकृति श्रीमान् पूर्णानन्द सेन, दृढव्रत साधु हृदय श्रीमान् हरिलाल सोम, निर्मलचित्त श्रीमान् शरधारी लाल ७ शान्त्युभाव श्रीमान् परमेश्वर दयाल कर्तृक पर्यायक्रमे "दुःखेर निवास कोथार ?" "बालकगणेर सहित समाजेर सम्बन्ध कि," "पवित्र चरित्र हईवार फल कि ?" एवं यथार्थ आपनार के १ अत्रिद्वयेर लिखित प्रबन्ध पठित हईन । विविधोदाहरण पूर्ण ७ अस्मिन्नास्तुक्त बालकवर्गेर वचन रचना ७ लिपिछातुर्वा दर्शने सभास्य मात्रेई अतीव प्रसन्न हईनेन । तदनन्तर माणवर श्रीमान् राखालचन्द्र सेन महाशय कृपा-पूर्वक बालकगणके एकटी नीतिगर्भ बहू-बाछने अनेक सङ्गपदेश दान करिनेन । उदयमाने सभाध्यक्ष माणवर श्रीमान् कुमार श्रीकृष्णप्रसाद सेन महाशय "बालकगणके नीतिशिक्षा दान" सङ्गके एकटी हृदयग्राही ७ समथर बहू-ता करिनेन । एतावत् अवने कतहुनि नूतन बालक सभाश्रेणी-भूक्त हईते उदयत हईन । तदनन्तर समस्त सभा एकस्यरे भगवत् स्तोत्र पठि करिने, सभास्य बालक मात्रेकेई शिर्काभ वितरित हईन, अवशेषे सङ्कीर्तनादि हईया आनन्दपूर्वक सभा भङ्ग हईन ।

क्रमशः ।

"धर्मप्रचारक" } श्री श्रीकृष्णप्रसाद सेन ।
कार्यालय । मुम्बैर । } सम्पादक ।

माघ सुदी ६, बुधवार, अपराह्नकाले सनीति-सञ्चारिणी सभाके उभयविभागी सभ्यगण कर्तृक मण्डलाकारे परिवेष्टित हईया, बादोदासमह ७ सरस्वती देवी-मूर्ति नगरेर प्रधान प्रधान पथ पर्यटन पूर्वक अव-शेषे जाहूबोजले विनष्टित हईनेन ।

माघ सुदी ७, गुरुवार, अपराह्नकाले अनून ५०० कङ्कालोंको यथाशक्ति दान दिया गया ।

माघ सुदी ८, शुक्रवार, सन्ध्याके उपरान्त ११ वजेसे ८॥ वजेतक सनीतिसञ्चारिणी सभाके वार्षिक विशेषण पढ़ा, कार्यारम्भ में नीति सङ्गीतसे सभा आनन्द पूर्ण हो उठी । तदनन्तर उभयविभा-गके कार्यसम्पादक श्री मान्यवर जगन्नाथ राय, और विचारविभागके कार्यसम्पादक श्री मान्यवर मनमोहन लालने निज निज विभागका वार्षिक कार्य विवरण पढ़े, इससे सूचित हुआ कि सभास्यगणकी शिक्षानैपुण्य ७ कार्य कुशलतासे सभादिन परस्पर उन्नतिलाभ कर रही थी बालकगणको प्रगति सुष-रती जाती है । सभाके सभ्य धीरप्रकृति श्रीमान् पूर्णानन्द सेन, दृढव्रत साधु हृदय श्रीमान् हरिलाल सोम, निर्मलचित्त श्रीमान् शरधारीलाल, शान्त-रूभाव श्रीमान् परमेश्वर दयाल पर्यायक्रमसे 'दुःखका निवास कहाँ', बालकगणसे समाजका क्या सम्बन्ध है', 'पवित्र चरित्र होनेसे लाभ क्या', यथार्थ में 'अपनाको नई' । इन सब आशयपर लिखित प्रबन्ध पाठ किया ।

अनेक उदाहरण और सिद्धान्त सुन रखने लिखने की चतुराई देख सभास्य विश्वविद्यालयके हर्षका प्राप्त हुए । तदनन्तर श्री मान्यवर वा-राखालचन्द्र सेन महाशय बालकों के नीति उपदेश अथ एक वक्तृता किये । तत्पश्चात् श्रीमान् कुमार श्रीकृष्णप्रसाद सेनजीने "बालकोंको नीति सिखावने इस आशय पर एक हृदयग्राही वी मुसद्दिर वक्तृता की । इसे श्रवण करनेसे अन्यान्य बालकगणकी उत्साहित हो सभ्य होनेको इच्छा संकीर्तन वी समझारसे भगवत् गया । तदनन्तर हर एक वा सभा आनन्दसे विरगर्जन हुई ।

"धर्मप्रचारक" } श्री श्रीकृष्णप्रसाद सेन ।
कार्यालय । मुम्बैर । } सम्पादक ।

